विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् दिसम्बर सन् १८८७ ई॰ पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं उन में से कुछ इस सूचीपत्र में लिखी हैं और उनका मोल भी बहुत किफ़ायत से घटा के नियत हुआ है और व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिनको व्यापार की इच्छा हो वह मुंशी नवलकिशोर के छापेख़ाने मुक़ाम लखनऊ महल्ला हज़रतगंज के पते से ख़त भेजकर क़ीमत का निर्णय कर लें ॥

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
(अ)	आनन्दरघुनन्दननाटक	(ऐ)	कर्मविपाकसंहिता
अपराधभञ्जनस्तोत्र	अथर्ववेदीयप्रश्नोपनिषद्	ऐक्ट १ सन् १८७९ ई॰	कथाबाललीला
अमरकोश प्रथमकांड	अवध का बयान	ऐक्ट २२ सन् १८८१ ई॰	कालिंजरमाहात्म्य
अमरकोश तीनोंकाण्ड	अरिथमेटिक १ भाग	ऐक्ट १० सन् १८७२ ई॰	कथासागर
अवधयात्रा	तथा २ व ३ भाग	ऐक्ट १४ सन् १८८२ ई॰	कथा श्री गंगाजी
अद्भुतरामायण	अंकप्रकाश	ऐक्ट १० सन् १८८२ ई॰	कैवल्य कल्पद्रुम
अध्यात्मरामायण भा	अपरोक्षानुभव	ऐक्ट १० सन् १८५९ ई॰	कविप्रिया
षाटीका सहित	(इ)	ऐक्ट २० सन् १८६२ ई॰	कविकुलकल्पतरु
अनन्तकथामृत	इलाजुलगुर्बा	ऐक्ट २० सन् १८६६ ई॰	कुंडलियागिरिधरदास
अवतारसिद्धि	इन्द्रसभा	ऐक्ट ४६ सन् १८६० ई॰	कृष्णगीतावली
आनन्दाम्बुतरंगिणी	इन्द्रजाल	ऐक्ट मजरूआ अवध-	क़िस्साचहारदरवेश
अनंतप्रकाश	इस्तावास्थानसंबन्ध-	लगान १९ सन् १८६८ ई॰	क़िस्साहातिमताई
अपूर्वकथा	ख़्तितार्थनियत	ऐक्ट १८ सन् १८६९ ई॰	क़िस्सागुलसनोबर
अमरविनोद	इंडियन पिनलकोड	ऐक्ट २४ सन् १८७० ई॰	क़िस्सा औरत मर्द
औषधसंग्रह कल्पतरु	इतिहासतिमिरनाशक	ऐक्ट १९ सन् १८७३ ई॰	कवितरंग
अमृतसागर बड़ा	इंगलिस्तानकाइतिहास	(क)	काशीभजनावली
अमृतसागर छोटा	(उ)	काव्यकुलभास्कर	कल्पभाष्य
अकबरअली	उमापतिदिग्विजय	कामन्द विनोद	किताब जंत्री

श्रीगणेशायनमः

काव्य कल्पद्रुम सटीक

श्लोक

कलावर्णाविश्वस्थितिपालयाये गुणोनिर्गुणा-
त्मांसलेवेदगाये। तमेकंविभुंसारस्वच्छन्दनामी सश्री
रामपादांबुजातंनमामी १ अथगुरुविचार। विसर्गादिसं
जोगिदीर्घानुस्वारै चतुर्भातिगुर्तासदावेसंधारै। लघोंग
केह्रोपादअंतेकहैज नमःसत्यसीतापरम्पारहैज २

श्रीगणेशायनमः॥ सश्रीसहित श्रीजानकीजी श्रीरघुनाथ केपद
कमल की नमस्कार है कैसे हैं श्री रघुनाथजी जिनकी कलायवर्णा कहे
चेष्टा है विराटरूपकी अर्थात् विश्वकी उत्पत्ति पालन संघार गुणा
कहे यावत् सगुणरूप है निर्गुणात्मकहे निर्गुणरूप जो सो जिनको
अंशहै ऐसा वेदगावत है तंकहे तौनजो श्रीरघुनाथ जी हैं यकं कहे
एक आपुही विभुंकहे समर्थ हैं सबको सारांश हैं स्वछन्दकहे स्व-
वश हैं नामी कहे जिनको राम ऐसो नाम ब्रह्मांड में प्रसिद्ध है अ-
थवाश्री आदि छन्दनको नमस्कार है कैसी हैं छन्दें कलाजो मात्रा-
जो अक्षरविकहे सोउ जाके स्थिति कहे उत्पत्ति पालन कहे गुरुला-
पूर्वक यद्वलय कहे छन्दोभंगादि वोभहोता है गुणा कहे सगणा-
दिगणा निर्गुणा कहे गुप्त आतम अंशहै ऐसालिके वेदगावत हैं तंकहे
हे तौन जो छन्दनामी जिनको नाम जग में प्रसिद्ध है एककहे आपु-
ही एक विभुकहे समर्थ वेदादि को सारांशहै स्वच्छ [illegible] छन्द
रामा छन्द पादांकुलक छन्द अम्बुजा कहे कमला छन्द इत्यादि
नमस्कार है १ जा सीता की गति [illegible] है जिनको नमस्कार है
कैसी हैं श्री सीता विसर्गादि कहे चराचर जो विराट् न उत्पन्न [illegible]

संयोग सम्बन्धादि दीर्घ कहे बड़ाई अनुस्वार कहे छोटाई इत्यादि चारि भाँति कर्तव्यता को गुरुता कहे आपुने प्रभाव ते वर्णजो चेष्टा उत्पत्ति पालन नासादि को धारणा करती है अथवा विसर्ग की आदि को वर्ण संयोगी के आदि को वर्ण अरु जामें दीर्घ मात्रा है अरु जामें शीश पर अनुस्वार है याही चारि भाँति वर्ण गुरुता पावत है कहो पद के अन्त में लघो वर्ण गुरुता पावत है यथा नमः विसर्ग की आदि मकार गुरु है सत्य संयोगी की आदि सकार गुरु है सीता दीर्घ मात्रा ते तकार गुरु है यरंरकार अनुस्वार ते गुरु है अन्त अकार लघु को गुरु मानियत है २ ॥

विना दीर्घ मात्रा अनुस्वार हीनो लघो आदि संयोगि वा मानि लीनो । लघु र्ण ऐसा भाँति चारी कही है सदाई सदा या तुम्हारी एही है ३ अथ गुरु लघु संज्ञा गुरु गकार जानिये लघु लकार मानिये । कला गने जुजाचिये टठाड ढा णा पाँचये ४ तस्य कला विचार । छटगन ठग कल पाँच चौडगन ढगन्ने जाँच । पुनि णा गन है कल जानि क्रम भेद नाम बखानि ५ षटकल भेद १३ नाम शिव शशि दिन पति सुरफनी शेष सरोज रु धाता कलिचंद रु ध्रुव धर्म सालिकर त्रिदश नाम विख्याता ६ पञ्च कल भेद ८ नाम पंचकल [illegible] भेद सुरव्य इन्द्रासन सूर गनाये चाप हार रु शेखर पुनि कुसमो अहिगण पाप गनाये ७ इन्द्रसन लघु आदि नाम पुनि तारापति सेरावत । सुनरेन्द्राधिप कुंजर दंतो मेघ नाम कहि जावत ८ ॥

अब लघु को विचार दीर्घ मात्रा अनुस्वार जासें न होइ तिनको लघु कह्यो अरु कहूं संयोगी की आदिहू लघु होत है कहो गुरो को लघु मानो जात है इत्यादि चारि भाँति लघु होत यथा सराई-

सदाया दोऊ सकारै लघु तुम्हारी तकार संयोगी की आदि सो लघु है यही है सकार गुरु है ताको लघु मानियत है ३ गुरु लघु संज्ञा कहत गकार कहे गुरु को बोध लकार कहे लघु को बोध ट ग ण ठ गन ड गन द गन ण गन इति पाँच मात्रा गन है ४ टगन छः कला ठगन पाँच डगन चारि दगन तीनि णगन है तिनके भेद। क्रम ते नाम आगे कहत ५ षट्कल तेरा भेद प्रथम ऽऽऽ शिवनम द्वितीय ।।ऽऽ शशितृतीय।ऽ।ऽ दिनपति ३ चतुर्थ ऽ।।ऽ ध्रुव ४ पंचम ।।।।ऽ फनी ५ षष्ठ ।ऽऽ। प्रेत ६ सप्तम ऽ।ऽ। सरोज ७ अष्टम ।।ऽ। धाता ८ नवम ऽऽ।। कलि ९ दशम ।।ऽ।। चन्द्र १० एकादशम ।ऽ।।। ध्रुव ११ द्वादशम ऽ।।।। धर्म १२ त्रिदशम ।।।।।। मालिकार १३ ६ ठगन पाँच कल आठ भेद प्रथम इन्द्रासन ।ऽऽ १ द्वितीय ऽ।ऽ उर २ तृतीय ।।।ऽ चाप ३ चौथ ऽऽ। हात ४ पंचम ।।ऽ। शेष ५ षष्ठ ।ऽ।। कुसुम ६ सप्तम ऽ।।। अहिगण ७ अष्टम ।।।।। पापगण ८७ प्रथम जो इन्द्रासन है ।ऽऽ ताके अपर नाम कहत तारापति संगावत सुनरेन्द्र अधिप कुंजर मेघ के यावत नाम ८ ॥

स्वरमध्यलघु नाम पंचकल पक्षि विडाल मृगेन्द्रा अमृतदीन अरु सर्पयस कहि गरुड़ो वापसेन्द्रा ९ अथ चौकल संज्ञा। गजरथ तुरग पदादपि संज्ञा भेद चतुर्कल जोवै करन और करतल अरु वसु कहि द्विजवर दै है पाँचै १० करतल जो गुरु अंत चतुःकल कहो तासु के नामा भुजा हथ्यार सिंगार बाहु कर वज्र रतन अभिरामा ११ मधि गुरु अश्व मनुजपति गजपति वसुधा आदिपती चवन रज्जु गोपाल पयोधर नायक चक्रवती १२ चारि कला गुरु आदि नाम वसु तात पिता मह गाये दहन और बल भद्र गंड पुनि पद परजाय गनाये १३ त्र कल आदि लघु

नाम ध्वजा अरु तोमर चिन्ह चिराले पवन तुंबरु कचूड़ा क
ह्रियवलै चास रस माले २४ पटह ताल सुरसुरपति आनंद
तूरजवान समुद्रै इति गुरु आदि तीनि लघु तांडव सात्विक
नारी सुन्दै २५ ॥

पुनः द्वितीय भेद ।ऽ ताके अपर नाम पक्षी विडाल खगेन्द्र अमृत
पीना सर्प यक्ष गरुड़ पक्षेन्द्र ६ चारि कल मात्र की संज्ञा गज रथ तुर-
ग पदाति ताके पाँच भेद प्रथम ऽऽ१ करन द्वितीय ॥ऽ२ करतल तृ-
तीय ।ऽ। अश्व चतुर्थ ऽ॥४ वसु पंचम ॥॥५ द्विजवर १० चौकल में
दूजो भेद ॥ऽ ताके अपर नाम भुजा हथ्यार शृंगार दाहकर बज्र रतन
११ तीजो भेद ।ऽ। याके अपर नाम मनुजपति गजपति वसुधापति
चवन रज्जु गोपाल पयोधर नायक चक्रवर्ती १२ चौथो भेद ऽ॥ ताके
अपर नाम तात पितामह दहन वलभद्र गंड पाँचके यावत् नाम हैं १३
वशानं जो तीनि कल तीनि भेद प्रथम आदि लघु ।ऽ१ ताके नाम
ध्वजा तोमर चिन्ह चिराल पवन तुंबरुक चूड़ावलय वास रस मा-
ला २४ त्रिकल में गुरादि ऽ। दूजो भेद नाम पटह ताल सुरसुरपति
आनन्द तूर्यज्वान समुद्र तीजो भेद त्रिलघु ॥। नाम तांडव सा-
त्विक भाव नारी २५ ॥

अथ द्विकल नूपुर अरु मंजीर चामरो हारु वलै अभि-
रामा कंकन अरु ताटंक कुंडलो गुनिक द्विलघु प्रिय नामा
२६ अथ एकलघु नाम। कनक शंख रव सेक दंड रस जानि
सकल अभिलाये कुसुम रूप रस परस गंध ए नाम सकल
लघु भाये २७ इति मात्रा गन। अथ वरण गण लिख्यते।
मगन त्रिगुरु महि देवता करत सिद्धि नगन त्रिलघु सो वसु
स्व मन मित्र है भगनादि गुरु चन्द्र देवता करत कीर्ति यग-
नादि लघु नल जस भय भूत है सखि गुरु जगन करत विरोग

तगनांत लघु वायु भ्रमत उदास जत नित है सखि लघु र-
गन को अगिनि करत दाह सगनांत गुरु काल रस है अ-
मित्र है २८ ॥

गा गन द्वि कल है भेद प्रथम एक गुरु ऽ नाम नूपुर मंजीर चालर
हार वलय कंकन ताटंक कुंडल इति अथ द्वि लघु नाम अति प्रिय पर
म प्रिय सप्रिय २६ एक लघु नाम । कनक शंख रव मेरु दंड रस कुसुम
रूप रस गंध परस २७ इति मात्रा गन। अथ वरन गन तीनि वरन को।
गन तीनिहू गुरु होइ ऽऽऽ ताको मगन कही ताको देवता पृथ्वी
है सो लक्ष्मी की देनहारी है तीनि लघु होइ ॥। ताको नगन कही-
ताको देवता शेष सो सुख को देनहारे हैं मगन नगन ए दोऊ मित्र
संज्ञा है २ आदि गुरु ऽ।। ताको भगन कही याको देवता चन्द्रमा की-

नाम	उदाहरण	रूप	देवता	फल	संज्ञा
मगन	सीतेतं	ऽऽऽ	भूमि	मंगल	मित्र
नगन	रमन	।।।	शेष	हरि सुख	मित्र
भगन	रामहिं	ऽ।।	चन्द्र	कीरति	दास
यगन	सियारी	।ऽऽ	जल	यश सुख	दास
जगन	सियांन	।ऽ।	भानु	रोग	उदास
तगन	हेरीहू	ऽऽ।	पवन	भ्रमन	उदास
रगन	भूलहू	ऽ।ऽ	अग्नि	दाह	शत्रु
सगन	अनंत	।।ऽ	काल	मृत्यु	शत्रु

र्ति सुख को दाता है आदि लघु ।ऽऽ याको यगन कही याको देवता-
जल है सो यश धन को दाता है भगन यगन ये दोऊ दास संज्ञा है २
मधि में गुरु होइ ।ऽ। याको जगन कही याके देवता सूर्य रोग के दाता
हैं अन्त में लघु होइ ऽऽ। तगन कही याको देवता पवन है जग में
भ्रमन करावे है जगन तगन दोऊ उदास संज्ञा है २ मध्य में लघु होइ
ऽ।ऽ ताको रगन कही याको देवता अग्नि है दाह को दाता है अंत में गुरु
होइ ताको सगन कही ।।ऽ याको देवता काल है मृत्यु को दाता है रगन
सगन दोऊ शत्रु संज्ञा है ४। २९ ॥

अथ द्विगन। सिद्धि मित्र मित्र जय दास अरु मित्र मिले हानि मित्रो दास प्रियनाश मित्र अरि है दास मित्र सिद्धि दास दास हानि जानियत दासो दास पीड़ा दासशत्रुरन हारि है अल्पता उदास मित्र दुखद उदास दास अफल उदास दोऊ दुखो दास अरि है शत्रु मित्र अफल तिया को नाश शत्रु दास शत्रो दास शोक शत्रु शत्रु नाश करि है १९ अथ मात्रा नष्ट। पूछे जौन भेद जे कल में ते कल को लिखि लीजे यक द्वे तीनि पांच वसु वेद दश यह क्रम कल प्रति दीजे पूछो भेद को अन्त-अंक जो तामे प्रथम मिटैए उबरो अंक लिखे कल ऊपर तिन में आनि घटैए जेहि शिर घटै कला ताही में अगिली कला मिलावै सो गुरु करै ओर सब लघु लिखि नष्ट भेद योगावै २०

अथ द्विगन को विचार कहत प्रथम चरण अरु दूसरे चरणादि में जो मित्रगन होइ तो सिद्धि दाता प्रथम मित्र दूजे दास जै को दाता आदि मित्र दूजे उदास हानि करै आदि मित्र दूजे शत्रु मित्रनाश होइ १ आदिपद में दास दूसरे में मित्र होइ तो सिद्धि दाता है दोऊ पदन में दास होइ हानि दाता प्रथम पद दास दूजे में उदास होइ तो

सिद्धि | विजै | हानि | प्रिय नाश

मगन SSS | नगन III

मित्र | दास | उदास | शत्रु

पीरा के दाता प्रथम दास दूजे शत्रु होइ तो संग्राम में हारि दाता २। आदि पद उदास दूजे में मित्र होइ तो अल्पफल प्रथम उदास दूजे में दास होइ तो दुख के दाता दोऊ में उदास होइ तो अफल के दाता आदि उदास दूजे शत्रु दुख दाता ३ आदि शत्रु दूजे मित्र अफल दाता आदि शत्रु दूजे दास युवती नाश करै आदि शत्रु दूजे उदास शंका करै दोऊ में शत्रु नाश करै २६ अथ मात्रा नष्ट। सो कोऊ पूछै यतरे कला में यह भेद कैसो है ते कला सीधी पाइ लिखि लेइ तिन के शीश पर एक द्वै द्वै एक तीनि तीनि द्वै पाँच पाँच तीनि आठ आठ पांच तेरह तेरह आठ एक्कीस एई अंक क्रम ते कलन के शीश पर लिखि जाइ तहाँ प्रश्न अंक जे को भेद पूछै तेको अंक शेष अंक जो पीछे को है तामे मिटाइ देइ जो बाक़ी रहै ताको कलन के ऊपर अंकन में घटाइ देइ जौनी जौनी कला के ऊपर घटै ता कला को अगिली कला में मिलाइ गुरु करै बाक़ी रहै ते लघु यथा सात मात्रा में चौदहो भेद कैसो है तब सात कला लिखी ता कलन के ऊपर एक द्वै तीनि पाँच आठ तेरह एक्कीस लिखे प्रश्न अंक जो चौदह सो शेष अंक एक्कीस तामे मिटाये बाक़ी रहे सात तहाँ दूसरी कला पर दुइ को अंक चौथी पर पाँच को अंक तो दूसरी को तीसरी में मिलाइ गुरु की न चौथी पाँचई में मिलाइ गुरु की न तो दूसरा तीसरो गुरु भयो अरु प्रथम चौथो पाँचो लघु रहे यह चौदहो भेद भयो २० ॥

अथ उदिष्ट मात्रा को लिखि के भेद पूर्व दूने क्रम अंक लघुन शिर दीजे गुरु के प्रथम शीश पुनि पायन या विधि सो लिखि लीजे गुरु शिर के सब अंत अंक में मेटि पुनि अभिलाखो बचे जु अंक उदिष्ट भेद सो कैजनाथ यह भाखो २१ अथ वरन नष्ट गुरु दै आदि विषम लघु सम दै भाग सहज सम कीजे विषम एक दै भाग विषम सम गुरु लघु क्रम सोइ दीजे गुरु लघु धरत भाग तव लगि करु भेद

पूर जब आवै वरन नष्ट की रीति यथा विधि वैजनाथ यह रावै २२ ॥

अथ मात्रा उदिष्ट लिखि कै पूछै यह कौन भेद है तब एक दु तीनि पाँच आठ तेरह एक्कीसादि अंक लघुन के शीश पर लिखै अरु गुरु के शीश पर लिखै दुचातरे लिखै तहाँ गुरु के शीश के अंक जोरि शेष जो अंत को अंक है तासें घटावै जो बाकी रहे सोई भेद है यथा प्रथम लघु दूसरो तीसरो गुरु चौथ पाँचौ लघु यह कौन भेद है तहाँ प्रथम लघु ताके शीश पर एक लिखा दूसरो गुरु है ताके शीश पर प्रथम दुइ को अंक लिखा ताके नीचे तीनि को अंक लिखा तीसरो गुरु है ताके शीश पर पाँच लिखा नीचे आठ लिखा चौथो लघु ताके शीश पर तेरह लिखा पाँचौ लघु ताके शीश पर एक्कीस लिखा तब देखा गुरु के शीश पर दुइ अरु पाँच है ताके जोरे सात भये सो एक्कीस में घटावा तब चौदह रहे यह चौदहो भेद है ॥ २१ ॥

अथ मात्रा नष्ट चक्र

१	२ ३	५ ८	१३	२१
।	ऽ	ऽ	।	।

चौदहो भेद है १४

अथ वरण नष्ट—कोऊ पूछै यतरे वरन में यह भेद कैसो है तब प्रश्नाक्षर जो विषम होइ तौ प्रथम गुरु धरै जो सम होइ तौ लघु धरै पुनि ताके द्वै भाग करै तहाँ जो सम होइ तौ सहजही सें भाग बनै जो विषम होइ तौ एक और मिलाइ भाग करै जो विषम परै तौ गुरु धरै सम परै तौ लघु धरै याही क्रम भाग देत गुरु लघु धरत जब वरण पूर होइ जाय तब कहै यह भेद है यथा पाँच

मात्रा उदिष्ट चक्र

१	२	५	१३	२१
।	ऽ	ऽ	।	।
३	८			

चौदहो भेद है १४

वरन नष्ट चक्र

२१	११	६	३	२
ऽ	ऽ	।	ऽ	।

एक्कीसौ भेद २१

वरन प्रकार में एक्कीसवाँ भेद प्रश्न तहाँ एक्कीस विषम है ताको गुरु भयो ऽ एक्कीस को भाग नावनी एक मिलाइ बाइस ताके आधे ग्यारह विषम [illegible] गुरु भयो ऽ ग्यारह को भाग नावनी एक मिलाइ

बारह ताके आधे छः सम है ताको लघु भयो छः के आधे तीनि विषम ताको गुरु भयो ऽ तीनि में एक मिलाउ चारि ताके आधे है सम ताको लघु भयो । यह एक्कीसो भेद भयो २२ ॥

अथ वर्णोदिष्ट एक द्वै चारि अंक दूने क्रम वर्णशीश प्रति दीजे लघु शिर अंक एक ओरो दै यह उदिष्ट लिखि लीजे २३ ॥

अथ वर्ण उदिष्ट लिखि कै पूछे यह कौन भेद है तब वर्णके शीश पर दूने क्रम एक द्वै चारि आठ सोलह इत्यादि लिखि जो लघुन के शीश पर होइ तिनको जोरि इकट्ठा करे तामें एक और मिलावै जेते होइ सोई भेद है यथा प्रथम दूसर चौथ गुरु तीसर पाँचो लघु यह कौन भेद है तब प्रथम के शीश पर एक लिखा दूसरे पर द्वै लिखा तीसरे पर चारि लिखा चौथे पर आठ लिखा पंचये पर सोलह तहाँ लघुन पर चारि सोलह है। जोरे बीस एक मिले एक्कीसवाँ भेद है २३ ॥

वर्ण उदिष्ट चक्र				
१	२	४	८	१६
ऽ	ऽ	।	ऽ	।
इक्कीसे भेद २१				

अथ मात्रा मेरु द्वै द्वै सम कोठा अंतन में अंक एक एक दीजे एक द्वै एक तीनि एक चौ इमि आदि कोठ लिखि लीजे शीश अंक को शीश के पर को द्वै इमि अंक मिलावे सूनो कोठा या विधि भरिये मत्तमेरु ह्वै जावे २४

अथ मात्रा मेरु द्वै द्वै कोठा बराबरि बनाय ताके अंतके कोठन में एक एक को अंक लिखि जाय पुनः आदिके कोठन में प्रथम एक फिरि द्वै पुनः एक तीनि पुनः एक चारि पुनः एक पाँच याही क्रम लिखे पुनः शीश को अंक अरु शीश के परे को अंक दोउ जोरि नीचे सूनो कोठा भरत

(मात्रा मेरु चक्र)

					१	१
				२	१	३
				३	१	२
			१	१	१	५
			३	४	२	४
		१	६	५	१	८
		४	१०	२	१	[illegible]
	१	१५	१०	३	१	[illegible]
	४	२०	२१	८	१	८
१	[illegible]	३५	२८	[illegible]	१	[illegible]
६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१	[illegible]

आवै याही विधि मात्रा को मेरु एक द्वै गुरादि जानो जात है २४ ॥

अथ वर्णमेरु गनती रीति कोठ आद्यंतन एक एक लिखि आवै सूने शिर द्वै कोठ मध्य में है को अंक बनावै शिर ते अंक जोरि आदिन ते पर को कोठा भरिये सूने को ठा या विधि पूरो वर्ण मेरु यों करिये २५ ॥

अथ वर्ण मेरु प्रथम द्वै फिरि तीनि चारि पाँच इत्यादि कोठा बनावै आदि अंत कोठन में एक एक को अंक लिखि जाइ पुनः तीनि कोठा में मध्य कोठा सून तामें द्वै को अंक लिखै पुनः शीश ते जोरि नीचे के कोठा आदि ते भरत जाइ यामें एक द्वै गुरादि भेद होत २५

मेरु वर्ण

								१	१	१
							१	२	१	२
						१	३	३	१	३
					१	४	६	४	१	४
				१	५	१०	१०	५	१	५
			१	६	१५	२०	१५	६	१	६
		१	७	२१	३५	३५	२१	७	१	७
	१	८	२८	५६	७०	५६	२८	८	१	८
१	९	३६	८४	१२६	१२६	८४	३६	९	१	९
९	८	७	६	५	४	३	२	१	गुरु	

अथ मात्रा पताका जै मात्रा को रचै पताका मेरु खंड सोइ लीजे प्रतिकोठन गनि छन्द कोष्ट ते खड़ी पाँति सब कीजे दै उदिष्ट शिर शेष अंक में यक यक अंक धरैये यक गुरु पाँति द्वय घटि द्वै गुरु त्रैगुरु तीनि मिटैये २६

अथ मात्रा पताका जै मात्रा को पताका रचिवे होइ मेरु को खंड सोई उतारि जा कोठा में जै भेद होइ ताके नीचे ते तरे कोठ बनावै याही पाँति के पुनः उदिष्ट रीति ते अंक एक द्वै तीनि पाँच

आठ तेरह इक्कीसादि लिखै पुनः शेष जो अन्त को अंक तामें एक एक घटाइ लिखि जाइ एक गुरु पाँति होइ याही विधि द्वै द्वै घटावै द्विगुरु पाँति तीनि तीनि घटावै त्रिगुरु पाँति इत्यादि अथवा प्रस्तार खैंचत में जे गुरु की छन्द होइ ताकी पाँति में लिखत जाय या विधि पताका सहजही बनाइ लीजे २६ ॥

तीनि मात्रा पताका

१	३
२	

चारि मात्रा पताका

१	२	५
	३	
	४	

पाँच मात्रा पताका

१	३	८
२	५	
४	६	
	७	

षट् मात्रा पताका

१	२	५	१३
	३	८	
	४	१०	
	६	११	
	७	१२	
	९		

सात मात्रा पताका

	२	३	८	२१
	२	५	१३	
	४	६	१६	
	९	७	१८	
		१०	१९	
		११	२०	
		१२		
		१४		
		१५		
		१७		

आठ मात्रा पताका

१	२	५	१३	३४
	३	८	२१	
	४	१०	२४	
	६	११	२६	
	७	१२	३१	
	९	१५	३२	
	१४	१८	३३	
	१६	१९		
	१७	२०		
	२२	२३		
		२४		
		२५		
		२६		
		२८		
		३०		

अथ वरण पताका यथा मेरुखण्ड लै वरण पताका छंद अंक जे देखै प्रति कोठा ते काढि गणित करि खड़ी पंक्ति तर लखै पूरुब अंक भरे पर अंकन आयो अंकन आवै करि गनती प्रस्तार भरो त्ने वरण पताका गाढ़ै

अथ वर्ण पताका यथा जै वर्ण को पताका बनायो चहै सोई खंड मेरु को उतारि लेइ जौने कोठा में जे को अंक होइ तै कोठा तरे खड़ी पाँति के बनावै शीश के कोठन में उद्दिष्ट रीति दूने क्रम अंक लिखि जाइ पुनः पूर्व के अंक लेके पर अंक भरे अरु अरु आयो अंक फिरि ना आवै यथा चारि वर्ण पताका हेतु मेरु को खंडलीन तामें पाँच को कोठा है तहाँ प्रथम–

द्विवर्ण पताका

१	२	४
	३	

त्रि वर्ण पताका

१	२	४	८
	३	६	
	५	७	

चारि वर्ण पताका

१	२	४	८	१६
	३	६	१२	
	५	७	१४	
	९	१०	१५	
		११		
		१३		

पाँच वर्ण पताका

१	२	४	८	१६	३२
	३	६	१२	२४	
	५	७	१४	२८	
	९	१०	१५	३०	
	१७	११	२०	३१	
		१३	२२		
		१८	२३		
		१९	२६		
		२१	२७		
		२५	२९		

छह वर्ण पताका

१	२	४	८	१६	३२	६४
	३	६	१२	२४	४८	
	५	७	१४	२८	५६	
	९	१०	१५	३०	६०	
	१७	११	२०	३१	६२	
	३३	१३	२२	४०	६३	
		१८	२३	४४		
		१९	२६	४६		
		२१	२७	४७		
		२५	२९	५२		
		३४	३६	५४		
		३५	३८	५५		
		३७	३९	५८		
		४१	४२	५९		
		४९	४३	६१		
			४५			
			५०			
			५१			
			५३			
			५७			

कोठा में एक को अंक एक कोठा बनावा दूसरे में चारि को अंक चारि कोठा तरे बनावा तीजे में छः कोठा चौथे में चारि कोठा पाँचये में एक अंक एक कोठा तहाँ शीश के कोठन में दूने क्रम अंक लिखा आदि एक दूजे दो तीजे चारि चौथे आठ लिखा पाँचये सोलह तहाँ पूर्व एक को दुइ मिलाइ तीनि नीचे लिखा चारि में एक मिलाइ पाँच ताके नीचे लिखा आठ में एक मिलाइ नौ पाँच के नीचे लिखा त्रिगुरु पाँति हो गई पुनः दुइ

चारि छः एक है तीनि चारि सात पुनः दुइ अरु आठ दश एक दुइ आ-
ठ ग्यारह लिखा पुनः एक चारि पाँच आठ तेरह लिखा द्विगुरु पाँति
भई पुनः चारि आठ बारह पुनः दुइ चारि छः आठ चौदह पुनः एक
है चारि आठ पन्द्रह एक गुरु पाँति भई २७ ॥

अथ मात्रा मरकटी षटकोठावलि पंचअनयक है चौ
षट्षर् पाँचै षट् सर चौसर चौथे शिर है है क्रम सोय गनै
औरो लिखै जहाँ लो चाहै कला मर्कटी मानै वृत्त भेद मा-
त्रा अरु वरणौ गुरु लघु को पहिचानै २८ ॥

अथ मात्रा मरकटी यथा छः कोठा की पाँति करि पंचम को-
ठा शून राखि अपर में एक को अंक बनाइ गये पुनः दूसरे अरु
चौथे कोठा को अंक जोरि छठयें कोठा में लिखा छठे कोठा को अं-
क पँचयें कोठा में लिखा छठयें पँचयें को जोरि चौथे कोठा में।

वृत्त	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
भेद	१	२	३	५	८	१३	२१	३४	५५	८९	१४४	२३३	३७७
मात्रा	१	४	९	२०	४०	७८	१४७	२७२	४९५	८९०	१५८४	२७९६	४९०९
वर्ण	१	३	७	१५	३०	५८	१०९	२०१	३६५	६५५	११६४	२०५२	३५९१
गुरु	०	१	२	५	१०	२०	३८	७१	१३०	२३५	४२०	७४४	१३०८
लघु	१	२	५	१०	२०	३८	७१	१३०	२३५	४२०	७४४	१३०८	२२८५

मात्रा मरकटी

लिखा पँचयें चौथे को जोरि तीजे कोठा में लिखा यक शिर के है है
अंक जोरि दूजे कोठा में लिखा एक है क्रम ते पहिले कोठा में लि-
खा या विधि जहाँ ले चाहै तहाँ लौ लिखै प्रथम कोठा में वृत दूजे
में भेद तीजे में मात्रा चौथे में वरण पाँचयें में गुरु छठयें में लघु
इत्यादि जानबे हेतु मरकटी है २८ ॥

अथ वरण मरकटी षटकोठन की पाँति आरि-
क्रम दूजी दुगुण बनावै आदि है क गुणि चारि लिखै

चौ० अर्द्ध पंच षट पावै पाँच चारि लै तीनि लिखै यह व-रणा मर्कटी माही वृत्त भेद मात्रा अरु वरणो गुरुलघु जाने जाही २९ ॥

अथ वरणा मर्कटी प्रथम छः कोठन की पाँति बनावै शीशाको ठन में एक द्वै तीनि क्रम ते अंक लिखि जाय अरु दूसरे कोठन में द्वै चारि आठादि दूने क्रम लिखि जाय पुनः ऊपर के अंक दूसरे में गुणित करि चौथी पाँति लिखि जाय पुनः चौथी पंक्ति के अंकन को आधे आधे पंचईं अरु छठईं पाँति में लिखै पंचईं पंक्ति

वरणा मर्कटी चक्र

वृत्त	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
भेद	२	४	८	१६	३२	६४	१२८	२५६	५१२	१०२४	२०४८
मात्रा	३	१२	३६	९६	२४०	५७६	१३४४	३०७२	६९१२	१५३६०	३३७९२
वरणा	२	८	२४	६४	१६०	३८४	८९६	२०४८	४६०८	१०२४०	२२५२८
गुरु	१	४	१२	३२	८०	१९२	४४८	१०२४	२३०४	५१२०	११२६४
लघु	१	४	१२	३२	८०	१९२	४४८	१०२४	२३०४	५१२०	११२६४

अरु चौथी जोरि तीसरी पाँति लिखै याही भाँति जहाँ लौ चाहै तहाँ तक लिखै यही वरणा मर्कटी ते वरणा प्रस्तार के वृत्त भेद मात्रा अ-रु वरणा इत्यादि जानो जात है प्रथम कोठा में वृत्त दूसरे में भेद तीसरे में मात्रा चौथे में वरणा पाँचये में गुरु वरणा छठयें में लघु वरणा २९ ॥

अथ मात्रा प्रस्तार दो० प्रथम गुरु तर लघु समक-रु पाँति शेष लघु गुरु सो करौ प्रस्तार कला को जा-वत सर्व लघु सो ३० ॥

अथ मात्रा प्रस्तार जै मात्रा को प्रस्तार करो चाहै तै मात्रा प्रथम खैंचि लेइ पुनः प्रथम गुरु के तर लघु खैंचे पुनः जैसी पाँति ऊपर

होइ तैसी बनाये जाय जो कला बाकी रहै ताको देखै जो विषम होइ तो एक प्रथम लघु देइ बाकी गुरु दै देइ अरु जो सम होइ तौ ताके आगे गुरु देइ याही भाँति जब तक सब लघु ना होइ तब तक प्रस्तार खैंचत जाय सब लघु आवै सो अंत है ३० ॥

(मात्रा प्रस्तार)

मात्रा प्रस्तार					
२ ऽ १	३ ।ऽ १	ऽ।।।। १२	।ऽऽऽ। १४	।।।ऽ।ऽ ११	।।ऽ।ऽ।। ३९
।। २	ऽ। २	।।।।।। १३	ऽ।ऽऽ। १५	ऽ।।ऽ।ऽ १२	।ऽ।।ऽ।। ४०
	।।। ३	७ ।ऽऽऽ १	।।।ऽऽ। १६	।।।।ऽ।ऽ १३	ऽ।।।ऽ।। ४१
	४ ऽऽ १	ऽ।ऽऽ २	ऽऽ।ऽ। १७	।।ऽ।।ऽ १४	।।।।।ऽ।। ४२
	।।ऽ २	।।।ऽऽ ३	।।ऽ।ऽ। १८	।ऽ।।।ऽ १५	ऽऽऽ।।। ४३
	।ऽ। ३	ऽऽ।ऽ ४	।ऽ।।ऽ। १९	।।।ऽ।।ऽ १६	।।ऽऽ।।। ४४
	ऽ।। ४	।।ऽ।ऽ ५	ऽ।।।ऽ। २०	ऽऽ।।ऽ १७	।ऽ।ऽ।।। ४५
	।।।। ५	।ऽ।।ऽ ६	।।।।।ऽ। २१	।।ऽ।।।ऽ १८	ऽ।।ऽ।।। ४६
	५ ।ऽऽ १	ऽ।।।ऽ ७	ऽऽऽ।। २२	।ऽ।।।।ऽ १९	।।।।ऽ।।। ४७
	ऽ।ऽ २	।।।।।ऽ ८	।।ऽऽ।। २३	ऽ।।।।ऽ २०	।ऽऽ।।।। ४८
	।।।ऽ ३	ऽऽऽ। ९	।ऽ।ऽ।। २४	।।।।।।।ऽ २१	ऽ।ऽ।।।। ४९
	ऽऽ। ४	।।ऽऽ। १०	ऽ।।ऽ।। २५	ऽऽऽऽ। २२	।।।ऽ।।।। ५०
	।।ऽ। ५	।ऽ।ऽ। ११	।।।।ऽ।। २६	।।ऽऽऽ। २३	ऽऽ।।।।। ५१
	।ऽ।। ६	ऽ।।ऽ। १२	।ऽऽ।।। २७	।ऽ।ऽऽ। २४	।।ऽ।।।।। ५२
	ऽ।।। ७	।।।।ऽ। १३	ऽ।ऽ।।। २८	ऽ।।ऽऽ। २५	।ऽ।।।।।। ५३
	।।।।। ८	।ऽऽ।। १४	।।ऽ।।।। २९	।।।।ऽऽ। २६	ऽ।।।।।।। ५४
	६ ऽऽऽ १	ऽ।ऽ।। १५	ऽऽ।।।। ३०	।ऽऽ।ऽ। २७	।।।।।।।।। ५५
	।।ऽऽ २	।।।ऽ।। १६	।।ऽ।।।। ३१	ऽ।ऽ।ऽ। २८	
	।ऽ।ऽ ३	ऽऽ।।। १७	।ऽ।।।।। ३२	।।।ऽ।ऽ। २९	इति [illegible]
	ऽ।।ऽ ४	।।ऽ।।। १८	ऽ।।।।।। ३३	ऽऽ।।ऽ। ३०	
	।।।।ऽ ५	।ऽ।।।। १९	।।।।।।।। ३४	।।ऽ।।ऽ। ३१	
	।ऽऽ। ६	ऽ।।।। २०	९ ।ऽऽऽऽ १	।ऽ।।।ऽ। ३२	
	ऽ।ऽ। ७	।।।।।।। २१	ऽ।ऽऽऽ २	ऽ।।।ऽ। ३३	
	।।।ऽ। ८	८ ऽऽऽऽ १	।।।ऽऽऽ ३	।।।।।ऽ। ३४	
	ऽऽ।। ९	।।ऽऽऽ २	ऽऽ।ऽऽ ४	।ऽऽऽ।। ३५	
	।।ऽ।। १०	।ऽ।ऽऽ ३	।।ऽ।ऽऽ ५	ऽ।ऽऽ।। ३६	
	।ऽ।।। ११	ऽ।।ऽऽ ४	।ऽ।।ऽऽ ६	।।।ऽऽ।। ३७	
		।।।।ऽऽ ५	ऽ।।।ऽऽ ७	ऽऽ।ऽ।। ३८	
		।ऽऽ।ऽ ६	।।।।।ऽऽ ८		
		ऽ।ऽ।ऽ ७	ऽऽऽ।ऽ ९		
		।।।ऽ।ऽ ८	।।ऽऽ।ऽ १०		
		ऽऽ।।ऽ ९			
		।।ऽ।।ऽ १०			
		।ऽ।।ऽ ११			
		ऽ।।।।ऽ १२			
		।।।।।।ऽ १३			

अथ वरण प्रस्तार देहु प्रथम गुरु तर लघु सम करु पाँति शेष गुरु पावै पूर करो प्रस्तार वरण को जौ लगि सब लघु आवै ३१ ॥

अथ वरण प्रस्तार प्रथम सब वरण गुरु लिखै पुनः प्रथम गुरु तर लघु बनावै पुनः ऊपर सम पाँति पूरि करै जो बाकी रहे सो वरण गुरु ते पूर करै याही भाँति लिखै जब सब लघु आवै तब प्रस्तार को अंत है ३१ ॥

(वरण प्रस्तार)

वरण प्रस्तार प्रारम्भः	ऽऽ। ५	।।।ऽ ८	ऽ।ऽऽऽ ३	।ऽ।।ऽ १४	ऽऽऽ।। २५
१ ऽ १	।ऽ। ६	ऽऽऽ। ९	।।ऽऽऽ ४	ऽ।।।ऽ १५	।ऽऽ।। २६
। २	ऽ।। ७	।ऽऽ। १०	ऽऽ।ऽऽ ५	।।।।ऽ १६	ऽ।ऽ।। २७
२ ऽ ऽ १	।।। ८	ऽ।ऽ। ११	।ऽ।ऽऽ ६	ऽऽऽऽ। १७	।।ऽ।। २८
।ऽ २	४ ऽऽऽऽ १	।।ऽ। १२	ऽ।।ऽऽ ७	।ऽऽऽ। १८	ऽऽ।।। २९
ऽ। ३	।ऽऽऽ २	ऽऽ।। १३	।।।ऽऽ ८	ऽ।ऽऽ। १९	।ऽ।।। ३०
।। ४	ऽ।ऽऽ ३	।ऽ।। १४	ऽऽऽ।ऽ ९	।।ऽऽ। २०	ऽ।।।। ३१
३ ऽऽऽ १	।।ऽऽ ४	ऽ।।। १५	।ऽऽ।ऽ १०	ऽऽ।ऽ। २१	।।।।। ३२
।ऽऽ २	ऽऽ।ऽ ५	।।।। १६	ऽ।ऽ।ऽ ११	।ऽ।ऽ। २२	इति
ऽ।ऽ ३	।ऽ।ऽ ६	५ ऽऽऽऽऽ १	।।ऽ।ऽ १२	ऽ।।ऽ। २३	
।।ऽ ४	ऽ।।ऽ ७	।ऽऽऽऽ २	ऽऽ।।ऽ १३	।।।ऽ। २४	

अथ शुभाक्षर गुण दायक श्रुति जाच साधु इर्षा छाड़ो अघे दायक वित सदा च सुवरण मय भूषण सुगन ३२ ॥

शुभाक्षर विचार यथा क ख ग घ च छ ज ड त द न य श स ह इत्यादि शुभाक्षर हैं मगन नगन भगन यगन इत्यादि सुगन हैं कवित्त के आदि में देइ ३२ ॥

अथ दग्धाक्षर। बोढ़े झूठा भाव घट पथ हरफारणवा
ड॰ मगना कवितन सगल्लावतज सर अग्नि समान ए २४
अथ वरणा वृति। धीह्री गोश्री १ मधुरितकुसवित २ ल-
ग्रीयमै मही घसे ३ ताल भाक पावसारु ४ शरदअम-
लनवलकमल ५ हेमातै से पाला पतों धौले ताला ६
रसशीकि स्तमै शिशिरजमासमै ७ इति ऋतुवर्णन ॥
अथ अर्थ अशीघ्रा संगा सेतसंगा मोटाजचा स्वच्छानीचा
धीरासेवा धात्रासेवा कामात्का औ कर्णाधर्मा ॥ ८ ॥

अथ दग्धाक्षर यथा ङ. ञ क्ष ट ठ ढ ण थ प फ व भ म ख व ष ह इ-
त्यादि दग्धाक्षर हैं तगन अगन्द समान रगन इत्यादि कवित्त आदि
में नरै २९ अथ वरणावृति धी बुद्धि ह्री लज्जा गो इन्द्री में जाके होइ
सो श्री कहे श्रेय है पुनः गो कहे, एक गुरु की श्री छन्द है ऽ१ विकहे
दुरकुस कहे रहु ॥ ताको मधुछन्द कही पुनः मधुबसन्त सेवनादि
फूले दोहा। वनकुसुमित अलिगण भ्रमत कोकिल शब्द गँभीर।
विरहिनि क्यों सहि पीव बिन डोलत त्रिविधि समीर २ लरनी लघु
गुरु ।ऽ ताको महीछन्द कही ग्रीषमऋतु में पृथ्वी आदि तप्त दोहा।
चंडभानु करतप्त महि सूखे सरिसर नीर। खस गुलाब जल जंत्र रुचि
ग्रीषम तप्त समीर ३ ताल कहे गुरु लघु ऽ। ताको सार छन्द कही पुनः
पावसऋतु में तालादि जल सो भरे दोहा। सतडि गर्जि घनवर्षि म-
हि हरि धुनि दादुर सोर। विद्रुकी शरभनु पाँतिवक चातिक भींगुर
सोर ४ न कहे एक नगन की ।।। कमल छन्द है पुनः शरदऋतु में
कमल नवीन चन्द्रमा जलादि अमल दोहा। कमल नवल जल अमल
शशि कास कुसुमसित श्रौनि। नृपपयान पथ पथिक चलि शरद
चान्नी श्रौनि ५ मे कहे एक मगन की ऽऽऽ ताला छन्द है पुनः हे
मंत में पाला परत ताल में जल सघव दोहा। शीत विपुल [illegible]
लसित कज जल कमल सताल। उष्ण तूल तियतैल चहि पि[illegible]नि-

शा छिमि काल ई सकहे एक सगन ॥१ कौरमनीक छन्द है पुनः शिशिरऋतु में रमणीकता होत। नृत्यवाद्य भरि रंग में गारी गान सयोग। खेलत हँसत अनन्द सो शिशिर लाज तजि लोग ७ इति षरऋतु वर्णन अथ भूर्णा उपमांग प्रथम धर्म वर्णन यथा। सहूं रंद सेतादि रंग मोटा ऊँचा पातर नीच धीरा वेगि हैरव मन्द-चाल इत्यादि का मन के कर्म तिनको कर्णाये सब धर्म है पुनः क र्णा कहे त्रिगुरु ऽऽ की कामाङ्कन है ८ ॥

अथ वाचक सोऐसी सा से सामाना मोगो तीरणी वाचेजाना ९ अथ उपमेय। पादजानु तुचा लंकनाभी कुचा हाथ ग्रीवा मुखा कर्णा भू चक्षुखा पी पियारी कहे सोपसेईलहे १० मराल गयंद जुरंभ मृगेंद २१ कूपलता पर सौरभ मंदर २२ कपोतालिसी पो जपाद खदीपो सुकाही च्छुमीना छटाही रवीना लता हेमवा ना शशीसोपमाना २३ ऊठा अनूठा सपर्कीय पंचालि मुग्धा ज्ञज्ञाता मसध्याक प्रौढालि २४ ५ । मनाथका। धर्मवृति अर्थालंकृति धाम लक्षण बोध सुमोक्ष फल काव्यकल्पद्रुमनाम ॥ २५ ॥

अथ वाचक यथा ऐसो ऐसी ऐसा सामान इत्यादि वाचक है पुनः मो मगन गो एक गुरु ऽऽऽऽ ताको तीरणी छन्द कही ९ अथ उपमेय यथा पावजांघ तुचा कटिनाभी कुच हाथ ग्रीव मुख कान भौंह नेत्र पीव प्यारी इत्यादि उपमेय है पुनः री कहे एक र-गन ऽ।ऽ की प्रिया छन्द है १० अथ उपमान यथा हंस हाथी कद-ली सिंह जु कहे एक जगन ।ऽ। की मरौंदु छन्द है ११ कुंवालता। अपर वृक्ष के शाखा पत्र अंकुर पल्लव फूल सौगन्ध रंग फल परवत

भकहे भगन ऽ॥ एकवी मन्दर छन्द है २२ कपोत खलिती पीञ्ज-
यादास्व दीपक सुक अहि इच्छु मीन तड़ित हीरा वीना हेमलता-
वान शशि इत्यादि उपमान हैं या कहे एक यगन को ।ऽऽ शार्ङ्गछं-
द है २३ अथ नायका यथा ऊढा ब्याही अनूढा अनब्याही इति पर-
किया पंचालिकहे गनिका पुनः जोवन बिना जाने अज्ञात जोबन
जाने ज्ञात इति मुग्धा लज्जा मदन समान ते मध्या काम कला प्र-
वीन ते प्रौढ़ा २४ यामें नायका भेद सो काम फल है छन्द ज्ञान सो
धर्म फल है अरु अलंकार भेद सो अर्थ फल है लक्षणा व्यंजना-
दि वा सबके लक्षण को ज्ञान सो मोक्ष फल है अर्थात अलंकार
नायका भेद छन्द लक्षणा व्यञ्जना रसादि सांग सब उदाहरण
नाम छन्दही में है ताते या ग्रन्थ को नाम काव्यकल्पद्रुम है २५॥

अथ लुप्त पूर्णोपमा यथा कलिका सनग चंपक शुभ
पद मंद मंद दारी ऐसी दोऊ ताये गुरु तानि तंव लेखि।
सिंह कटि निकट गभीर कुंड वीचि का सी फैली श्याम
सुक्षम सी उदरन सम पेखि कुच उच्च थी फल कपोत।
की सी ग्रीव सित कुंद सी कटाक्ष अक्ष तिक्षण सुकीय वं
ख बैजनाथ बाल मुख सेत विधु पूरण सो फैली शुलि
प्रीति पीपरन दंड कंज देखि ॥ २६ ॥

अथ पूर्णोपमा लुप्तोपमादि षोड़श भेद यथा सनख अंगुरी
सहित नग चम्पा की कली है यामें केवल उपमान वर्णन धर्म्म
वाचक उपमेय लोप १ शुभ पद या केवल उपमेय वर्णन धर्म्म-
वाचक उपमान लोप २ मन्द मन्द गति है यामें केवल धर्म्म-
वर्णन उपमान उपमेय वाचक लोप ३ दारी ऐसी दोऊ जंघ-
यामें केवल वाचक वर्णन उपमान उपमेय धर्म्म लोप ४ गुरु-
तानितंव यामें धर्म्म उपमेय वर्णन वाचक उपमान लोप ५ सिं-
ह कटि यामें उपमान उपमेय वर्णन वाचक धर्म्म लोप ६ गंभीर

ढूंडनासी है यामें धर्म उपमान वरणन वाचक उपमेय लोप ७ वीचिकासी त्रिवली है यामें वाचक उपमान वरणन उपमेय धर्म लोप ८ फैली स्याम सुक्षम सी रोमराजी है यामें धर्म वाचक वरणन उपमान उपमेय लोप ९ उदरन समया में उपमेय वाचक वरणन उपमान धर्म लोप है १० कुच उच्च श्रीफल यामें उपमेय धर्म उपमान वरणन केवल वाचक लोप है ११ कपोत कीसी ग्रीव यामें उपमान वाचक उपमेय वरणन धर्म लोप १२ सितकुंद शीश दन्त मुसक्यानि है यामें धर्म उपमान वाचक वरणन उपमेयलोप १३ कटाक्ष असलीसरासे कियेदेखयामें उपमेयधर्मवाचक वरणन उपमान लोप १४ बालमुखरूप विधु पूरण सो यामें उपमान उपमेय वाचकधर्म चारिहू वरणन लोपनहीं ताते पूर्णोपमा है १५ बालमुख सेत विधु पूरण सो फैली चाटनी यामें उपमान उपमेय धर्म वाचक चारिहू लोप इति षोडश भेद २६ ता चाँदनी में पति की प्रीति कुमुदिनी सम प्रफुल्लित है अपर पुरुष कंज सम सम्पुटित होत तिनको चाँदनी दंड दाता तैसे सुकिया पर पुरुष सो विमुख याते सुकिया नायका है सुकीय वैव पद में सुकिया को नाम है दंडकंज पद में दंडकछन्द को नाम है यामें पन्द्रह भेद लुप्तोपमा के एक पूर्णोपमा सहित षोडशभेद सुकिया नायका दंडकछन्द इत्यादि २६ ॥

रसनोपमा कैसे दीपक सो दीप जैसे दीपक सो दीप कैसे जैसे तर्क दुब्धा को दुब्धा को तर्क कैसे मानिक को मोल जैसे माणिक को मोल कैसे जैसे काम लुब्धा को लुब्धा को काम कैसे सुजनन को नाम जैसे सुजनन को नाम कैसे जैसे बस्स दुग्धा को दुग्धा को बस्स कैसे चन्द्र में चकोर जैसे चन्द्र में चकोर कैसे जैसे पीव मुग्धा को २७ ॥

अथ मुग्धा रसनोपमा को लक्षण कौनी भाँति यथा दीपक सो दीप बारिबो तैसे उपमा को उपमेय होत जाय याते यामें रसनोपमा-

है यथा चन्द्रमा को चकोर यकटक निहारत तैसे नायका को पीव निहारत याते स्वाधीन पतिका मुग्धा है १७ ॥

नदी जल बिन शशि बिन निशि जस रवि बिन कमल बकुल बिन दुगुधा जीवे बिन तन बसुलगा बिन नर रगा बिन सुभट रस बिर सलुबुधा मालूम्भवति तिमि परुषित पति बिन सलज सजल दृगदुख मुगुधा मालोय महँ तहँ जहँ बहु उपमहँ यक उपम्यइद बरणत कहुधा ॥ १८ ॥

यथा जल बिन नदी शशि बिन रैन रवि बिन कमल दूध बिन बछ जीव बिन तन धन बिन नर सुभट बिन रगा रस बिन ग्लनोभी इत्यादि मलीन हैं तथा पतिहीन नारी के उर में माल मानता दुःख ते नेत्रन में जल भरा लाज ते बोलत नहीं याते प्रोषित पतिका मुग्धा है जहाँ बहुती उपमादय एक उपमेय वर्णन करें ताको मालोपमा कही तन बसुलगा एक तगन आठ नगन एक लघु एक गुरु ऽऽ।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।। ऽयहसान्द्र छंद है

भाल भले भय भाग जु जासि निज गे भय भोर हमें सतावन आवत प्रेम पगे मन आलस में तन चितेरि रिनि चातुरि लिखे रगजावत वक्त उदोत तजे पलकें हग निहारि अघात नहीं सुधाधर ढावत गुलुपसा लनसंथ लिये विषय सा विषई जुगधा सुखंडित गावत ॥ १९ ॥

रात्री को हमारी भली भाति रही जो आप अनत जाके अब भोर भये हमें सतावन आये हो मन प्रेम में पगा तन में आलस अरु आवत रंग अंग में हैं ताको चातुरि चितेरिनि ने लिखा है तुम्हारो मुखउदोत ताको हमारे नेत्र पलक रहित निहारत में अघात नहीं हैं सुधा में अधर के ढोर चिह्न लाचित करत या में ॥

मुग्धा खंडिता नायका है इहाँ मुग्धा में वचन रचना को अभाव है तहाँ चितेरिनि शब्द में श्लेष है चितेरिनि चातुरि सखी लिख नो सिखावन है जहाँ विषय सा विषई होइ अर्थात् उपमा उपमेय में लक्ष होइ ताको गुप्तोपमा कही इहाँ मुख चन्द्रमा को लक्षहग चकोर को समता को गुप्तोपमा अलंकार कही भालभले भय भाग्य इति चारि भगन है जुजामिनि इति दुइ जगन भय और दुइ भगन ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।।ऽ।।ऽ।ऽ।।ऽ।। यह सुधाधर छंद है सुधाधर ठावत पद में चन्द को नाम है १९ ॥

सजाव गौर वर्ण षोड़शौ सहादशौ लगी सुभाय यो बखानि जातनाजसी सखी प्रबोधि बोध दै चली लवाय कै सुखै प्रभा निहारि चन्द की निते हसी गई तहाँ मिलो न नाह सून कुंज में उदास तुंड देखि कै तबै हँसी शशी विरोधउपमा कहै महीधरा सुदंडका निकेत सून मुग्ध विप्रलब्धसी ॥ २० ॥

गौर वर्ण तन में षोडश शृंगार बारहो भूषण को सजाव मुग्धा अवस्था ताम्य ऐसा शोभायमान लागत जैसा बखानत नहीं बनत बोध दै समुझाय प्रबोधि कुसलाय सखीजन नाह पास को लै चलीं ता समय मुख की प्रभा निहारि चन्द्रमा की हँसी होत तुच्छ लागत तहाँ गई नाह ना मिलो सून कुंज ते उदास मुख भयो ताको देखि चन्द्रमा हँसे लागो इहाँ उपमा उपमेय में विरोध जाते विरोधोपमा है सून कुंज जावे ते विप्रलब्धा मुग्धा है षोड़शो सहादशो लगी सोरह बारह अहादस लगी कहे लघुगुरु क्रम ते अहादस वरण ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ यह महीधर दंडक छन्द है ॥ २० ॥

सूनसाखिन निशि चली शशि भय मुख कमली

पति सुद अभिसरती नवभगात मुगधती हउप्रियनि तपतिका चहत प्रथम रतिका मिलिग्रुगलस् इक मा कहत लक्षरा उपमा ॥ २१ ॥

सखिन के छल ते राति को चलती भई यथा चन्द देखि कमल तथा पति मुख ते मुख कमल सम्पुरित भयो तिया अभिसार काहे आवत ताते पति के मन में मोद है काहे ते नवीन भक्त मुग्धा नारी ये दोऊ पति को प्यारे हैं प्रथम रति को दोऊ चाहत भक्त की प्रथम प्रीति मुग्धा की रति मुख उपमेय कमल उपमा मुग्धा उपमेय भक्त उपमा दोऊ के लक्षरा एक ते लक्षरोपमा अलंकार है मुग्धाभिसारिका नायका है ननिसि दाहे नगन दुइ सगन एक ।।।।।।।।ऽ यह कामली छन्द है मुखकमली पद में छन्द को नाम है ॥ २१ ॥

सुकुमारि सकोच सभै लघु जोबन जानि सबै सग की समुझावन घेरत वसुधा धरजरख्यावत नारि बिचार समारि सबै निज नाथ बिषैरत सजि वासकसे नहि भाँति भली। उसुखी मस मौतुन दोह्नि को मनगत गुरुषासजि भूषरा सोउपमा तजि दूसरा दैरि सनंद लला मग हेरत ॥ २२ ॥

सुकुमारि सलज्ज नवीन जोबन ते सभै जानि संग सखी समुझावन हेतु घेरती भई कि पृथ्वी पाताल स्वर्गादि में यावत नारी हैं तिनको विचारि देखु सब आपने पतिन में रत है यह कहि मखिन नवोढ़ा के मनको फेरराग करि प्रोढ़ा की समान करि देती भई ताते वा स्थान की सेज साजि दूषरा जो पति की भयना को तजि भूषरा सजि आनन्द ते लला के आवन की मग हेरन लगी ताते वासक सज्जा मुग्धा है दूषरा को त्यागता ते भूषणोपमा है सनन्दललास कहे सगन चन्द कहे नललला कहे दुइ लघु

।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।। यह वसुधाधर छन्द है मुग्धाको प्रमाण रसमंजरी यथा हारंगुंफति तारकांति रुचिरं ग्रंथाति कांचीलतां दीपंन्यास्यति किन्तु तत्र बहुलं स्नेहं न धत्तेपुनः आलीनामिति वासकस्य रजनौ कामानुरूपां क्रियं साचिस्मेरमुखीनवोढ़ सुमुखीदूरात्तमुद्वीक्षते ॥२२॥

सोवत अकेले भल लागत यदपि मोहिं तो पि विशेष सुख होत नाह अंक भरन अशन पट भूषण सुपास बास रक्षा को दूसरो न देखिये सदैव मान मोद करन पीनी सुप्रेम पीय नाहीं तो सूनि नारि ग्रीषम की सरिता उड़ात रेणु जल हरन उपमा सों दूषण कलहंतरित मुग्धा के द्वि लघु अन्त सह आयत बतीस वरन ॥२३॥

यद्यपि अकेले सैन में मोको भलो लागत तथापि नाहके अंक में विशेष सुख होत भोजन पट भूषण सुपास हेतु बास। स्थानादि रक्षा को एक पति सिवाय दूसरा नहीं देखियत है मान देनहारो आनन्द करनहारो पीव के प्रेम ते नारि सुख रहत नाहीं तो कैसी नारि सूनी लागत यथा ग्रीषम में जल सूखी नदी मेंरेणु उड़ात या विधि पछितावे ते कलहंतरिता मुग्धा नायका है पति को त्याग मुग्धा को भूषण है तासें दूषण माने याते दूषण उपमा अलंकार है बतिस वरण अन्त द्वै लघु जलहरण छन्द है ॥२३॥

न आयो पति आलि शोचै लगी कपोलाल कै पानि तियालगी भुजंगी बिछाये शशी कंजमा सुमुग्धोत्कंठा अभूतोपमा ॥२४॥

पति न आये ते संग की सखी शोच करने लगी ताते नायका भी उदास है सहित अलक कपोल पर हाथ दे बैठी यथा कर कमल में अलक भुजंगी बिछाय मुखचन्द्र पौढ़ा ऐसा है नहीं सकत ताते अभूतोपमा है मुग्धा उत्कंठा है तीया लगी तीनि यगन लघु गुरु-

है यथा चन्द्रमा को चकोर यकटक निहारत तैसे नायका को पीव निहारत याते स्वाधीन पतिका मुग्धा है १७ ॥

नदी जल विन शशि विन निशि जस रवि विन कमल बच्छरु विन सुगधा जीवे विन तन दसु लग विन नर रण विन सुभट रस बिन सलुबुधा मालद्रुभवति तिसि परुषित पति विन सलज सजल हग दुख मुगुधा मालोपम हैं तहँ जहँ बहु उपम हैं यक उपमेय इद वर्गात बहुधा ॥ १८ ॥

यथा जल बिन नदी शशि बिन रैन रवि बिन कमल प्रभ बिन वच्छ जीव बिन तन धन बिन नर सुभट बिन रण रस बिन रसलोभी इत्यादि मलीन हैं तथा पतिहीन नारी के उर में सालन्तीतला दुःख ते नेत्रन में जल भरा लाज ते बोलत नहीं याते प्रोषित पतिका मुग्धा है जहाँ बहुती उपमादय एक उपमेय वर्णन करै ता-को मालोपमा कही तन वसुलग एक तगन आठ नगन एक लघु एक गुरु ऽऽ।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।। ऽ यह मालछंद है १८

लाल भले भय भाग तुम्हारी [illegible] भोर भये हमें सतावन आवत प्रेम पगे मन आलस में तन [illegible] नि चातुरि लिखे रसजावत [illegible] उदोत तजे [illegible] निहारि अधात नहीं सुवा धर ढावत [illegible] लिये विषय सा विषई सुगधा सुखंडित गाता ॥ १९ ॥

रात्री को हमारी भली भांति रही जो प्रातु अनत जागे [illegible] भोर भये हमें सतावन आये सो मन प्रेम में [illegible] अरु बावत रंग अंग में हैं ताको चातुरि चितंगिनि [illegible] तुम्हारो मुखउदोत ताको हमारे नेत्र पलक रहित [illegible] अघात नहीं हैं सुधा में अधर के ठौर चिह्न रचित करत [illegible]

मुग्धा खंडिता नायका है जहाँ मुग्धा में बचन रचना को अभाव है तहाँ चितेरिनि शब्द में श्लेष है चितेरिनि चातुरि सखी लिख नो सिखावन है जहाँ विषय सा विषई होइ अर्थात् उपमा उपमेय में लक्ष होइ ताको गुक्षोपमा कही इहां मुख चन्द्रमा को लक्ष्य चकोर को लक्षता को गुक्षोपमा अलंकार कही भालभते भय भावय इति चारि भगन है जुजामिनि इति दुइ जगन भय और दुइ भगन ऽ।। ऽ।। ऽ।। ऽ।। ।ऽ।। ।ऽ। ऽ।। ऽ।। यह सुधाधर छंद है सुधाधर टावत पद में छन्द को नाम है १९ ॥

सजाव गोर वर्ण षोड़शो सह्लादशो लगे सुभाय यो बखानि जातना जसी सखी प्रमोधि बोध दै चली लवाय कै मुखै प्रभा निहारि चन्द की निते हसी गई तहाँ मिलो न नाह कुन कुंज में उदास तुंड देखि कै तबै हँसे शशी विरोध उपमा कहे महीधरा सुदंड का निकेत सून मुग्ध विप्रलब्धमी ॥ २० ॥

गोर वर्ण तन में षोडश शृंगार बारहो भूषण को सजाव मुग्धा अवस्था पाय ऐसा शोभायमान लागत जैसा बखानत नहीं बनत तासे सखीजन नाह पासको ले चली ता समय मुख की प्रभा निहार चन्द्रमा की हँसी होत तुच्छ लागत तहाँ गई नाह ना मिलो सून कुंज ते उदास मुख भयो ताको देखि चन्द्रमा हँसे लागो इहाँ उपमा उपमेय में विरोध ताते विरोधोपमा है सून कुंज जाने ते विप्रलब्धा मुग्धा है षोड़शो सह्लादशो लगे सोरह बारह अट्ठारह लगे कहे लघु गुरु क्रम ते अठारह वर्ण ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ यह महीधरा संज्ञक छन्द है ॥ २० ॥

सून सचिव निशि चली थाति मध्य सुख कमली

प्रति मुद अभिसरती नवभगात मुगधती इउ प्रियनि तपतिका चहत प्रथम रतिका मिलि युगल स इक मा कहत लक्षणा उपमा ॥ २१ ॥

सखिन के छल ते राति को चलती भई यथा चन्द देखि कमल तथा पति भय ते मुख कमल तस्फुरित भयो तिया अभिसार कहे आवत ताते पति के मन में मोद है काहे ते नवील भक्त मुग्धा नारी ये दोऊ पति को प्यारे हैं प्रथम रति को दोऊ चाहत भक्त की प्रथम प्रीति मुग्धा की रति मुख उपमेय कमल उपमा मुग्धा उपमेय भक्त उपमा दोऊ के लक्षणा शब्द ते लक्षणोपमा अलंकार है मुग्धाभिसारिका नायका है ननिसि कहे नगन दुइ सगन सक ।।।।।।।।ऽ यह कमली छन्द है मुख कमली पद में छन्द को नाम है ॥ २२ ॥

सुकुमारि सकोच सभै लघु जोवन जानि सबै सग की समुझावन घेरत वसुधा धर आरव यावत नारि विचार सभारि सबै निज नाथ विघेरत सजि वास कमे जाहि भाँति भली सुमुखी सम प्रौढ़न वाहि को मन पात मुग्धा सजि भूषण सो उपमा तजि दूषण वेंद नंद लला मग हेरत ॥ २२ ॥

सुकुमारि सलज्ज नवीन जोबन ते सभै जानि संग सखी समुझावन हेतु घेरती भईकि पृथ्वी पाताल स्वर्गादि में यावत नारी हैं तिनको विचारि देखु तब आपने पतिन में रत है यह कहि सखिन नवोढ़ा के मनको प्रेरणा करि प्रौढ़ा की समान इडकरि देती भई ताते वा स्थान की सेज साजि दूषण जो पति की भयता को तजि भूषण सजि आनन्द ते लला के आवन की मग हेरन लगी ताते वासक सज्जा मुग्धा है दूषण को त्यागना ते भूषणोपमा है सनन्दललास कहे सगान चन्द कहे नकलला कहे दुइ नग

।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।। यह वसुधाधर छन्द है मुग्धाको प्रमाण रसमंजरी यथा हारंगुंफति तारकांति रुचिरं ग्रंथाति कांचीलतां दीपंन्यास्यति किन्तु तत्र बहुलं स्नेहं न धत्तेपुनः आलीनामिति वासकस्य रजनौ कामानुरूपां क्रियं साचिस्मेरमुखी नवोढ़ मुमुखीदूरात्समुदीक्षते ॥ २२ ॥

सोवत अकेले भल लागत यदपि मोहिं तोपि विशेषं सुखहोत नाह अंक भरन अशन पट भूषण सुपास वास रसा को दूसरो न देखिये सदैव मान मोद करन पीनी सुप्रेम पीय नाहीं तो स्यनि नारि ग्रीषम की सरिता उड़ात रेणु जल हरन उपमा सों दूषण कलहंतरित मुग्धा के द्वि लघु अन्त सह भाषत बतीस वरन ॥ २३ ॥

यद्यपि अकेले सैन में मोको भलो लागत तथापि नाह के अंक में विशेष सुख होत भोजन पट भूषण सुपास हेतु वासस्थानादि रसा को एक पति सिवाय दूसरा नहीं देखियत है मान देनहारो आनन्द करनहारो पीव के प्रेम ते नारि पुष्ट रहत नाहीं तो कैसी नारि सूनी लागत यथा ग्रीषम में जल सूखी नदी में रेणु उड़ात या विधि पछितावे ते कलहंतरिता मुग्धा नायका है पति को त्याग मुग्धा को भूषण है तासें दूषण माने याते दूषण उपमा अलंकार है बतिस वरण अन्त द्वै लघु जलहरण छन्द है ॥ २३ ॥

न आयो पति आलिंगीचे सगी कपोलाल के पानि तियालगी भुजंगी बिछाये गारी कंजमा मुमुग्धोत्कंठा अभ्रतापमा ॥ २४ ॥

पति न आये तें संग की सखी शोच करने लगीं तातें नायका भी उदास है मलिन अलक कपोल पर हाथ दै बैठी यथा कर कमल में अनेक भुजंगी बिछाय मुखचन्द पीड़ा ऐसो है नहीं सकत तातें अभूतोपमा है मुग्धा उत्कंठा है तीया लगी तीनि यगन लघु गुरु-

ISSISSISSIS भुजंगी छन्द है ॥ २४ ॥

सखी साथ की भावती भाग्य तेरी घरी आजु आई
महा मोद धारे सुने सीखवा के हिये रंग छायो फुरै नैन
अंगे बढ़ी कान्तिदारै तुरै है मास चन्दो दसा के वनै भी।
गती नागया की भुजंगालकारे वाहै रूप निश्चय सुने-
सोपमा है जुतानन्द सुग्धा यती आगतार ॥ २५ ॥

साथ की सखी कहती है कि तेरे भाग्य की घरी आजु आई
भाव तेरो पति आयो ताते महामोद को धारण कर ऐसी स-
ख सखिन की सुनि वाके उर में उत्साह भयो शुभ अंग फरकि
उठे तन में कांति बढ़ि गई मुख की उपमा एक चन्द्रही है गति की
उपमा एक गजे की है अलक की उपमा एक भुजंगी है इत्यादि
एकही निश्चय ते नेसोपमा लंकार है आनन्द भये ते आगत प-
तिका मुग्धा है नागया आठ यगन ISSISSISSISSISSISSISSISS
भुजंगा छन्द है ॥ २५ ॥

अथ चतुर्विधि नायक सिर यथा छल लम्पट हीन
स प्रीति बही है सद्य लाज विद्ध मंगो महालाने है त्रिय
प्रीति गुणो गुरा बोर घरी है शठ संजुक्ती प्रिय त्या-
गि वरी है भय प्रीति सकोच सनोज ससाने गीर लि-
गा कस सकूह तिधाने तपदान सुचासति ता निवरी
है थिर धीरज शील दया समही है सद्गुता अनुरात्ति
दता सिमुहा है समावेद गुरा तत्व तारवा हा है अनुकूल
सियावर एक लही है इति अन्य नहीं इन मों नर्म है २६

अथ चतुर्विधि नायक धिष्ट यथा छली लम्पट है प्रीति जि-
लज्जा बहि गई अहल्या संभोग ते हजार भगे धारण करे याते
लज्जा रहित इन्द्र धिष्ट नायक है शठ यथा सुता में गुणा कानि र्शनि

घरी सें औगुरा जानि कोप प्रिय सती त्यागि पुनः विवाहे याते शंभु शठ नायक हैं दक्षिरा यथा उर प्रीति लज्जा काम सब सों समान राखि सगृह नारिन सों रमे याते कृष्ण दक्षिरा नायक हैं अनुकूल यथा सत्य शौच तप दान सदा निबाहे थिरता धीरज शील दया इन्द्रिन को रोकादि उर में हे कोमल सुजाती हिइ मन रिपु नाशक अवतारन में श्रेष्ठ है ऐसा राहित अंगन वेद गावत हे ऐसे श्रीजानकी वरे एक अनुकूल नायक है इनकी समान ये ई हैं आन नहीं है यह उपमेई उपमान है ताते अनन्वय अलंकार है सगवेद सुरांतव तारक चारि सगनता अन्त एक गुरु ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽऽ तारक छन्द है ॥ २६ ॥

पति प्रिया प्रिय नाह त्रिया भरी प्रणाय आनसना यन सुन्दरी नभ भरा उपमे उपमानकी जनकजा सम राम सो जानकी ॥ २७ ॥

पति के उर में प्रिया की प्यास प्रिया के उर में पति की प्यास ऐसी परस्पर प्रीति नाथ सहित थोर सुन्दरी नारी नहीं हैं देव लोक देव देविन सों भरा परन्तु या उपमेय की उपमा योग्य को आन नहीं है श्रीजानकीसम श्रीराम श्रीराम सो श्री जानकी याते उपमानोपमे या लंकार है नभ भरानगन हे मंगन रगन ॥॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ यह सुन्दरी छन्द है अनुकूल नायक स्वकिया नायका ॥ २७ ॥

नैगति सो गजराज बखानत तूरति जोगन जोवन मानत लाजत ·· दन्न वानन बीक्षन मन्दमनोज सरीक्षरा तीक्षन मोदक कोक बिचारिकै भागन चम्पक सुख लता दुरि बागन तोसी यथा न यथा उपमारत नाह कहुं परतीयन आरत ॥ २८ ॥

तेरी नवीनी गति समान में गज गति बखानत हों यामें उलटी

उपमा या ते प्रथम प्रतीपालंकार है नौ गति कहिवे ते नौ बधू मुग्धा है प्रति दिन दूनी द्युति दरसावै नवल बधू मुग्धा कवि गावै तू रति की योग्य नहीं यामें उपमेय को निरादर उपमा ते याते दूसरी प्रतीप तु आपनो जोबन रति करिबे के योग्य नहीं मान्यो भाव बाल अवस्था निसरि गई जोबन प्रवेश भयो याते नवजोबन भूषित मुग्धा है जोबन प्रविशिकादि शिशुपन सो मुग्धा नव भूषित जोबन सो तुम्हारो मुख देखे चन्द्रमा लजात है इहाँ उपमेय ते उपमा को निरादर याते तीसरी प्रतीप है तो मुख में निकसे दोऊ ईक्षण लजात हैं याते लज्जा प्रिय मुग्धा है लाज भरी रति पिय सुखदाई लज्जा प्रिय रति मुग्धा गाई काम के बान मन्द हैं तुम्हारे नेत्र तीक्षण हैं इहाँ समिता लायक उपमा नहीं है याते चतुर्थ प्रतीप है नेत्रन की चंचलता ते नवल अनंगा मुग्धा है नवल अनंगा मुग्धा नारी बोलि खेलि हँसि छल गति टारी तेरे कुचन को देखि अपना को लघु विचारि मोदक अरु चकवाक भागि गये चम्पा की नवीन लता बागन में लुकी इनको वृथा उपमा कोऊ देइ तो सी यथा रथ नहीं है इहाँ उपमा वृथा ते पंचम प्रतीपालंकार है तेरो नाह परतिया सों आगत नहीं ताते मंग्रह कारु मुग्धलता मुग्धा को नाम प्रतीपालंकार को नाम मोदक को कविचारिक भागन चारि भगन ऽ।। ऽ।। ऽ।। ऽ।। यह मोदक छन्द है ॥ २८॥

कहूँ हीन मंदी उचो चंचला रूप भयो काहू गाँचे लता हेम तद्रूप नवारी भई न्यून है फूल मंडन जु अज्ञात कंदाय वेदांत दंडेन ॥ २९॥

कंदाय वेदांत दंडेन यगन चारि अन्त दराड काहे मकरन्द ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ। यह कन्दा छन्द है अरु काहू हीन अर्थात कटि कहूं मंदी अर्थात गति कहूँ ऊँचो अर्थात कुच कहू चंचलता ।

अर्थात नेत्र इत्यादि मेरे रूप में यह काह दशा भई ऐसा शोचकरती जोबन नहीं जानती याते अज्ञातमुग्धा है नारीरूप हेमलतापरंतु फुलवारी में नहीं भई अरु फूल सहित नहीं है याते न्यून तद्रूपरूपक अलंकार है ॥ २९ ॥

विलोकि पयोधर मुक्तकदाम बिलोकि रहै झुकि मन्दजगाम तद्रूपरतीयह राजत बाम सुज्ञात गिरी लरिकाइ कि ठाम ॥ ३० ॥

मुक्तमाल देखिबे बहाने झुकि उरोजन को निहारि रहत अरु मन्द मन्द चलत यह जोबन जाने ते ज्ञात जोबना मुग्धा है लरिकाई कहों गिरि गई यह जानत ताते रति तद्रूप यह बाम राजत याते सम तद्रूप रूपक अलंकार है चारि पयोधर चारिकला मध्य गुरु पयोधर कही ।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ। यह मुक्त कदाम छन्द है ३०

रतितद्रूप रूप तिया रतिउच्च सदा नवलांकपती बसी दतिनावकदा भ्रमरावलि कंज करों सर सेज तदा विसरो धन बोढ़न को गत सीत जदा ॥ ३१ ॥

रति के तद्रूप रूप परन्तु तिया की रति उच्च है लघु वैस ते पति के अंक में नवला दुःखित है यह कहत की अबकबीन ऐहों इहा सेज तड़ाग पति कर कमल रति निशा में नारी भ्रम रसम बन्द भये दुःख पुनः छूट भूलि गई यथा सीत काल गये बोढ़न भूलि जात तथा रति दुःख पीछे कछु चाह याते विश्रब्धनवोढ़ा है तियरति उच्चता-ते अधिक तद्रूप रूपक अलंकार है सरसे पांच सगन ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ यह भ्रमरावली छन्द है ॥ ३१ ॥

भास्वत पादों नूपुर गुम्फाचम्पक माला बाल वधू-न्ता रूपक सज्जा भेद भोलागी देखत पाना बोढ़न त्यागी ॥ ३२ ॥

भूषण करि कानन में शोभा दोऊ पावन में नूपुर मधुन में बाला चम्पा की माला है ताने देख्यो सज्जा को रूप गेह मो लागी संकेत में ताकी भयमानि अन्न खावो पानी पीवो बोइनारि त्यागे याते नवोढ़ा नायका है चम्पकमाला बाल याते सम अभेद रूपक भाभगन सब करन द्विगुरु पादौ नूपुर तुम्मापाद चोकल आदि गुरु नूपुर दुइ गुरु यथा ऽ।।ऽऽऽ।।ऽऽ यह चम्पक माला छन्द है १२

फूलति भाकरनाधरबन्धू मुग्धलता सुमना न सुगन्धू रूपकऊनतु बेधन ठाने भाध भेद पियकाह हेराने ॥ १३ ॥

पीव भास्कर देखि बन्धु अधर प्रफुल्लित नहीं भाव मुसक्यात नहीं नवीनि लता मुग्धा है परन्तु सुमन सुगंध नहीं प्रसन्न मन बोलत नहीं याते मानिनी मुग्धा जानि पीव उदास रूप करि भूमि में ढूंढ़न लगो ताको देखि तिया कहत है पीव काहे हेरानो बन्धु अधर फूले नहीं याते न्यून अभेद रूपक तिभाकरना तीनि भगन तापै करन काहे द्विगुरु ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽऽ यह बंधु छन्द है ॥ १३ ॥

इति मुग्धा अथ मध्या रहो धीरा धीरा न द्विन हंस नासिंसक यथा यमैनासो भाखे लघुन गुरु मध्यानिशिकथा लजारूबाला भेद धिक सुनि ब्रीडा मैनसारहीयेनी नैनी सिखर नीचे करि सुमनसा ॥ १४ ॥

इति मुग्धा अथ मध्या यथा छोटे बड़ेन के आगे नायका को देखि मैना रात्रि के चरित्र भाखने लगे यथा रहो रहो धीरा धीरा। हंस नाहीं सिसनारि ताको सुनि सुन्दर मनवाली मृगनैनी लजारू है बाल शीश झुकाइ लियो याते अधिक लज्जा मध्या है लजारू हुये लजात यह सुने लजानी याते अधिक अभेद रूपक अलंकार है य मैना सा भाखे लघुन गुरु यगण मगण नगण भगन भगन लघु गुरु यथा ।ऽऽऽऽऽ।।।।ऽऽ।।।ऽ यह सिखरनी छन्द है १४

दृगअंचलानलतिलान भरे मनमथ अंकुश मध्य धरे ।
समरसदीपरिनास चित्ता गतिगज सी सुसुखी रतिसारे ॥

दगरूपी पावन में लाजरूपी अंगार भरे उर मध्य मन रूपी मत्ता उत्तमनमय रूपी अंकुश लिहये दोऊ रस सम है परिणाम अन्त में पतिचंद्र तिसरो ताने गति गज सो सुसुखी रति करत रही गज उपमान ते रति क्रिया करिबो ताते परिणामालंकार है सुखारति है रसही लघु है चित्ता तोनि तगन ।।ऽ।।ऽ।।ऽ यह सुसुखी छन्द है ॥ २५ ॥

ताते सुकरणीं अरु ... राया । माते सुभारी लघु नैनमाया । नायेरती गौर समान लज्जा । सापलि सोले लतिइंद्रवज्रा ॥ २६ ॥

पिता को शुभ कारणी है लघु भाइन को राया है माता जानत सुन्दर भाग्य है लघुजन जानत समा है पति जानत की रति है गुरुजन जानत लाज है सपत्नी जानत इन्द्र वज्र है बहुत प्रतीति ना समुझत ताते प्रथम उल्लेखालंकार है लज्जा मदन समान मध्या है ताते सु करणी तगन है जगन एक करण है गुरु ऽऽ।ऽऽ।।ऽ।ऽऽ यह इन्द्रवज्रा छन्द है ॥ २६ ॥

गुरणी गिरा मे रति रूप माला विलास मध्या पति कोक माला लजात जा करणी मनोज धन्या उपेन्द्रवज्रो लखते सपत्न्या ॥ २७ ॥

गिरा समगुरणी रति सम रूप की माला विलास में पति को कोक की माला सम सापत्निन को उपेन्द्र वज्र सम एक को बहु भाँति बरनान ताते दूसरी उल्लेखालंकार लज्जा तजे मनोज करने में धन्य याते मनोज अधिक मध्या है जातजा करणी जगन तगन जगन करण ।ऽ।ऽऽ।।ऽ।ऽऽ यह उपेन्द्र वज्र छन्द है ॥ २७ ॥

कमल अमल नैनी चंप की वैस्य मध्या नवलतन
जुवा स्था मैन क्रीडा स मंथ्या नगान गास यया केजोति
जागेसुलाला सुमिरणा कारि काको मालिनी एक
बाला ॥ ३८ ॥

फूलन को देखि सुधि आई कमल सम अमल नेत्र चम्पा
वरणा मध्य वैस नवल तन युवा अवस्था विराजमान मैन क्रीडा
की सन्धि भूखगा के नगनग प्रतिलालन की ज्योति जागत यह
सुनि पूछती है हरि काको सुमिरणा करत हो हे मालिनि एक
बाला की आरूढ़ यौवन मध्या सुमिरणा अलंकार नगनग
मयया है नगन मगन है यगन ।।।।।।ऽऽऽ।ऽऽ।ऽऽ यह मालि-
नी छन्द है ॥ ३८ ॥

मन हंस सी कर मौक्त की सजजो रसै सुखचन्द।
कंज चकोर भृंग भ्रमैं फिरे भ्रमि आकुले दृगलाज
की उरझैनमे मनुजात प्राद्भुर भृत मध्याहि सैनमे ३६

हास सी करन को हंस मन में मुक्ता जानत चकोर मुखको
चन्द्र मानत भ्रमर कमल मानि भ्रमे फिरत याते भ्रमालंकार।
मनोज वश मन सेजे में लागलाज की उरझनि ते नेत्र आकुलता
ते मनुजात प्राद्भुर भूत मध्या है सज जो भरै सगन है जगन भग-
न रगन ।।ऽ।ऽ।।ऽ।ऽ।।ऽ।ऽ यह मनहंस छन्द है ॥ ३६ ॥

फटी कंचुकी की शिवे कामलूटी नखांके लसै
कीकला इन्दु छुटी छुटे हार राजे किधौ तार पांती लजै
नैन घूसे किधौ मन माती छुटे वार सोंहै सुरंग वेर तीन्हो
भुजंग प्रिया ताय चौवोर लीन्हो कंग[illegible]मन्त्र[illegible] पांगा
भीनी रतीदान वे चित्र मध्या नवीनी ॥ ४० ॥

कंचुकी फटी किधौं काम ने शिव को लटि लई नखक्षत है किच-
न्द्र की कला चूटिपरी हूटे हार हैं कि नक्षत्रन की पांति है लाज
वश तें नैन घूमत की भैन आती हैं सुगन्ध भीने बार छूटे मुख
पै की चन्द्रमा आनि भुजंगन की प्रिया चारहूं ओर ते ताय लीन्ही
आली सन्देह ना करो याते सन्देहालंकार है रति दान लै पी
के रंग में भीनी ताते रति विचित्रा मध्या नायका है यश्रो चारि।
यगण ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ यह भुजंगप्रयात छन्द है ॥ ४१ ॥

सुद्धापनौ तीन पाखंड वै चिन्न प्रागल्भ वैनाल सा-
रंग चारित्र मध्यांग फूलेन ।ऽ।।ऽ।।ऽऽ। ।ल सापति
पैरीय है तापनो ज्वाल ॥ ४१ ॥

सुद्धापन नहीं है यह विचित्र पाखंड है चातुरै वचन नहीं है
पै राति के चरित्र श्रोऽत प्रकट होते हैं तन में सिंदूर कज्जल के
चिन्ह देखि काहू की मध्य अंग में ऋतु बेकाल पलाश नहीं फू-
लत ऐसो तिन के मराये तापन के ज्वाला है इत्यादि उरहन दे
नें ते प्रागल्भ वचना मध्या है सुद्धापन को धर्म दुराय पाखंड
में आरोप चातुरे वचन धर्म दुराय राति के चरित्र में आरोपताते
सुद्धापन्हुति अलंकार है बेकाल पलाश नहीं फूलत ये ताप के
ज्वाला है इत्यादि युक्ति सों चिन्ह वस्तु को दुरायो याते हे ताप-
न्हुति अलंकार है चारि त चारि तगन की ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ। यह
मारा छन्द है ॥ ४२ ॥

धीर उर मध्य नम भाग नहि भासतो भाग जस-
नारि जन्न लाल निशि पासतो प्रीति पर जासु अपनी
तिनित बात मे बागनि बसंत न बसंत तव गात में ४२

हमारे भाग्न में भाग्य नहीं है याते हमारे उर में धीरज नहीं
है भाग्य यश वाही नारि को है जहां लाल रात्रि बसे जाकी प्राति

परहरि गात में अनीति नित करत हो इत्यादि रिस अनादर ते अधीरा नायका मध्या है बाग में बसन्त नहीं तुम्हारे गात में बसन्त है बाग को गुण तन में आरोपते पर्यस्तापन्हुति अलंकार है भगण यथा नारि भगन जगन सगन नगन रगन ऽ।। ।ऽ। ।।ऽ ।।। ऽ।ऽ यह निशिपालछन्द है ४२ ॥

सखि धीर धारु प्रफुल्लकुमुदै मन कोकत्रास दृग कंजमुदै सुख छेक पानकृति ना पिय सी प्रमिताक्षरां कयुत साज शशी ॥ ४३ ॥

हे मन धीरज धरु कुमुद को प्रफुल्लित करनेवाला भाव दुःख को मनरूपी कोक को त्रासदाता दृगरूपी कमल को सम्पुटित करता पान ते सुख छेका पिया नहीं है अमित अंकन सहित साज चन्द्रमा है इत्यादि बात पराये सो दुरायो याते छेकापन्हुति अलंकार व्यंग कोप जनाववेते धीरा मध्या नायका है। साज शशी सगन जगन है सगन ।।ऽ ।ऽ। ।।ऽ ।।ऽ यह प्रमिताक्षरा छन्द है ॥ ४३ ॥

छवि आजु लालन मंजुता सजजोहरा गुणा संजुता सुख पीक पी मिस सौतिया के तापनोतिय मोहिया ॥ ४४ ॥

हे लाल आज छवि मंजुल कहे सुन्दरि है अगुण कहे बिना गुण सहित हार सजत है पीके मुख पे पीक के बहाने सौती मेरे उर में ताप करती है विलखाय को व्यजना याते धीरा धीरा नायका है पीक बहाने ताप वर्णनते कैतवापन्हुति अलंकार है सजजोहरा सगन है जगन हरा एक गुरु ।।ऽ ।ऽ। ।।ऽ ।ऽ ऽ संयुता छन्द है ॥ ४४ ॥

सखि धीर धीरता है तना अखुवा क्यों कटु सोंकना

स्वानि भ्रांत [illegible] या गहिकौन वे गुण मोतियान

मन में धीर तन में धीर नहीं ताते नेत्र भरि आये सखी पूछी आ- सु क्यों कहत [illegible] शोक नहीं मेरे यह भ्रांतापन है कि बिना गुण का माला कानें गुहारी य कोप जनाववे ते मध्या धीरा धीरा है दुः- ख को भ्रम मिटाय सखी सों बिन गुण माल को कहे याते भ्रान्ता पन्हुति अलंकार नायका अरु छन्द पूर्वही की है ॥५४॥

काल सिंगार पर भूषण उत्तम हरि पद [illegible] तहकाल॥ सो ह्वौ छाड़ि रमी रुचि जैसी [illegible] कुल जि मराल॥ विधे असिद्ध वात कहि इत उत प्रक्षलत मुख पी को। मनहुं कमल निशि प्रफुल सफल हित धोय कलंक श शी को विषय सिद्धि अनुकूल सफल पति पोसत पी- क सुहायो लखि पर तिय अनुराग प्रगट जनु चाहत बाल मिटायो धोय असिद्ध विषय अंजन जो लागि क- छुकर आयो शशि सकलंक कुसंग हेतु जनु कमल का- लिमा पायो पोछि सनंद वदन बिहसत तिय सिद्धि वि- षय यहि भासे असल चंद लखि हेतु चन्द्रिका विपुल कला जनु भासे छवि तिय गौर श्याम सुन्दर पिय मिल त हरषि इमि राजे सदन व्योम बिच उक्त वस्तु सो जनु घन तड़ित विराजे बैठ जाइ सदन ऊपर द्वउ वस्तु अनुक्ति हि सो है मानहु सुभग [illegible] [illegible] ऊपर युग शशि प्र- कट भयो है ॥५५॥

सिंगार पर भूषण सोलह बारह अट्ठाइस मात्रा २८ अन्त कर- ण [illegible] में है यह [illegible] हरि पद छन्द है सुन्दर शृंगार तापै उत्तम भू- षण धारे है और [illegible] के [illegible] हृदय में [illegible] ऐसी इसमें [illegible] अन्ते

रमत तोरमों जैसी आपुकी रुचि होइ परन्तु सचिन्ह आपुको र-
खि लाजन मरियत है यह विषय असिद्ध है यह बात कहि नैनी
पति को मुख धोवन लगी तहाँ कर कमल सचिन्ह मुखचन्द धो-
इबो संभाव्य मान पद की उत्प्रेक्षा मानो कमल शशी फूल वराफल
ता हेतु चन्द्र को कलंक धोवत है ऐसी ह्वै नहीं सकत ताते असिद्ध
विषया फलोत्प्रेक्षा लंकार है पति की अनुकूलता विषय सिद्धि
सफल होवे हेतु पीक पोछत मानो परतिया को अनुराग प्रकट
पकरि पायो ताको वाल मिटाय देन चाहत है यह बात ह्वै सकत
ताते सिद्ध विषया फलोत्प्रेक्षा लंकार है अंजन धोवत में कछु कर
में लागि आयो मानो कलंकित चन्द्रमा के कुसंग हेतु ते कमलो
में स्याही लगी ऐसी ह्वै नहीं सकत ताते असिद्ध विषया हेतु उत्प्रे-
क्षा पोछि मुख निरमल देखि आनन्द सों तिया हसत मानो मुख-
चन्द्र निरमल देखि हसनि चंद्रिका अनेक कला सों प्रकाश करत
यह ह्वै सकत ताते सिद्ध विषयाहेतु उत्प्रेक्षा है तिय की छवि
गोर पिय की सुन्दरता श्याम दोऊ हरषि मिलत मानहु सदनरूपी
व्योम के बीच में मेघ दामिनि विराजत यह ह्वै सकत ताते उक्ता-
वस्तु उत्प्रेक्षा सुन्दर धाम के ऊपर दोऊ जाइ बैठ ताकी उत्प्रेक्षा मं-
दिर मानो धवलगिरि है ताके ऊपर दोऊ जन के मुख मानो द्वै च-
न्द्रमा प्रकट भये हैं ऐसी होना अयोग्य ताते अनुक्ति वस्तु उत्प्रेक्षा-
उत्तमा मध्या नायका ॥ ४५ ॥

तौ सुनैन पिय के मुख वरार्ता स्वागतार्थ सर-
लौनभ करार्ता मान मध्य नहिं बोलत तासों ह्वैनग-
म्य उतप्रस्तजासों ॥ ४६ ॥

पति के मुख के वरता तिया नहीं सुनती बचन कान में
कैसे वृथा जात यथा आकाश में दान वृथा जात कुलगी सखी
काहत कि नायका मान मध्य में है तासों बोलत नहीं उत जासों

प्रकृत होी ताको गम्य नहीं वह नहीं जानत इहाँ वचन कानकी उत्प्रेक्षा आकाशवानं की है जानो मानो वाचक नहीं ताते ग- म्योत्प्रेक्षा लंकार मध्या मधिमा नायका है रगन नगन भगन करगा ऽ।ऽ।।।ऽ।।ऽऽ यह स्वागता छन्द ॥ ४६ ॥

लघृगुराष्ट जामही जरैं सबै सुधामही अतीश- योक्ति रूपिका धमानगास्वरूपिका ॥ ४७ ॥

छोटे बड़े आठहू याम धाम में जरते हैं ताते अधमानायका सरूपिनी है केवल उपमान ते अतिशयोक्ति रूपक अलंकार है लघृ गुराष्ट लघुगुरु क्रम ते आठ जामें होइ ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ यहसमा स्वरूपिका छन्द है ॥ ४७ ॥

नसयन हिये खि भौं हग रस गा विंव धौं वलय सछ्ला अंगूली चपलयत बाहुमूली ॥ ४८ ॥

राति सैन में गई भरता को नहीं देखी सूनी सेज ते प्रोषित पतिका अधरन को रस नेत्रन में गयो वोठ सूखि गयो नेत्र आँसु भरि आयो अरु अंगुरी को छला वलय भयो है बाहू मूल- में खिलिले लगो कारण प्रसंग कार्य्य भयो याते चपलातिशयो क्ति अलंकार है नसय नगन सगन यगन ।।।।।।ऽ।ऽऽ यह बिम्ब- छन्द है ॥ ४८ ॥

तत तात राजेन्दु वंशोपजी हिते अत्यंत स्वाधीन कीने पती छिते सज्ञादिही मध्य ल चाहती जवे रा- रैते पती साजि कै आगही तबै ॥ ४९ ॥

तेरो पिता राजन में इन्दु है ता वंश में तू उपजी है अरु पति को अत्यन्त आपने स्वाधीन कि है याते स्वाधीन पति का मध्या मध्या आदि यावत कर्तव्यता तेरे मन में चाहतही पति आगेही

माजि रारवत पूर्व्वी परक्रम नहीं याते अत्यंतिसयोक्ति अलं-
कार है तमातरा मगन तीनि रगान ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।।ऽ।ऽ यह इन्द्र-
वंशा छन्द है ॥ ४९ ॥

रैनसोहलसुखशशी भेदकांतिस्वयनयशी हो-
तकंठवचनभिने औरसीगतिपतिबिने ॥ ५० ॥

प्रथम राशी में चन्द्रमा सम सुख सोहत रहै अब भेद देखात-
जैसी पूर्व्व रहै सो अब नहीं है कंठ में वचन और भांति निसरत ना
सनहीं आयो ता बिना देह की गति और भांति है गई नाह की
राह देखत राति बीति गई ताते उत्कंठा नायका और भांति भ-
नि वरगान ताते भेद कांतिसयोक्ति अलंकार रैन सो रगन जग-
न सगन ऽ।ऽ।।।।।ऽ यह ह्लसुख छन्द है ॥ ५० ॥

वास सेजै सवंधै तिया रातिनी की महालक्ष्मि-
या धामगरधेजगे जोतियो लोकछाई प्रभाहोतियो
॥ ५१ ॥

वास में सेज को प्रबन्ध तिया करत याते वासक सज्जा ना-
यका राति महा नीकी ता आगे लक्ष्मी नहीं नीकी इहां लक्ष्मी
योग्य को राति में अयोग्यता देनेते असंबंधातिसयोक्ति अलं-
कार धाम मध्ये दीपादि की ज्योति जगत ताकी ऐसी प्रभा होनितो
लोक में छाई है यह अयोग्य को योग्यता देवो ताते सम्बंधाति
सयोक्ति रातिनी की रगण तीनि की ऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽ यह महालक्ष्मी
छन्द है ॥ ५१ ॥

बोपर [illegible] न का सो निहार जोस्त
ग मैन का वान कलकुंज [illegible] सायरा शोक मध्य
जात नाद सा काली ॥ ५२ ॥

त्रिनायीव मिलो सेज अकाल तांते उदास भई ताको निहारत ही मैनको मारा जोर सों लागो ताको अलकुंज को आइबो साथही भयो। ता शोक में ऐसी दशा भई जो कही नहीं जान कारण कारज संगही भयो ताते अक्रमातिशयोक्ति अलंकार कुंजगई पति ना मिलो उदास ताते विप्रलब्धा मध्यानायका सजोर लागा रगन जगन गन लघु गुरु [illegible] यह मनका छंद है ॥ ५२ ॥

सायन्नवारूपकातीप्रभात में विजातितोरैनवा मस्थलीरमें सफूलजो खंडित है वसन्त में अनेकरं गेन फूले जु कान्त में ॥ ५३ ॥

प्रभात में प्रिय को नवारूप ताकी कान्ति ऐसी हे काल की रैन सें विजाति त्रिया की नाम भ्रस्थली में रम सहित फूल स्तन सो कहिये जो खंडित है हमारे कन्त में अनेक रंग की के फूल फूले हैं प्रभात आयो पति ताते खंडिता नायका वसंतको फूलाकृति सें ठहरायो ताते सामन्यातिशयोक्ति अलंकार जाति करि जगन तगन जगन रगन ।ऽ।ऽऽ।ऽ।ऽ।ऽ यह वंशस्थ छन्द है ॥ ५३ ॥

मनकामसदापतिहै सुखदा तिससमिता तिलपत्यलता असबंधतिसें कियवादरिसे लरिकैय छिता कलहंतरिता ॥ ५४ ॥

मनकामना को सदा सुखदाता पति है ताकी समिता में कल्पवृक्ष तिल सम है तासों हों विसार कर वाहीही रिस करी अर्थात सकोच ते इत्यादि कलह करि पछितात ताते कलहंतरिता मध्या नायका कल्प लता योग्य को अयोग्य ताते असंबंधातिशयोक्ति अलंकार सस है सगन [illegible] यह तिलका छंद है॥

चकोर शोत बालच[illegible] भा शशी क तुल्यता मनो-

मनोजके मनैलजात जात स्वल्पता विभूषणौ सपुंज मंजुलै निचोल धारिका हृदै मुदी प्रकाश कौमुदी निशाभिसारिका ॥ १ ॥

तीनि अभिसारिका नायका तीनि भेद तुल्य योग्यता लंकार नाराच छंद में कहत यथा बालके मुख की प्रकाश चन्द्रमाकी प्रकाश तेज की प्रकाशता धर्म एकही ताते प्रथम तुल्य योग्यता लंकार मनोज को भूत मन में समूह लजा थोरी याते उजियारी राति में जात विभूषण समूह वसन श्वेतकी धारण किये हृदय में आनन्द प्रकाश उजियारी राति में जात ताते चन्द्राभिसारिका मध्या नायका है ॥ १ ॥

सुमैन का तिलोत्तमा उमा गिरा त्रपाधि ता पार्वती रसा मतिं द्युती सतुल्य योग्यता निचोल भूषिनी लनील माल जाल धारिका पती निलै चली भली तमा निशाभिसारिका ॥ २ ॥

मैनका तिलोत्तमा पार्वती सरस्वती लज्जाधिताई इन्द्राणी रति रमा इंदुमती आदि सतुल्य सुन्दरता जाकी इत्यादिक उत्तन के गुणान की समिता देवेने दूसरी तुल्य योग्यता लंकार वसन भूषण समूह मालन के जाल नील नील धारण करि पति के मन्दिर को चली लज्जा अधिक ते अमावस की रात्रीमें ताते कृष्णाभिसारिका मध्या नायका है ॥ २ ॥

चली सुतुल्य योग तोय मैन लाज को दिये नंगे नराच सो सिंगार सौति नाह के हिये पटाजगीजरे गुमा ल भूषणादि धारिका राती निलै मिलै पती प्रभादिवा भिसारिका ३ ॥ ५५ ॥

भैन साम रोज को मराचीर सन्तोषहि के पति को मिलबे हेतु मं-
दिर की गली में चली जात ताके तन को शृंगार सौति नाह रोज
के उर में नराच करे बाणासम लागत सौति के ईर्षा भाव ते पति भ
के नेह भाव ते इहां एक शृंगार शब्द तिन मलिन को बोध ताते भ
तीसरी तुल्य योग्यता जरी के पटजराउ भूषण मालादि धारण
करि दुपहर के घाम में जात ताते दिवाभिसारिका मध्या नायका
है लगै नराच सो सिंगार लघु गुरुक्रम ते सोरह ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ
यह नराच छन्द है २। ५५ ॥

नेह बाम दीप कोहि मान बान छूट सोहि मल्लिका
सरोज होय फूलि मध्य भौंर सोय ॥ ५६ ॥

बाम चरु दीपक नेह भरे शोभा देत मान चरु बान छूटे शो-
भा देत चमेली चरु कमल फूले देखि भ्रमर बास लेत सोयकै
तैसेही तू पति अनुकूल हो याते मानिनी मध्या है है को धर्म ए-
क ताते दीपका लंकार सरोज होय यह कल में सातों भेद ताको
रूप ऽ।ऽ।ऽ।ऽ। यह मल्लिका छन्द है ॥ ५६ ॥

राज माल दीप पाद प्रती ममानिका नेत्रवाम फ-
र्कतो वाम फर्कि पानिका भानदा परा सखी बाम मोद
स्वार्थका मंगलादि सूचना दीपका सुतार्थका दीपका
वृत्ती पदार्थ आग मावती हर्षती महेलि के हर्षिवा-
म लाजती ॥ ५७ ॥

दीपन की माला राजत तिन ते दूसरी चाहति नाहीं सब मणि-
न की जोत मानों समय नेत्र कर बाम फरकि उठे बाम करक बै
बार रति परा इति दीपका लंकार मंगल लक्ष सूचन देखि वामके
मोर भयो पति आवन स्वार्थ मानि ताते आगर सखिन के आनंद
भयो आनन्द मोर सबकी मानि पर्यावृत दीपका लंकार पति आवन

जानि सहेली हर्षित प्रकट हरख बे में बाम लाजत ताते आगामप-
ति का मध्या नायका हरख है वार ताते पदार्थावृत्त दीपक राग
माल रगन जगन माल एक गुरु ऽ।ऽ।ऽ।ऽ इति दोहरो पर पै तुकां-
त समानिका छन्द है ॥ ५७ ॥

भौंरलसतजस पंकजबागहि नारिलसत तस पी
गरलागहि भागन द्विज शुभ भोनित मागत प्रत्य-
वसतुउपमा पति आगत ॥ ५८ ॥

जस कमल बन में भौंर शोभत तैसे पति के गरे लागे नारि
शोभत उपमा उपमेय को धर्म वाक्य सकल सब ताते प्रति च-
स्तूपमा लंकार जो नित माँगत रही सो द्विजन की भाग्य ते शु-
भ भयो ताते आगत पतिका भागन द्विज शुभ भो भगन द्विज
चारि लघु है भगन ऽ।।।।।।ऽ।।ऽ।। यह पंकजगटिका छंद है ।

ज्यो बहु भाँति न माल गुहे चातुरता तिमि बैन
पुहे पीक्षन ता दृशटांत पला मारवती गुरा गर्व
वला ॥ ५९ ॥

ज्यों बहुत तरह मों माला गुहे त्यों चातुरी के बैन पोहती पी
रूपी नेत्र को नारी की दृष्टान्त पलाकी है भाव आठ पहर रहत
ताते गुरा गर्विता बिंब प्रतिबिम्ब ताते दृष्टान्त अलंकार भाँति-
न माल भगन तीनि माल एक गुरु ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ यह मारवती
छन्द है ॥ ५९ ॥

हंस पैज सोधि मो परोजरोज रासना लैं चकोर
चाल नैन आन तीनि दर्शना आनुकूलता सिखैत
मोल फेकि चर्विता चामराजु दारिपी दिहाव प्रेम
गर्विता ॥ ६० ॥

यथा हंस पै पान करत तथा हंस सम पति मोको पैसममानिरो-
ज गज गमनता करै आनन्द कग चाहत इहाँ उपमा वाक्य हंसउप-
मेय वाक्य पीव दोऊ वाक्यार्थ एक ताते प्रथम निदर्शना अलं-
कार चकोर की चाल नेत्रन में लै आनतियन को नहीं देखत मेरे
मुखचन्द ही को निहारत उपमान चकोर को धर्म उपमेय नेत्र में
आरोप ताते दूसरी निदर्शनाते मोल को शेष मेरे मुख ते आपने
कर में लै फेंकि अपरपतिन को अनुकूलता उपदेशात अरु मेरेऊ-
पर चामर ढारत तासों प्रेम गर्व मेरे हद कारन इत्यादि क्रियादेखा
य आनको उपदेशात ताते तीसरी निदर्शना प्रेम गर्विता नायका
रोन रोजरा ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ यह चामरछन्द है ॥ ६० ॥

कल शृंगार शिर पाद कुलेका रूपवंत्य अतिग-
र्वितरेका कंज सोसवर सरस कटाक्षा भाष्य सखि
म्वहि लागत अच्छा ॥ ६१ ॥

कोऊ मेरे शृंगार की प्रशंसा करत कोऊ शीश कोऊ पौंव
कोऊ कुलि अंग कोऊ रूपवंती कहत कोऊ अति गर्विता कहत
कोऊ नेत्रन को कमल सम कहि कटाक्ष अधिक कहत ऐसा व-
चन कहत मोको अच्छा नहीं लागत याते रूप गर्विता नायका
कमल उपमान तें नेत्र उपमेय में कटाक्ष गुण अधिक ताते व्यति-
रेकालंकार कल शृंगार सोलह कला की पादाकुलक छन्द है ६१

करणाकर दै करणाकरि कै जानो मुनि के शोचे
भौंनि कै हो माय गये भीजे दुखमा पी प्रावस ह्वोकी
की सुखमा ॥ ६२ ॥

पति को जान सुनि सोच भई करुणा के वश हाथ पे कान
धरि रोय गई पति को परदेश जानो तिय की शोभा जानो सावं-
दी ऋतु में भीजे गये ताते प्रोषितपतिका नायका सहोक्ति अलं-

कार करांकर है करर्गा करकै करगा द्वि गुरु कर चारि कलगुरांत पुनः करगा कर ऽऽ।।ऽऽऽ।।ऽ यह सुरवमा छन्द है ॥ ६२॥

तकैनइकबाला करैकज सभाला चहैपति सुज्येष्ठा विनोक्ति पिकनैष्ठा शृंगार रस भीनी यथापि विनहीनी। येनेक ... ई कुमारिललिताई ॥ ६३॥

एक की ओरतकत नहीं यद्यपि शृंगार सो भरी पै पतिभ्यावी उक्ति एक धिनाहीनी याते प्रथम बिनोक्तिपरि एकईर्षा नहीं है ताते कुमारि की बड़ाई याते दूसरी विनोक्ति बिना पीव चाहेकनेष्ठा नायका जाको गरे को माला कारि पति चाहत सो ज्येष्ठानायका जस माला जगन सगन गुरु।ऽ।।।ऽऽ कुमारललित छन्द ॥ ६३॥

मोतीतीके करगालौं मालती के दुःखान्या संभोग के चिन्ह पीके बोलीती बैना समासोक्ति पागी माधो पाये आजु केली सुभागी ॥ ६४॥

तिय के मोतिन के दाग काने तक कपोलन में नीकी भाँति बने है पति के अंग में आन तिया से भोग के चिन्ह पति में देखि दुःखित भई ताते अन्य संभोग दुःखिता नायका है माधव को पाय कें आजु केली सभागी भई ऐसे समास उक्ति केपागे बचन तिया बोली माधव केली बर्णन प्रस्तुत तामें अन्य नायका संभोगजा या अप्रस्तुत को जानताते समासोक्ति अलंकार मोती तीके करगा मगन है तगन करगा ऽऽऽऽऽ।ऽऽ।ऽऽ यह सालिनी छन्द है ॥ ६४॥

तनलजत उचरितबयन रति परि कार तरलनय न शशिमुख अमृत रस धरत मदन तपन पिय किहरत ६५

तन में लाज ताते वचन नहीं बोलि सकत अरु रतिमें परैनयन चंचल करत शृंगार रस रूपी अमृत धारणा अधर सो मदनकी ताप पति को हरि लेत याते मध्या रति चन्द्रमुखी ताप हरण में विशेषयति को सुखदाता यह विशेष्य आशयते परिकर अलंकार हैं ननपन तीनि नगन ।।।।।।।। यह तरलनयन छंद है ६६

संगलख हिं लै चल प्रवस प्रियासक पतिप्रिय प्रा-
रा हितनति सुवासक दुखफल नामहिं निजु लहिवा
सुर विरह बढ़ीत रु परिकर अंकुर ।।६६।। इति मध्या ॥

परदेश पियासी को मोको संगही लै चलिये प्रिया प्राणपति तेनारी तन सुवासिक है नाहीं बिन प्राण सी देह कुवासिक है ताते वियोग रूप अंकुर परतही विरह रूप तरु बढ़ि जायगो उर में ताको फल दुःख हमारे नामहीं में है अर्थात बाम कुटिल सदा दुःखपात्र है विशेष्य नामही में अभिप्राय ते परिकरांकुरालंकार प्रवस प्रेय-सी नायका निजुल नगन जगन लघु ।।।।।।।। लचामक छन्द दूनों पद ॥ ६६ ॥ इति मध्या ॥

अथ प्रौढ़ा । अंगन बिभूषि पद सोहद समूह रही सोहत सुमन धन जगत ललाम है भवाँर विलासगति सुखद सभीत आदि कारण निवास हेतु सुन्दर सुठास है राफाल सरज रूप बासन्वीच बास नाम लगति सुचाह वजनाथ बहु धाम है सोगी औ वियोगी रोगी भोगी यो-गी लिय लख्यआवति की बामबाम धाम काम राम है ६७

अथ प्रौढ़ा । पांच अर्थ की श्लेषालंकार सोभ कहत बाम कहे शिव है वियोगी कहत नाम कहे बनिता है रोगी कहत धाम है भोगी कहत काम है योगी कहत राम है प्रथम शिव पक्ष अंगमें नाग विभूषित पद शोभा समूह है रही सुमन पवित्र मनुष्य जिन के मन मोहत जगत के भूषण हैं भय महादेव रति के विलास॰

काम ताके अरि संभीत रति के सुखदाता जग आदि कारण-
निवास हेतु सुन्दर सुधाम कैलास है रज धूरि सहित रूप सब फ-
ल दायक वाम सुन्दर हृदय के बीच वास संपति नाम सहित ध-
नाथ राम नाम तिनही की चाह आठ याम है इति योगी कहत
शिव है १ पुनः वनितापक्षे विभूषित पद सो आंगन में समूह शो-
भा है रही सुन्दर मन मोहन ताते भना त्रय की भूषण है जासो
भवँरी घूमत ता संग रति विलास की सुखदाता आदि रति में-
संभीत जग उत्पति की कारण जास में हेतु सुन्दर है घर जिनके
सरज रुधिर सहित रूप सफल वाम वनिता के बीच उदर में गर्भ
वास संपति सहित पति सो भामिनी नाम आठों याम चाहत इति
बियोगी कहत वनिता है नायक की मन प्रफुलित लखावति-
प्रौढ़ा नायका है २ धामपक्षे सुन्दर आंगन विभूषित रूपाटन
सो समूह शोभा है रही सुन्दर भवन ते भय शोभित जगत में भू-
षण है भव अरिकाम को विलास रति करिबे को सुखद सहित
भीति शोभित जग में आदि कारण है निवास के हेतु सुन्दर धाम
है सरज सहित मृत्तिका रूप सफल है वास वनिता सो बीच क-
म है संपति नाम फलाने को धाम है गृह चाह आठो याम है इ-
ति रोगी कहत की धाम है ३ कामपक्षे वसन भूषित संग रहित
समूह शोभा की जग में प्रशंसा सुमन को धनुष शोभित जगको
भूषण है भव को अरिकाम आदि रति को विलास में पति कोमु
खनारी को भय शोक को दाता जग को कारण है निवास हेतु सु-
न्दर धाम देखि कामोद्दीपन होत सरज रुधिर सहित नाको रूप-
सफल है वाम के उर बीच वास गर्भ पूरण ताके नाम सो चाह स-
हित पति नारिन को रहत आठ हमारे जुग होइ रति भोगी कह-
त काम है ४ रामपक्षे विनायट भूषित संग में समूह शोभा है रहे
सुन्दर मन जिनको शोभित सन्तजन जिनसे धनुगर्व रामही है
जगत के भूषण हैं भवसागर के ... ... निवासंत भक्ति

करते जे सभीत शरण आवत तिनके सुखदाता लोकन के आदि कारण हैं निवास हेतु गोलोक आदि सुन्दर ठाम है सरज सहित प्राक्रम सब सफल है वाम शिव के उर बीच वास है ऐसे जगत के पति रघुनाथ जी सहित तिनके नाम की चाह बैजनाथ को आठहू याम है इति जोगीजन कहत की या कवित्त में रघुनाथ जी को वर्णन है ॥ ६७ ॥

चंचलांग चातुरी सरोज वक्र भावतंस भासमै सुहाग धन्य और कोकरै प्रशंस प्रस्तुतात्र माति प्रौढ़ता रु समभ्र पाइ याहि हेतु नाह हाथ चाहती लगाइ पाइ १ पाव मांगलों शिंगार चित्त विभ्र मैन थाह प्रीति वेलि का बढ़ाव प्रस्तुतांकुरोर नाह सोन आनती वहै कटाक्ष चंचला निहारि कंज मंजु छाड़ि भौर मोद कौन कटकारि ६८

अंग अंग चंचल चातुरी को भरो मुख कमल की शोभा उत्तम भाग्य मयी सुहाग धन्य है और की प्रशंसा को करै इत्यादि कारज ते नायका कारण की प्रशंसा ताते प्रस्तुत प्रशंसालंकार त्रसमत्र प्रौढ़ताई पाई है ता हेतु नाह के हाथ पाँव लगायो चाहती है इत्यादि कारण ते पति स्वाधीनत्व की प्रशंसा ताते अप्रस्तुत प्रशंसालंकार मन वचन पति को आपनी आधीन कि है ताते माकमाति प्रौढ़ा नायका है १ पायते मांगतक शिंगार में नाह को चित्त विशेष भ्रमा फिरत थाह नहीं पावत तेरी चितवनि अंकुर परि नाह के उर में प्रीति वेली बढ़ाइ दई जब ते चंचल कटाक्ष निहारे तब ते नाह आन तिया को नहीं चाहते हैं मनोहर कमल त्यागि भँवर को कंटकारि में कौन मोद है कमल कंटकारि अवर्णित नायका अन्यतिया प्रस्तुतता में नायका की शोभा अन्यतिया की कुरूपता प्रस्तावनि करो ताते प्रस्तुतांकुरालंकार नायका के तन की द्युति दूतिका है नायक को गहि लियो याते विव्विविभ्रमा अन्यसंभोगा

है गंलो सिंगार गुरु लघु क्रमंत मोरह ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ यह चंच- ला छन्द है ॥ ६८ ॥

शब्द भहाराति प्रीति प्रजोक्ति त्व नील गाहा रैन म- शीत लगी मुह खोलत भोर कहा कस्य भरी थिर होत- न मो मन धीर चहो चैल ढके इमि पोदि पती उर लागि रहो ॥ ६९ ॥

नील गाई चरि जाती है ता हेतु यह शब्द हार में होती है- अति प्रीति ते खेत रखावते हैं उक्ति प्रजा लोगन की है रैन में मुख खोलत शीत लागी अब ही भोर कहा है इति रचना सो बात कहत ताते प्रथम पर्यायोक्त्यालंकार शीत कंमो भरी दृढ़ थि- र नहीं होत जो धीरज चहो मेरे मन को तो मैं पती बमन ओढ़े या- की भाँति पोढ़े उर में लागि रहो इति बहाने ते कार्य साधिबो तहं दूसरी पर्यायोक्त्यालंकार भोर हो बो नहीं चाहत ताते रतिभाव शब्द भाहार पाँच भगन एक गुरु ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ यह शीलगहा छन्द है ॥ ६९ ॥

शयन चहि पी सदा कहू [illegible] दा निदत सुत तो जनी सुतत लघु रोजनी नवल तन पी वहै नवल कि- नती चहै कमल धनि पील है सकल निशि लौ गहै व- स फुलन व्याजि ते भ्रमर सुत निंदिते ॥ ७० ॥

जा रस की चाह मोई सुख दे पी के संग सदा शयन करन चाहती है ताते संमस्त रस कोविदा तो को का कहो पी के आलुगान को न- हीं कान करती सोवत नींद में ता को जानि पी के संग लघु उमग ज- न वाली शयन करत याते निन्दा व्याजस्तुति अलंकार नवीन मन भा- व है तो क्यों न नवीनी तिया की चाह करे यामें स्तुति व्याज निन्दा ॥ कमल धन्य है जो पति पाइ रात्रो भरि ग्रहण करत में कमल की स्तुति से नायका की स्तुति ताते स्तुति व्याजस्तुति नवीन छन्दमें

स्त्रवत तहाँई बास लेत यामें भ्रमर की निन्दा ते नायक की निन्दा
ताते निन्दाव्याज निन्दा निशि लोगा नगन सगन लघुगुरु ॥॥।ऽ।ऽ
यह कमल छन्द ॥ ७० ॥

मैनाभावो प्यारे हाला हीनाक्षेपा विद्युन्माला भा-
लफूलाटेसू रूरा किम्बा है तीको सिंदूरा प्रौढ़ा
बैना बोली धीरा जैयो भावै ताके तीरा पै एका मालो
को विरुद्धा याको गौरा कैनै धिद्धा ॥ ७१ ॥

हे प्यारे तुम्हारे भाल में नहीं भावत हैं बिजुरुन की माल
उर पर झलकत सो नहीं रूपा है यामें निषेधा भास आक्षेप अलं-
कार तुम्हारे भाल में टेसू फूला है अथवा परतिया को सिन्दूर है
बात कहि फेर ताते विवेकाच्छेयालंकार है प्रौढ़ानायका धीरा
बचन बोली की जाके तीर भावे ताके तीर जाउ पै ये कामलोक
रीति ते उचित है याको गुरुजन निषिद्ध करते हैं या विधि सांचा
त कहि निषिद्ध जुनायो याते गोपनाक्षेपालंकार छेपा विद्युन्मा-
ला कांपे दुइ माला आठगुरु ऽऽऽऽऽऽऽऽ यह विद्युन्माला छन्द ७१

बिन रंग रँगे गिनैन तववाधिप विमृदुबैन वरजो
तऊ उतजात गतिकारा बोलत चात रवि भावनाह
मुखेन्दु छत सज्ज लोमरसेन्दु हरिजाउ ।।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ रक
हि प्रौढ़ बाल अधीर ॥ ७२ ॥

बिना रंग तुम्हारे नेत्र रँगि गये यामें प्रथम बिभावना बिना का-
रणे कारण भयो तुम्हारे कोमल बचन बज्र से हमें बाधा करें इहाँ
बैन अवरोधता ते कार्य्य पूरता भयो ताते दूजो बिभावना तुमको वर-
जित ताहू पर उहाँ जात हो इहाँ नायका प्रतिबन्धकता को वर्णि-
के बचन बाधा करि अन्य तिया रिग आवो कार्य्य भयो ताते तीसर
बिभावना अलंकार हरिगा भी बचन चातक अनुकूल से इहाँ

अकारण वस्तु ते कारज भयो ताते चतुर्थ विभावना ताइको मु-
खचंद रवि भावतापकारक भयो इहाँ कारण ते काकार्य्य विरुद्ध भ-
योताते पञ्चम विभावना नायका के भूषण गड़ि गये ताके उत-
रोज कपोलन परते हमें मारने को तोमर साजने हैं इहां कार्य्य
सो कारण रूप भयो ताते षष्ठम विभावना लंकार मज्ञ सगन
है जगन ॥ऽ।ऽ॥ऽ। यह तोमरछन्द कपोल छदभाम्यासे लगे हमारे
उर में पीर है ताते इहाँ ते टरिआउ ऐसे कठोर वचन कहत ताते-
प्रौढ़ा अधीरा ॥७२॥

माला सुन्दरि अंगो माला सुन्दरि नांगो हो शोभा
सप्रबोधा हो शोभा सविरोधा धीरा धीरहि देखा ।
धोये सामद लेखा ॥७३॥

विन गुण माला सुन्दरि नहीं है कोऊ सुन्दरी गरे में माला
भई है ताकी शोभा सो प्रबोधित हो मेरी शोभा सो विरोधित-
हो धीरजकरि सन्तोष करे अधीर है ताड़न करे तुम्हारो लेखा
यथा गज को धोइये फेरि धूरि लपेट तो इहाँ विरोध आदर मात
अरु है नहीं ताते विरोधा भास अलंकार है मन में प्रीति मुख
ते कठोर ताते धीरा धीरा नायका मालासुन मगन लघु पंचक-
लादि लघु ऽऽऽ॥ऽऽ यह मद लेखा छन्द है ॥७३॥

गेल चारि रैन धारि कै विशेष उक्ति हारि प्रौढ़ ।
चाप भौंह तान छूट तोन मान बान ॥७४॥

चारि घरी राति बीति गई विशेष उक्ति करि मनावत में
हारि गई प्रौढ़ चाप सो भौंह ताने मान बाण नहीं छूट इहाँ-
कारण सो कार्य्य नहीं भयो याते विशेषोक्ति अलंकार मानि
नी प्रौढ़ा गेल चारि ऽ।ऽ। यह धारी छंद है ॥७४॥

आसंभवा सेजे पीकी हेमा चारी दीढ़ा कोपी का।

प्रौढ़ाक्रीड़ा राचारी पी अन्ये संभोगे जाने दुःखै भारी
को जानै या मूर्खा को के विद्याधारी ॥ ७५ ॥

पीकी मेज विषे असम्भव भयाहै जो होनहार नहीं रहै सो रेखा-
तवांग की पीक परी है ताते काहू चातुरि संग क्रीड़ा रचो गयो ताते
पीव आन संग भोग करे यह जानि भारी दुःख भयो ताते अन्य-
संभोग दुःखिता प्रौढ़ानायका कहत की को जानत रहे कि यह
मूर्खादासी को कसार विद्याधारता करी इहाँ मूर्खा मेंकोक-
विद्या असम्भव सो सिद्धिभयोताते असंभावना लंकार भाचारी भगान
चारि ऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽ यह विद्याधारी छन्द है ॥ ७५ ॥

निशि यश य लागि मालधर भायुनो आज से नय-
नन सिंदूर लाग वदनांजनो भाज से तुम उतजगे दृगा
नमम लालिमा मंडिता पउद्ध असंगता यहि हमै काहे
खंडिता ॥ ७६ ॥

बिन गुग को माला उरि में धारण करे यश के हेतु तासें-
अयश भयो भाल मुख में कज्जल लगी तैसेही नेत्र में सिंदूर
की शोभा है जागे रहो राती को तुम अरु हमारे नेत्रन में लाली
बिराजमान है आपनो धाम तजि असंगति तियन की तुमपौह-
त भाव खंडित है हमारे ढिग ते तुम जात खंडिता तब हम को
कहत यामें और कारण ते और कार्य भयो ताते प्रथम असंगति
मुन्न में पान ते लाली चाही तहाँ का जरसो श्याम नेत्र अञ्जन
चाहिये तहाँ सिंदूर ते लाली यहाँ और ठौर के कार्य और ठौरता-
ते दूसरी असंगति यश हेतु माला धारे तासो विरुद्ध कार्य्य अय-
श भयो याते तीसरी असंगति अलंकार निशि यशाय लागि
ॱॱॱॱऽॱऽॱॱॱऽॱऽॱऽॱऽ यह मालाधर छन्द है ॥ ७६ ॥

बीनन्लौं विय भरैं नरी लगै पौढ़ि शोचहि स्थोद्ध

तामगै तौ कहा कहु प्रवास पी अहे श्यामहू बिरह देहपीत है ॥७७॥

नाह के चलत में ऊँचा रंग मरा में हृगि तक देखा कि ये ताकी सुधि करि पीड़ी सोच करत ताते शीतलो रैन विषम लागत यों उत्तम उद्दिश्यते विषम फल प्राप्ति ताते तीसरो विषम अलंकार कहा तिया कोमल कहा प्रवास में पति ताकी विरह कठोर जहां अनमिल साथ ते प्रथम विषम अलंकार विरह श्याम ते देहपीत भई इहाँ और रंग कारण ते और रंग कार्य भयो ताते दूसरो विषमालंकार रैनवी लगे रगन नगन रगन लघुगुरु ऽ।ऽ।।।ऽ।ऽ।ऽ रथोद्धता छन्द है ॥७७॥

तनदुहर सम पटधरी जननिन लगतु गुणा गरी पति बश करि बल गुणा का गरव कसन मुद मनका ॥ ७८ ॥

तन की अनुहारि सम जानि पट धारण किहे इहाँ यथा योग्य संग ताते प्रथम समालंकार तेरी माता गुण गरिता नग रहे तोहू गुणागरि भई इहाँ कारण में कार्य्य को अंग ताते दूसरो समालंकार गुणबल ते पति बश किहे इहाँ क्रमक्रिा कार्य्य भयो याते तीसरो समालंकार गुण ते मन को मोद प्राप्त भयो तौ कसन गुण को गरव होइ याते गुण गर्विता प्रौढ़ा नायका ननिन लगते नगन लघु गुरु ।।।।।।।।।। ऽ यह [illegible] छन्द है ॥ ७९ ॥

मान तजी मै मान लही है भागगती पी हंस गही है प्रेम सगर्वाही समदीने केलि विचित्रे आन दभीने ॥७९॥

अभिमान तजी ताते पति सन मान पाई इहाँ फल विपरीत कर्म

इच्छा ताते निश्चित्रालंकार है आगम वशा अति हँसकरि पाई प्रेमस-
नित मेरे गरबाही दिये आनन्द भरे विचित्र केलि करते हैं याते
प्रेम गर्विता आयावरा सरान हियुत ।।।ऽऽ यह हंस छंद रोहरा
पद है ॥ ७९ ॥

**रूपतन अधिकाई नागलिनय समाई तुंगरज-
गरवाही शांतकिन्नरन अघाही ॥ ८० ॥**

मेरे तन में रूप की अधिकाई है जो गलिन में नहीं अँवाग ग-
ली अधार ते रूप आधेय अधिकताते प्रथम अधिका लंकार उ-
न्नत उरोज गरवा है आदि की शोभा मेरीतकि नर नहीं अघाते
हैं इहाँ आधेयते आधार अधिकताते दूसरी अधिका लंकारस्व-
प गर्विता प्रौढ़ा नायका गलिनय गुरु लघु नगन यगन।।।।ऽऽ
यह तुंग छन्द ॥ ८० ॥

**आवसे पीय भलो हिंमोहवश्यो नाहितवशोगामो
भो अल्प सो भातनो आंगुरी राजता देखिये नाथमो
सोछला बीस है आइमोछाथ मो ॥ ८१ ॥**

हे पीव मेरो मन विशेषि मोह वश भयो ताते प्रवास को मो
को मंगली किये नाहीं तुम्हारे शोक में मेरो तन अत्यन्त अल्प
भयो है नाथ जो छल्ला मेरी आंगुरी में राजत रहा सोई छल्ला
हाथ में सील है की आइ गयो इहाँ छल्ला अधेय है आंगुरीआ-
धार अल्पता है ते अल्प दूसरी आधार भुजा भयो ताते अल्पा-
लंकार है प्रवत्स्यत्पतिका दिखावे किया ताते प्रावस प्रेयसी नायका
प्रौढ़ा है भगन गुरु रगन ऽ।।ऽ।ऽ यह बिमोहा छन्द कोक जोहा कहूं
सोरहा पद ॥ ८१ ॥

फूलीमांगामनय दीलो प्यारे आयो तन मन

हीसो भुम्याकाशो घर वन शोयां वामाताके पियहि विशेषा ॥ ८२ ॥

वामांग फरको ताते पीव को आगम मानि लियो इहाँ थोरे आरम्भ ते बड़े पदार्थ की प्राप्ती ताते तीसरी विशेषालंकार तन मन से हिये में आयो है इहाँ बिना आधार की आधेय ताते प्रथम विशेषालंकार भूमि आकाश घर बनादि सर्वत्र वामा को पतिही देखात एक बात बहुत ठौर बरनि ते दूसरी विशेषालंकार आगत पतिका प्रौढ़ा नायका ससर्न य गुरु सगन नगन यगन ऽऽऽ ।।।।ऽऽ यह मत्ता छन्द है ॥ ८२ ॥

गीरा मालातीजेठीकानेठाढ़ी तप्रौढ़ाढूंढोतव्याघातेकाढ़ी मीठीमीठीवातेके एकेटारी पीसोई पीछे भोगे एकेनारी ॥ ८३ ॥

हे तिया जा ठेकाने तुम ठाढ़ी भई रही ता ठेकाने हमारो माला गिरि गयो तुम चतुर हो ढूँढ़ि लावो जो पीव सुखद सदा समीप राखनो चाही सोई दुःखद है बिलग करत जो सुखद वस्तु सोई दुःखद भयो याते प्रथम व्याघातालंकार मीठी मीठी वातें करिके एक तिया को टारिदई पीछे एक संभोग कर्यो याते ज्येष्ठाकनेष्ठा नायका सपत्नि विरोधीते दूसरी को काज इहाँ भयो याते दूसरी व्याघात गीरा माला गेरा गुरु ऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽ यह मात्ती छन्द ॥ ८३ ॥

स्वाधीने पीतिय जियमा वामा भासै पियहियमा अन्योन्याही हित पइता धन्या पीत धनि वक्ता ॥ ८४ ॥

तिय के जिय ते पीव स्वाधीन है तैसही पीव के हिय में वामा भासत है हे तिया तू धन्य तेरा पति धन्य जो परस्पर हितकार ।

ताही में है याते अन्योन्यालंकार स्वाधीनपतिका नायका सा भासै सगन भगन सगन ऽऽऽऽ।।।।ऽ यह पइता छन्द है ॥ ८४ ॥

विचारतेजगैक्षमा क्षमालकारनोत्तमा करोत्तमा सुनागरी जसादियी हितैभरी ॥ ८५ ॥

उर में बिचार भयो ताते क्षमा जागी क्षमा लेकै उत्तम कारण भयो उत्तम कर्मन ते उत्तमा नागरी भई चातुरी ते पीव को हितकारता उर में भरो तातें जसादि की प्रशंसा इहाँ कारण कार्य्य की परम्परा ताते कारणमाला कोऊ गुंफालंकार कहत जगो जगन गुरु ।ऽ।ऽ यह नागरी छन्द दोहरो मद है ॥ ८५ ॥

बिननग गुननकी यक अवलिवनी पियदृगनलहे दृगमनहिकहे मन गरववती सगरवसुमती सुमति कुमतिसा तिय गति मधिसा ॥ ८६ ॥

बिना गुनन गन की एक अवली बनी उर पै ता सहित पीको दृगन देखे दृग मन सो कहे मन गरव बश भयो गरव सुमति में मिली सुमति कुमति में मिली कुमति तें नायका मध्यमा भई इहाँ मुक्त पद ग्रहण ताते येकावली अलंकार कुमति बश मध्यमा नायका प्रौढ़ा ननग है नगन गुरु ।।।।।ऽ यह वसुमती छन्द है ८६॥

मोतीनै सो भासै बासै बासै सो ताजी सेजा भासै सेजै भासै भा रूपी माला माला दीयो भासै पौ बाला ॥ ८७ ॥

मोतिन सो बास स्थान सोभित बास स्थान ते सेज सोभित सेज ते रूप माला शोभा से जो बिछाये है ते सोभित रूप सम्पत्ति के गनते और अरु बाला सोभायमान इहाँ मुक्त पद ग्रहण ते सेजादि को भान क्रिया एकही तें दीपक होत मिलि माला दीपक अलंकार वासक सज्या प्रौढ़ा नायका मोती में मगन तीनि

SSSSSSSSS रूप माला छन्द है ॥ ८७ ॥

तन सकल सार पतित नाहिं प्यार करि कलह तासु लइ सुकर हासु ॥ ८८ ॥

संसार में तन सार ताको प्राण पतिसार तापति सों कलह करि अपने हाथ हँसी कराई याते कलहन्तरिता प्रौढ़ा नायका सारांश ग्रहण ते सार अलंकार न सकल नगन सगन लघु ।।।।।ऽ। यह करहंस छन्द है ॥ ८८ ॥

शशिनय सारंग करी सित अभिसारै निसरी मग रात पी सौति सुखे सुखद यथा संख्य दुखे ॥१॥

भूषण वसन सों शशिन ऐसा रंग अंग में करी सेत राति में अभिसार को निसरी मग जात में सुख देखि पीको सुखद सौति को दुखद इहाँ क्रम ते वस्तु बखान ताते यथा संख्यालंकार चन्द्राभिसारिका प्रौढ़ा नायका नयसा नगन यगन सगन ।।।।ऽऽ।।ऽ यह सारंग छन्द में तीनिउँ अभिसारिका हैं ॥ १ ॥

असित भिसारै रजनी तमनय सारंग बनी चलमन ते पाद बसी कमलस्य पर्याय शशी ॥ २ ॥

अँधेरी राति में अभिसारको चली भूषण वसन सों तम। ऐसा रंग बनि मन की चंचलता पाद में आनि बसी ताते शीघ्र चली इहाँ चंचलता एक की मन पदादि अनेक आश्रे ताते प्रथम पर्याय कमल से सुखचन्द्र से भयो ताते प्रकाशित भयो इहाँ कमल चन्द्रमा अनेक वस्तु को सुख एकही आश्रै ताते दूसरी पर्याय कृष्णाभिसारिका छन्द सारंग पूर्वही की ॥ २ ॥

दिन अभिसारंग करी परिश्रतही माहि धरी ।

चलितन पीको दैहौं तनमन सारो लैहौं ३॥ ८९ ॥

दिन को अभिसार अंग में करिके हृदय में यह व्रत धरी कि चलि कै चलिके तन पीव को दैके तनमन सर्वस पीको लेउँगी इहां थोरा देवकृत को लेनो याते परव्रत अलंकार दिवाभिसारिका छन्द सारंग पूर्वही को ३॥ ८९॥

अशनन डासक नजल सुवासक अगतपियं-कहि सुखपरिसंख्यहि ॥ ९० ॥

भोजन जल वास स्थान सुन्दरी सेज में सुख नहीं आये पति के अंक में सुख भयो याते आगत पतिका प्रौढ़ा नायका एक ठेकाने बरजि दूसरे ठौर सुख बरखान ताते परिसंख्यालंकार नजल नगन जगन लघु ।।।।ऽ।। यह सुवासक छन्द है ॥ ९० ॥

रमौधाम म्हारी कि आसंख्य नारी यहैना धमा-री ति...ते कारी ॥ ९१ ॥

या हमारे धाम में रमौ या सखह तियन में रमौ ये दोऊ न बनि हैं ऐसे बैन कहि पति को बिकल करत ताते अधमा प्रौढ़ा नायका इन सम बलको बिरोध ताते बिकल्पालंकार ये है य-गन है ।ऽऽ।ऽऽ यह संखनारी छन्द है ॥ ९१ ॥

रचिरति प्रौढ़ा कटिपग ढ्योढ़ा पतिनय मन्सा मिलि चतुरंसा जघनडुकुच्चे अधरस सुच्चे उरल-पटावे सुख उपजावे ॥ ९२ ॥

पति की कटि पीछे आपने पग ढ्योढ़ाय पति की मन्सा जानि चारहु कंधा मिलाय या भांति प्रौढ़ा रति रची इहां एक साथ बहुत भाव उपजे ताते प्रथम समुच्चै जंघन करिके कुचन करि-के अधरन करिके उर में लपटाय के इहां बहुते अंगन ते एक-

सुख उपजाइबो ताते दूसरी समुच्चे अलंकार नगण नगण यगण ।।।।।ऽऽ चतुरंसा छन्द है ॥ ९२ ॥

दिखाय उरोज जु मालतिकादि सिखै शुकि झूमि रमै रति वादि अनन्द समूह छकी मद गात सकारक दीपपती ह्रसकात ॥ ९३ ॥

माला कादि उरोजन को दिखाइ मदन मद सों गात भरो समूह आनन्द सों छकी ताते पति को शिक्षा दै दै झुकि झूमि झूमि रति में पढ़ी रमत आशु परिश्रम ज्यादा करत सकार होवे की शंका दीप की बुझि गई ते करत ताते आनन्द समूह नायका अनेक क्रिया एक में ताते कारक दीपक अलंकार जगण है जगण ।ऽ।।ऽ। यह मालतिका छन्द दोहरो पद ॥ ९३ ॥

राती संमोहै गैमागैं जोहै [illegible] साधी उत्कंठा जाही दूती [illegible] हारे पी आयो ॥ ९४ ॥

राह निहारत समूह राती [illegible] तब [illegible] ताते पीव की सूरति में समाति दिए [illegible] प्रौढ़ा नायका ताही समय दूती [illegible] भयो पीव द्वारे पै आयो [illegible] ताते समाधि अलंकार गो मगण गुरु भगन [illegible] ऽऽऽऽ [illegible] छन्द ॥ ९४ ॥

सेजे निहारी सूनी राती सो [illegible] ती सो यो बिन लज्जा निर्लज्ज [illegible] गो का हती की ॥ ९५ ॥

सजिके गई तहाँ सूनी सेज [illegible]

वृथा बोलाये जो पी की निर्लज्जता गुरुजनन में है तो मेरी तिया की कौन बात है याते काव्यर्थापत्यालंकार संकेत में गई पीव नहीं मिलो तब उदास भई याते विप्रलब्धा प्रौढ़ा नायका है गो रागो गुरु रगान गुरु ऽऽ।ऽऽ यह हारी छंद दोहगो पर है ॥ ६५ ॥

मनजन गोपति बिनती शिवकवि लिंगहि लिखती पवनहि अमृत गति का अहि तम प्रोषित पतिका ॥ ६६ ॥ इतिस्वकीया ॥

पीव बिनतिया को मनोज नहीं गयो ताके हेतु विशोये कै शिव के लिंग को लिखत पवन के हेतु अहि लिखत चन्द्रमा के हेतु तम कहे राहु लिखत ताते प्रोषित पतिका नायकाअलि सों वृथा को सामर्थ्य ताते काव्य लिंग अलंकार नजन गोनगन जगन नगन गुरु ।।।।ऽ।।।।ऽ यह अमृत गति छन्द है ॥ ६६ ॥

अथ परकीया जसा जस य लाग नो न डर जाहि पृथ्वी विषे सुमित्र नित प्रत्यनी कहि चहे छले को सिषे पती वरजिता सुपेन चलती कछू रिसे सुते परकिया जु दाड़ लखि अंश है या तिसे ॥ ६७ ॥

अथ परकीया जाको यश अयश लागिवे को डर भूमि पै नहीं है अनेक छल सिखे नित प्रति नवीन सुन्दर मित्रकी चाह राखत ताते पति बरजत तापे रिस नहीं चलत तब सुत पर दाड़ करत की याहू वाही को अंश है ताते प्रत्यनीकालंकार परकीया नायका जसाजस य लागा जगन सः जः सः यः लघु गुरु ।ऽ।।।ऽ।ऽ।।।ऽ।ऽऽ।ऽ पृथ्वी छन्द ॥ ६७ ॥

मैं नौ या सं गोदिब अर्थान्तर न्यासे नेकोमाया नाहिं पुरे है किमि श्रांसे केदाया मोहेरि हरेंगे दुख-

जीको सामरथ्योंके कानहरी से तुलसी को ॥ ६८ ॥

मैंतो याके संग जड़ाहूँ चुकी ये मेरे आपने बीच ज्याही अन्तर स्थापित करते हैं मेरे सकल माया नहीं मेरी आशाकेम पूरण होइगी आपही दाया करि हरि मेरे जीको दुःख हरि लेइँगे हरि तुलसी को माय पैरासवत सामर्थ्य का नहीं के सकल विशेष की क्रिया देखाय सामान्य को दृढ़ करी याते अर्थान्तरन्यासालंकार चोरी सों पर पुरुष सों प्रीति करा चाहत ताते जड़ा परकीया नायका मैंतो या संगो मगन तगन यगन सगन गुरु ऽऽऽऽऽ॥ऽऽ॥ऽऽ यह माया छन्द है ॥६८॥

छबि कासर मनु नित ढरत हरिपद मन कारमवरत पति सहित सति तन दहत तरुणि निज पति गवरिसत ॥ ६९ ॥

उनकी छबिके सागर में मन दरकि जात ताते मन कर्म बचन ते हरि पद को बिवाह चाहत हो भाव पति के संगमतो तन दाह करि देती है ताते सामान्य तरुणी अपनेही पति सों रति चाहत यथा गवरि पतिव्रत ते पति के अर्द्धांग में रहन प्रथम विशेष फिरि सामान्य फिरि विशेष ताते बिकस्वरालंकार बिवाहो चाहत ताते अनूढ़ा नायका निनि हूनगन॥॥॥ यह रसनक छन्द दोहरो पर ॥ ६९ ॥

प्रौढ़ोक्तितीनारमन्यानभावैजु मेरे गुरुण मीत गर्व।हि।हैजु ॥ १०० ॥

तीकी चातुरता नहीं है जोर मन कार ताके स्यान का जाह मेरे गुरान ते मिष्ट सखा गरबाही दिये रहत याते गुरुण गर्बिता परकीया अहेतु ते उत्कर्ष ताते प्रौढ़ोक्ति अलंकारकी मीहूनगन ऽऽ।ऽऽ। मंगसन छन्द दोहरा पर ॥ १०० ॥

संभावनाहीं गर्वा हौ सीया रूपा काही जोपी
रागै सी तो पागै तौ लागै सो साही ॥ १०१ ॥

गरवाइ सीयादि मेरे रूप समिता भाव को ओर तिया नहीं है जो पतिउ मैं रागै सीतहू को पागै तौ सी में समिता लागै याते सम्भावना लंकार रूप गर्विता परकीया गे सोभा गुरु है मगन ऽऽऽऽऽऽ यह सीरख रूपक छन्द दोहरा यद ॥ १०१ ॥

वाको मिथ्या ध्यावे या सीखा मो मानो पानी
ज्वागी लागै परती त्यागै मानो ॥ १०२ ॥

मेरी सिखावन मानौ वाको वृथा ध्यावत हौ जो पानीमें आगि लागै तौ परतिया मान त्यागै याते मानिनी परकीया मिथ्या कल्पना ताते मिथ्या ध्यावसित अलंकार सोभा है मगन ऽऽऽऽऽऽ यह सिखा छन्द ॥ १०२ ॥

मीतहि प्रेमी गरवा मानव क्रीड़ा जियको लालि-
त या भांति लगै भूलि न चाहौ पियको ॥ १०३ ॥

प्रेमी मीत को गरु मानत हौ ताको क्रीड़ा जीव को यहि भांति ललित लागत जैसा भूलिहू के पति को नहीं चाहतहो याते प्रेम गर्विता परकीया प्रतिबिम्बवत कहनूति ताते ललित अलंकार भांति लगै मगन तगन लघु गुरु ऽ।।ऽऽ।।ऽ मानव क्रीड़ा छन्द ॥ १०३ ॥

जोचाहौ मंगल नय तिया आजु मायो तिहारो चा
सो जाही समय तबही आनु घरते निहारो जैसो चाह्यो
मिलन तबही मीत आयो दुवारे गो मंदाक्रांति प्रहरख
मातायपत्यागतार ॥ १०४ ॥

हे तिया जा मंगलन को चाहत रही सो आजु तिहारो म

भायो भयो हियाँ बिना यतन वाञ्छित भयो ताते प्रथम प्रहर्षणाल-
लंकार समय को चाहना करतेही भानु अस्त भये इहाँ वाञ्छित
ते अधकी फल ताते दूसरी प्रहर्षणा मिलन हेतु जावो चाह्यौ
ता समय मीत द्वार पै आइ गयो इहाँ यतन करतेही लाभता
ते तीसर प्रहर्षणा उपपति के आये कांति की मन्दता जाती भयी
द्वरबहीय में नहीं अंवात ताते परकिया आगत पतिका मंग-
लनय तिया मगन गुरु लघु नगन यगन तीनि ऽऽऽ।।।।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ
यह मंदा क्रान्ता छन्द है ॥ २०४ ॥

ह्री सदा पंचमें दूजे चातुरी लघु मत्तमो मो विषादा-
दि बोले क्यों भोगान्योऽस्तु पञ्चत्तमो ॥ २०५ ॥

पञ्चम में मोको सदा लज्जा दूसरे चातुरी अरु मत्तमें लघुता
मो को यह विषाद है कि आदि सोको क्यों बुलाये अरु अन्य
संगभोग किये वोठपै क्षत तुम्हारे देखात है याते परकीया अन्यसं-
भोगदुःखिता इच्छामें विरोधताते विषादालंकार पंचवोंलघु चारिउचर-
णमेंदूजो चोयोचरण में सतवोंलघु आठवरणयह अनुष्टुप छन्द है २०५

चलि मिलन उल्लासो के मीतना मिलि ते रागी-
छहरि निशि मारे शीलागी हिये मुदंगो रखसी जुपति
संग सोवे सुखे कूर हो फल प्रीति के तिमिर घनवर्धी-
लब्धा होत मोकह रीति के ॥ २०६ ॥

आनन्द सों मिलन हेतु चली तहाँ मित्र नहीं मिलो तब च-
न्द्रमा की चाँदनी छहरी राति सो मारन सी लागि ताते स्वयंते
मोद जात रहा चाँदनी गुण ते दोष ते प्रथमोल्लासालंकार गो-
पति संग सोवती ती सुखी इहाँ पति संग गुण ते गुन्योहो बो
गुण दूसरी उल्लास में कूर हो प्रीति के फल पाई परपति मो-
प्रीति रोषतामें दुःख होवो दूसरो दोष ताते तीसरी उल्लासमकि

अँधियारी अब हमको हमारो पति कैसे मिलै उजियारे में कैसे जाऊँ इहां तम दोष ते गुण चतुर्थोल्लासालंकार विप्रलब्धा परकिया निशि मारै मी लागी नः मः सः रः सः लः गुः ॥॥ऽऽऽऽऽ।ऽ।ऽ।ऽ। हरिगीछन्द ॥ १०६ ॥

प्रवसतोपपती सुनि सज्ञा पी सुखदो धिक मानि अवज्ञा तापति भा करना मग ठाढ़ी मूँदतही विरहानल बाढ़ी ॥ १०७ ॥

उपपति प्रवास जानो सुनि जानि के सुखद पीय को धिक मानि ताकी अवज्ञा करि घर ते चली आई इहां पीव सुखगुण को गुण नहीं मानी ताते प्रथम अवज्ञालंकार राह में ठाढ़ि निहारत रवि की तापकी तपनि नहीं मानत रवि ताप दोष को दोष नहीं मानत ताते दूसरी अवज्ञालंकार उरको सुख मूँदिगयो विरहानल बाढ़ी याते प्रवस्यति पतिका परकिया तिभा करना तीनि भगन द्वै गुरु ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽऽ यह दोधक छन्द ॥ १०७ ॥

निशि खंडित भोर नुज्ञा घरको चतुरी संग तोटकलाउबको अस जो गति मोहिं बियोग भलो मनध्यान सनेह कियो असलो ॥ १०८ ॥

राति अलग रह भोर मेरे घरको आये इहां बातैं ना करौ यह चतुरी है ताकी सो तुम रूक लगाइ कै बको जाइ जो असगति तौ हमको बियोगही भलो तुम्हारो ध्यान लगाय कियो सनेह सो निरमल बनाइकै बियोग दोष को गुण माने याते अनुज्ञालंकार प्रभात मित्र आयो याते खंडिता परकिया चतुरी सवाचारि सगन ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ यह तोटकछन्द ॥ १०८ ॥

आगे स्वाधीन संते कोमिल बाले सारंगी सोई

जंजाला ह्वाला तेरे पंचो में वेढंगी जे देहैं कामे जारे मारे काहू सेना हांसी धामे में बेठी श्रेंठी बातें भाखे तें स्वासी ॥ १०९ ॥

बाले अवस्था ते प्रीति में रंगि मीत को स्वाधीन पत्रिलेखी कै लीने ताते तो को आडृत नहीं सोई जंजाल भये तेरे ह्वाल सुनि पंचन में निउनता है इहां स्वाधीन करबो गुण तामें दोष कल्पना ताते लेखालंकार जे काम मारि देह जारती हैं काहू सो हास मात्र नहीं करत आपने धाम में बैठी सब सो टेढ़ी बातें करती ते स्वासी हैं इहां देह जारब आदि दोष तामें गुण कल्पना ताते दूसरी लेखालंकार परकिया स्वाधीन पतिका पंचो में पांच मगन ऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽ यह सारंगी छन्द है ॥ १०९ ॥

हारी सभीत घर छाड़ि प्रवास जाने प्रेमोपपत्ति तपती भजि योग ज्ञाने सामुद्र छापतन मा सु हि ध्यान में है हे सर्व संततिलकानन दर्शदे है ॥ ११० ॥

हरि ऐसे मित्र घर छाँड़ि प्रवास गये ताते हमारो ज्ञान योग भागि गयो उपपत्ति को प्रेम सुख परा ताते सामुद्र सी छापतन में आधुन की बड़ी ध्यान सदा उनही को रहत जा समय बसंत कानन में दर्सि है ताश्रूल के भारो चाउन को शूल हम कोति ल सम हे दर्शित शब्द ते दूसरा अर्थ ताते मुद्रालंकार परकिया प्रोषित पतिका तिभजि योग ज्ञातगान भगन है जगन है गुरु ऽऽ।ऽ।।।ऽ।।ऽ।ऽऽ यह बसंत तिलक छन्द है ॥ ११० ॥

चातुर शील वान वार गुणा रतनावलि मो हिय धारी पालक प्रीति रीति प्रति क्षण क्षण मो वचना नहिं टारी मीत नरेन्द्र संग हम नक्षक भई कलमंतरि

तारी भोरननाशुनाय जल सुख मम वेगि मिलै सुख-
कारी ॥ १११ ॥

चतुर शीलवान श्रेष्ठ गुण रतनन की पाँति सी उरमें धारे प्री-
ति की रीति सदा सदा ये प्रतिपालक मेरे वचन कबहूं नहीं
टारे ऐसे नरेन्द्र मित्र के संग में नाहक कलह करी भोरही ते अन्न
जल मेरे मुख को नहीं गयो यह शोच है की सुखकारी मित्र-
कब मिलि हैं याते कलहंतरिता परकिया नायका आकृत शब्द-
न सो पद चातुरी आदि गुणन के क्रम ते नाम ताते रत्नावली
अलंकार भोरननाशुनाय भः रः नः नः जः जः यः ऽ।ऽ।ऽऽ।।।।।-
ऽ।।ऽ।।ऽऽ यह नरेन्द्र छन्द है ॥ १११ ॥

गोरा गो तक्रुनो शिंगारो माला सो चंपा सोभा चे-
लादी भूषा आपै साजे ब्रह्मा रूपा काभा धामे में बैठी-
धारै टेरीमें उत्कंठा माती मीतो ना आयोशोचै छायो
गो बीती सारी राती ॥ ११२ ॥

गुरुजन उदिगाये तब शृंगार कीनो चम्पा कोमालाधारी-
नारी तक्रुणा चम्पा सी तनज्योति भई ताते संगति को गुण
लागो ताते तक्रुणा अलंकार जाके रूपकी शोभाब्रह्मा आप-
ही संवारी तामें भूषण बसन साजि धाम में बैठी मन में लगन
चढ़ी ताते मीत को राह हेरत सो नहीं आयो सब राति बीति गई
ताते शोचत याते उत्कंठा परकिया शृंगारो माला सोरह गुरु
ऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽ अक्षरूपक छन्द ॥ ११२ ॥

बैठी धामा मो भामा सज्या मंजीर रवसी सारूपा-
श्री हर्षी मीता गौनाजु सुना लज्जा करि घूँघै रूपा हाथै
सो नैना मूंदे जमुहाती क्रु शुग्व लागि ढांपै लाखो पौज-
नैं कीने तबहूं सादानहि छन्नी तापै ॥ ११३ ॥

सासु के पास धाम में बैठी तासमय भामा की मंजीर ध्वनीसें सगुन मानि हिये में हर्षी कि हमारे मीत आवते हैं पुनः लाज सों स्वयं चोराइ ग्रथ ही सारूप्य दारि लियो इहाँ संगति सों गुण लै फिरि आपनो गुण लियो याते प्रथम पूर्व रूपालंकार लक्षण सों नेत्र मूँदे जमुहात मुख को सासी सोंआयत योंनी लाखौ यत्न करत परन्तु मनको सोन नहीं छूटत इहाँ मिटबे हेतु उपाइ करे गुण ना मिटो ताते दूसरो पूर्वरूप एक क्रिया ग्रास पतिका मासोभामा सम ऽऽऽऽऽऽऽ॥ऽऽऽ॥ऽऽऽऽ यह से जीर छन्द ॥ ११३ ॥

वारो सिंदूर ओठौ लक्षित विषम गलिन इत नासनं सी गौराठी जामें वारो बार करत हैं सुनि सुनि करिक सी सास बर्जै ना होत जैगुरु जन सिखवन तुलहिं न ला गा कै चाती को संगो आतगुण रह अमल कबहूं न रिंका गा ॥ ११४ ॥

बार छूटे सिंदूर विराजे ओठन परछत लक्षित विकार गलिन में इत आवत हो तुम्हारे चरित कान दै सुनि सुनि गुरु जन आठ पहर हाँसी तेरी करत सासु बरजत पति ताड़ना करत गुरु जन सिखावत सो तुम्हारे एकहू नहीं लागत चातक मंग लि ताको गुण नाहीं लागत यथा कागा सदा मलीन रहत इहाँ सं गति गुण नहीं लागताते अतद्गुण अलंकार लक्षित नाय का गौराठौ जामें बारोबार करन आठ गुरु वाम लघु है गुरु ऽऽऽऽऽऽऽऽ॥॥॥॥॥॥॥॥॥॥ऽऽ यह हंसी छन्द है ॥ ११५॥

रजनिन मणिनीलाई सब सम अलिता पाई मुनता शिशु मृता दाई विभ्रनगन अभिनाई ॥११६॥

नीलमणि नीलवसन धारण करि श्याम घटी सम है-

चलीं भुजंगन के सुत्र यावत रद विसरत जात बिषम अँधियारी-
में जात अशंक विघ्न काहे दूसरेको नहीं गनत या भाँति अभि
सारको गई ताते कृष्णाभिसारिका रात्री अरु मशान की श्याम-
ता रहे तामें श्याम वसन करि अधिक श्यामता पाई इहाँ संगते
पूर्वगुण तरसार गयो याते अनगुणालंकार निनम है नगन
मगन ।।।।।।ऽऽऽ भुजंग शिशुसृता छन्द ॥ २१५॥

हउसित पट सागातो सितनिशि मिलिता जातो-
लखत न तन नारी को हितयुत अभिसारी को २१६

पुनः श्वेत पट सहित दोऊ के गात श्वेतरात्री मो मिले जात
हित सहित अभिसारिका नारी चाँदनी रात्रि मो ऐसी मिली जो
लखाइ नहीं परत ताते हित सहित चंद्राभिसारिका श्वेतरात्री श्वे-
त वसन सादृश्य ते भेद नहीं ताते मिलितालंकार छन्द पूर्व ही
को है ॥ २१६ ॥

सजे श्वेत सारी छ्रग हीर माला तजे शंक ब्रीड़ा भ्र-
मै चारिहू ओर सामान्य ती को सुखे चन्द क्रीड़ा चली
गैल आली हिये मैन माती मिले मीत कारे लखाई प-
रै ना मिली सी खिली रैनि जोन्हाभि सारै ॥ २१७ ॥

श्वेत सारी सजे तामें हीरन के माला छाड़ रहे लज्जा डर ख-
ड़े मन में माती मित्र मिलिवे हेतु गली में चली जात चाँदनी
रैनि मिली तासें मिली ताते चन्द्राभिसारिका तिया को मुख
अरु चन्द्रमा दोऊ समान देखि परत चन्द्र क्रीड़ा जो चकोर ते
चारहू ओर भ्रमै फिरत मुख औ चन्द्र दोऊ समता बराबरी
ते सामान्यालंकार द्वये छायगन ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ क्री-
ड़ा चन्द छन्द ॥ २१७ ॥

मनों जो जवै भर्म भीते मिलो अंक चाहै भरी सो -

करी धाम ते जो जरे भूषणों चैल धारैं जती ना प्रभा
भानु उन्मीलिता मैं खुले केश की श्यामताई दिना
धे अकेली गली में चली जात दीवाभिसारी ॥ २१८ ॥

मनो को वल मन मों ताते वे अर्म मित्र को मिलो ... यह चाह मन में भरी धाम ते निकरी वसन भूषण जती के ... ताते भानु की प्रभा में मिली तामें वारन की श्यामताने नारी प्रकट होत ताते उन्मीलितालंकार दुपहर समय में अकेली गली में चलीजात ताते दिवाभिसारिका कीड़ा चन्द छन्द प्रयोग की है ॥ २१८ ॥

वास सेज रिसाज जो भरि आजु साजि विशेषि कै
फूलमालनदीप माणिक मीत आगम लेखि कै भौ-
न भामिलि भूषणौ तिय बोल चालहि ते खुले चंचरी-
क भगे लगे पल नैन पंकज की तुलै ॥ २१९ ॥

फूलन के माला माणिक दीपादि यावत साज वास सेज के हैं ते मित्र को आगम जानि आजु विशेषि कै साजे याते-परकिया वासक सज्जानायिका भवन की शोभा तिया के भूषणान की शोभा एकही समान बोल चाल ते तिया विशेष्य नेत्र कमल एकही सम पलक लागे पर भौंर भागत ताते भय विशेष्य प्रकट ते विशेषालंकार रिसाज जो भरि र: स: ज: ज: भ: र: ऽ।ऽ॥ऽ।ऽ॥ऽ।ऽ॥ऽ।ऽ यह चंचरीक छन्द है ॥ २१९ ॥

गो तै जो भय शारि ग्रामहिं बने शार्दूल विक्रीडिता।
प्राची मारग छाहँ वारि रहि ताति ष्ठोन क्रीडिता।
छाया कुंज जलाखयादि उत में जै यो चले स नि कै नै-
प्ट्रो तर पांथ चित्त गहती नारी स्वयं दूतिकै ॥ २२० ॥

या ग्राम विषे परिवार में लोगन ते मारु होत उतनाही जानेवाला पश्चिम दिशि वन में व्याघ्रादि क्रीड़ा करत हैं एवं गृह स्नान वारि रक्षित ताते इहाँ बैठत काहे नहीं क्यों लजाते हो इहाँ तड़ाग छाया कुंज में शयन करो जूड़े में चले जायो इत्यादि प्रीति भाव मन में राखि गूढ़वात कहे ताते गूढ़ोत्तर अलंकार नवीन मित्र सों मित्रता करो चाहत ताते स्वयं दूतिका नायका सो ते जो भयरादि गुरु तगान जगान भगान यगान है रगान ऽऽऽ।।ऽ।ऽ।।।ऽऽऽ।ऽऽ।ऽ शार्दूल विक्रीड़ित छन्द ॥ २२० ॥

चित्र कारहि चरचित विधि करि सो का भलन लिन सजलवन भरि सो चक्र पदन सहि विछुरन प्राधा कौन भयरतर मन करि मुगधा ॥ २२१ ॥

विधि सहित चित्र को चर्चित करत चित्रकारहि कमल वन का भरे शोभित का कही जल चक्र कहे घूमि घूमि आपनेही पावनो हो दिशाते वियोग सहत चक्र कहे चकवाक कौन में परि के मुग्धा रमण करत कौन में परि इति परकिया मुग्धा प्रश्नोत्तर एकही वचन में याते चित्रालंकार भलनलिनस भगान लघु नगान लघु नगान सगान ऽ।।।।।।।।।।।।ऽ चक्र पद छन्द ॥ २२१ ॥

लघु वनि दसव सुगुरु मुख किहि विधि सुनिये धवल सुयश हरि का नित किहि विधि गुनिये प्रियक्षित सदनहिं परवत तिय मन उदिता किमि बहु प्रसनन परयक उतरद मुदिता ॥ २२२ ॥

सदारके प्रगण गुरु ते कौन भाँति सुनी उज्ज्वल यश हरि को कौन भाँति गुणगान करी मित्र के भवन पतिही पहुँचत तब तिया को मन कौन भाँति उदोत होत इत्यादि

बहु प्रश्नन को उत्तर एक सुदिता ताते बहु प्रश्नैक उत्तर अलंकार मित्र घर जानो मन भावन भयो ताते मुदिता नायका लघु चनि दश वसु गुरु अठारह लघु एक गुरु ।।।।।।।।।।।।।।।ऽ यह भवल छन्द है ॥ २२२ ॥

बीच धाम आपने सखीन में सुवैठि बाम गोर गात भौंह साथ गोलती सवर्न मीत आइ दूरि ते लिखी म-कार लाल रंग देखि लाज भाइ नाहिं बोलि आलि डर्न । बंधु फूल हाथ लै लिखी जु रंग नील चक्र हीय में सुवाट कै लगाय फेरि कर्न सूक्ष्म बात मीत को बुझाय यों कि-या विदग्ध और देखि तासु सोंह को करी न जर्न ॥ २२३ ॥

गौंह सहित गोल साथ यथा तीस को अंक गोर गात जा को ऐसी बाम आपने धाम में सखिन सहित बैठी इता मनय मित्र आइ लाल रंग सों मकार लिखि देखाई भाव इन को मि-लिबे की लालसा है ताको देखि सखिन की लाज डर सों बोली नहीं बन्धु फूल ले दुपहर सूचित करी नील रंग ते नयी चक्र लि-खि को डर स्थान हिये में लगाय आपनी इच्छा जनाये कान में लगाइ बन सूचित किये और की जान वा ओर नजर नहीं करी-संज्ञा में सब बात जनाये याते सूक्ष्मालंकार क्रिया में चातुरी करी याते क्रियाविदग्धा गोल तीस गुरु लघु क्रम ते नाम ऽ।ऽ ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ। यह नील चक्र छन्द है ॥ २२३ ॥

शशि भासत जो जो लगि जल वर्षे सुन घन अँधि-यारि निसा दिन सुन्दरि दूजी नहिं समंक तापे यह पा-न वहै सरिसा कहि मीत हि बाते बहु विधि की पदो-क्ति हि जानत को रचना इमि लक्षण जाके वचन विद-ग्धा भायत जो चतुरे वचना ॥ २२४ ॥

बन्दर भये ते बकुला प्रकाश तजि दीन्हें जल बर्षन लगो रा-
ति अँधियारी में मन्नचर मेरे संग दूसरी तिया नहीं तासु पर यह
पवन भरनाइ कैं बहन लगो इत्यादि बहुबातें कहि मीत को
बुलाहे तो और कोऊ नाहीं जानो ताते गूढ़ोक्तयालंकार बचनन
में चातुरी करी ताते बचन विदग्धा नायका शान्ति भासत जो-
जो लिखि है सरात भगान सगान तगान है जगान लघु गुरु-
॥ऽ॥ऽऽ॥॥ऽऽऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ यह सुन्दरि छन्द ॥ १२४ ॥

जननि न निसर भवन दुइ तुम हीं तुम भल क्षिति
पर निश्शंक घुमहीं पिहित चहत तुम तहँ नहिं रहती
नव मृगनयनि चपल कहँ चहती ॥ १२५ ॥

माता आपही घर ते निसरि तुमको ढूंढ़त तुम भली निश्शंक
भूमी पर घूमती हो पति अत्यन्त छिंत चहत तुमत हों नहीं रहत
है नवीन मृगनयनि तुम काहु चाहत फिरत हो इहाँ नव मृगनय-
नी चंचल नेत्र ते पर पुरुष अनुराग जनायो ताते लक्षिता नायका
पराये छिपी बात जानि ताको भाव प्रकट करी याते पिहित अलं
कार ननिन निशि चारि नगान सगान ॥॥॥॥॥॥॥॥॥॥॥॥ऽ यह सरभ
छन्द ॥ १२५ ॥

करमें रे भे नये ये यहि विधि सुनु री जो कहो जात ना-
हीं बागी को हो गई फूल निज कर रची स्रग्ध रा ग्रीव मा-
हीं आयो मो पै तहाँ इक कपिय कल रव हूदांतहू नोचिडारे
व्याजोक्ती भूत गुप्ता अवरसि मइ हैं साच आकार का-
रे ॥ १२६ ॥

ये नये कर्म मेरे भये ताको री सखी सुनु जो कहो नहीं जात
मैं बाग को गई फूल तोरि आपने हाथ माला गुंथि गरे में पहिरी
कारी मक्खय एक बन्दर दौरि मोको दाँतन नखन नोचि डारे औरे
कहानि औची बात गुपत ताते व्याजोक्ति अलंकार प्रथम कहि

न्हें कर्मन को छपावति ताते भूतगुप्ता नायका मेंग्रेंनयेयेय मगन रगन भगन नगन तीनि यगन ऽऽऽ।ऽऽ।।।।।।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ यह स्रग्धरा छन्द याही में तीनिउं गोपना हैं १॥१२६॥

बैठी सूने निकुंजै हित मिलि बिलसै मैन के रंग मातीं
देखे ताही चवाई तिनहिं लखि कहै क्रोध सों सौंह खातीं।
न्यारी रैहौं न जैहौं सहन नंद की क्रोध मैं शूल बानी क्यों
नहिं कैसे छिपावे जुगुति करि लखौ गोपना वर्त्तमानी २॥

मैन के रंग माती मित्र सहित बैठी सूने कुंज में बिलास करि रही तहां चवाई आई परे तिनको देखि क्रोधित ह्वै सौगंद खाय खाय कहन लगी कि न्यारी रहिहों क्रोध की भरी शूल सी बानी न नँद की सहे घरे न जैहों इहां कीन्हें कर्मन को युक्ति सों गोपन करत याते युक्ति अलंकार वर्त्तमान गुप्ता नायका॥२॥

मैं तो जाती नहाने यहि मग नितहीं काहू सों काज नाहीं ये बैठे राह घेरे पुर तिय करती नाक को छींक ताके
याही लोकापवा दै डर खहिं काहु नें जानती क्रूर नारी
ऐसी बातें बखानें भविष नवल लोकोक्ति कोऊ गुपनारी ॥३॥१२७॥

मैं नितहीं यहि मार्ग नहाने को जाती काहू सों प्रयोजन नहीं ये राह घेरे बैठे हैं पुर की तिया छींक ते नाक काटती हैं यह लोकापवाद को डर की क्रूरनारी मोको कलंक लगावन चाहती हैं ऐसी नवीनी बातें पहिलेही करत ताते भविष्य गोपना नायका लोकापवाद बर्नन ते लोकोक्ति अलंकार स्रग्धरा पूर्वही की है॥३॥१२७॥

सुरत क्रीड़ा में जल पक्षी चातक प्यासी या दुख-

पावै गति जानै सिंधु बसे तेई मेडु की कृपा कैसे गा-
वै मकरन्दी भ्रामर संभोगै रस सो चम्पा कैसे पाई ॥
कुलटा छेकोक्ति सगार्वा ते अस तीयाभामा मैं गाई २२८

अयन पक्षी जल में क्रीड़ा करि सुखी हैं यह चातक प्यास ते दुःखित रहत समुद्र को सुख तेई जानत जेवा में रहत कूप की मेडुकी का जानि कहे कमल भ्रमरन संगभोगत ता सुख को चम्पा कहा पावै इत्यादि सगर्वित बातन में एकरंगिनकी निन्दा करी ताते कुलटा नायका अर्थ में लोकापवाद ताते छेको क्ति अलंकार सतीया भामा मैं गा सगन तगन यगन भगन भ-गन गुरु ॥ऽऽऽ॥ऽऽऽ॥ऽऽऽऽऽऽऽ यह शंभु छन्द है ॥ २२८ ॥

भरिये तिया मम बात सो उर वेद ढूँढ़ जाइ कै रस लाभ रीस जिले नि भूषगा भूख प्यासन खाइ कै बरबैन बोलहु छन्द को हम नाहिं जानत क्यों कहै प्रति बात ज्वाव लगीति काढ़न वक्र उक्ति हि गर्व है ॥ २२९ ॥

हे तिया हमारी बात उर में भरी जो तुम्हारे उर में बात है तो कोऊ वेद को ढूँढ़ौ तो को रस लाभ होइ ताते भूषण सजिले मेरे खाने पीने की भूख प्यास कछु नहीं है ये बयन कैसे बोलत हौ बरबयन बोलहु बरवै छन्द हम नहीं जानती कैसे कहैं इत्यादि प्रश्नहीं में उत्तर देत ताते वक्रोक्ति अलंकार वक्रोक्ति गर्विता नायका ॥ २२९ ॥

आपु गाजि राज राज सोढ़ि गाड़ कारन आव चाहि गो-
पैसेति मैं कि जानि अन्न नेक हू न छांट पाव लाज त्या-
गि नाहिं के करो जु गर्भ भाम आपने सुजाहि श्लेष मोद
कंत नु निज उक्ति नायका मुदांकितादि ॥ २३० ॥

आप यहि राह में रोजही विराजत अरु मेरे नेत्रन में तुम्हारे देखन की भूखरागही है जो गोरस की चाह करते हो ताकी नेक छीटहू नहीं पाइसक्ते हो यह जानि लीजे लाज तजि नाहक परिश्रम करते हो ताते आपने घर को जाहु गोरस दधि गोरस इन्द्री रस इत्यादि श्लेष शब्दन मो छिपी बात कहत ताते विक्रोक्ति अलंकार नायक को देखि शंका करी ताते शंकिता नायका गाजि रोज रोज गैल र:ज:र:ज:र:ज: गुरु लघु ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ। यह गंडका छन्द ॥ १२० ॥

शीश गंगा धरे आठ यामै रहे व्याल बाघां वरे गौरि तौ ईश है पन्नगारी चढ़े चक्र है हाथ में चारि बाहें धरे लोक के शीश है पीव वे जो बना देखि नो नायकं प्रीति लागी सदा नारि स्वभाव है जाति रीती सुभावोक्ति पीव में प्रेम सो सानुरागी तिया गाव है ॥ २३१ ॥

आठ याम शिर पै गंगा धरे व्याल बाघां वर गौरि सत्त तौ शिव हैं गरुड़ चढ़े चारि बाहु चक्र लिहे तौ विष्णु है बिना पीव जान ना तिया नवीन नायक देखि प्रीति लगाई तौ नारि स्वभाव है इत्यादि जाति स्वभाव वर्णन ताते स्वभावोक्ति अलंकार पर पति में प्रेम ताते अनुरागवती नायका आठ जामैं रहे स्थान या में आठ ऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽ गंगाधर छन्द ॥ २३१ ॥

महि सुंदर कंचन मैं मणि सों बहु कुंजन कयारि बनी चहुँ घाहीं फल फूलि रहे दल भार लता भलि चारि गजे दलकी परिछाहीं जनि का टहु पीव फली कदली बहु यामहि संग विहारहु ताहीं अधिकार उदात्त पलक्षद सो धन सैन संकेत विनासिन जाहीं ॥ २३२ ॥

कंचन सों सब हु मणिन सो भूमि तामें कुंज कयारी बनि

और चाँदनी तामें दलभार सहित लता फलिफूलि रहे घेरि
सहित दलकी छाहीं बढ़त सजत ताते है नाह फली कदली
जनि कादऊ यहाँ आदऊ याम विहार करते हो यह अधिकार
उपलक्ष है कुंज कोसोधन बड़ाई देनो याते उदारता लंकार।
संकेत विनाशन होइ यह शंका ताते पहिली अनुसैना वस्तु।
यामांहि संग आठ सः गुरु ऽऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽऽ यह सुन्दरी
छन्द है ॥ १३२ ॥

गवने कर शेष रहे दिन आठ सहेलिनि संग गई
तिवने विहरै वन कुंजन कुंजन में फल फूल मृगा खग
वारिजले द्रुसलागि घनेरू छु यामि रहे उतहो हिकि
नाइसि शोचि मनै नसि भूत सुचाह भविष्य सकेतहि
भाविक है अनुसैन भनै ॥ १३३ ॥

आठ दिन गौने के बाकी रहे सखिन साथ तियाउपवन
को गई तावन की सघन कुंजन में फलफूल खग मृग कम-
लादि की शोभा तामें विहार करती है तहाँ सघन वृक्षलागि-
वे कछु जामि रहे ताको देखि शोच करती कि यह संकेत मेरो
अब छूटि जायगो ऐसो संकेत उहाँ होइ वन होइ संकेतनाश
होरा भूत वर्त्तमान आगे न होवे को शोच भविष्य तीनिहू काल ए
क में वर्णन तें भाविक अलंकार भविष्य संकेत चाहते ह-
र्षी अनुसैना आठ न आठ सगन ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ य-
ह दुर्मिला छन्द ॥ १३३ ॥

कुंजनि लतिका दल फूलि फली सहि चाँदनि छाय
मुखानन नैना सजे नव मातङ्गि जायलखी तहँ चिन्ह
गयो चलि सो अनुसैना जरे बन वामकि आह कढ़ी उन
भी तामें काम भभार संकेना बड़ा अधिकार कहै अति

उक्ति सके तहि रूनवती अनुसैना॥२३४॥ इति परकीया॥

सदल कली फली लता झुकी सुन्दरी राति में चाँदनी भूमि में छाय रही है शृंगार सजि गई तहाँ मित्र आवन के चिह्न बने मित्र नहीं है ता समय नामकी आह कढ़ी तासों तन जरि गयो आंसु सँभारि नासकी ताते नदी बही इत्यादि बड़ा अधिकार ताते अत्युक्ति अलंकार मीत है आयो आपुना गई याते तौलसी अनुसैना सातहि जाय सात जन परगन ।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।। ऽऽ यह वाम छन्द है ॥ २३४ ॥ इति परकीया ॥

अथ गणिका गानिका गान में जो प्रवीनी करे पंचकी नायका चाह लक्ष्मी धरै योग ते कल्पनायें निरुक्ती भने हाव भावे रचारी मने मोहने ॥ २३५ ॥

अथ गणिका गान में जो प्रवीणता करे ताको गणिका कही लक्ष्मीवान् की चाह ताते पंचनकी नायका है हाव भाव रचि मन मोहि लेत इहाँ गणिका नामही में अर्थ कल्पना ताते निरुक्ति अलंकार लक्ष्मीधर चाहते गणिका रचारी रगन चारि ऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽ यह लक्ष्मीधर छन्द है ॥ २३५ ॥

बीति निशा तहि भाग जहाँ वसि भोर सुमन्दिर आगमने आलस गात कुचांक हदे मिलि सेज रमैं कि तबै न सनै नायक नाहिं कठोर हिये रस जानत नाम सुख प्रीति अने सो प्रतिषेध निषेध करे निशि रंगरित बारवधू बरने ॥ २३६ ॥

याकी बड़ी भाग्य जहाँ वास करि राति बिताय मेरे मन्दिर को भोर आये हो आलस्य तन में कुचन के दाग उर में काहू संग मिलि सेज में रमे अवधीरा क्यों बोलत नायक रसिक नहीं हो कठोर हृदय में अनीति सुख में प्रीति नायक अर्थ में निषेध अर्थ

कठोर अर्थ करी ताते प्रतिषेधा अलंकार याकी साम्य ते आपने मन की हानि ताते गणिका खण्डिता सातहिभगण सात भगन गुरु ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ यह मंदिरा छन्द ॥ २२६ ॥

लैधनधाम तनौ मनको गहि मैन मरोरन चाह न-चाव भासत गोल कपोल कटाक्षन मारत बाणन नैन नघाव चन्द मुखी तव चन्द मुखी जब नायक नैनच-कोर बनाव मेविधि सिद्धिहि साधत अर्थ स्वधीन पती गणिका सुगनाव ॥ २२७ ॥

मैन की मरोरन ते नायक की चाह को न चाय धन धामत-न मन सब गहि लेइ शोभायमान गोलकपोलन पर कटाक्षकी करि नयन बाण मारि मारि उर में घाव करि देत चन्द मुखी तब-हीं चन्दमुखी है जब नायक के नैनन को चकोर बनाइ लेइ अर्थात् चन्दमुखी सिद्धिपद को पुनः साधै ताते विधि अलंकारि नायक नयन चकोर बनाई याते स्वाधीन पतिका गणिका ना-यका भासत गोल भगन सात गुरु लघु ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ यह चकोर छन्द है ॥ २२७ ॥

सजे पट भूषण श्वेत मणी सुमुखी मुख दर्पण लैं दरसी लखे छवि मोद बढ़ो हिय चाह धनो मन भीत गहे नि-कसी चली मग जात जगी नग लागि निशा सित चंच-मिले सरसी मिले सग कारण कारज हेतु भने गणिका अभिसार प्रकासी ॥ २२८ ॥

श्वेत मणिनके भूषण श्वेत वसन धारण करि सुन्दर मुख दर्पण में देखि आपनी छवि मन में मोद बढ़ो मीत के धन मन ले-ने की चाह करि घरते निकसी मार्ग जात में नग जग मगाइ ला-गि चन्द्रमा के चाँदनी राति मिले शोभा सरसाइ गई इहां छवि

देखतही मोद बढ़ो यह कारण काज संगही भयो ताते प्रथमहे-
तु अलंकार चाँदनी ते सखी यामें कारण काज सकही साथ तें हेतु
अलंकार चन्द्राभिसारिका गनिका जगो नग लागि जगन सा-
त लघुगुरु ।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ सुमुखी छन्द ॥ १३८ ॥

नील निचोल सजे मणि श्याम विभूषण भासत कं-
र्नत सारी मत्तगयंद उमंग मनोजहि रंग मिलाप नि-
शा अँधियारी मारग जात विचारि सनेम कृपा नव
नायक भाग्य हमारी कारण कारज एक हुहेत भने ग-
निका सु अस्त अभिसारी ॥ १३९ ॥

नील वसन नील मणि जटित करण भूषणादि धारे तमें अँ-
धियारी राति में मिलि मत्त गयन्द कीसी उमंग मदन की मारग
में जात यह विचार करत की नवीने नायक की कृपा हमारी भा-
ग्य है इहाँ नायक की कृपा कारण नायका की भाग्य कार्य्य
दोऊ एकही नाम में ताते दूसरी हेतु अलंकार कृष्णाभिसारिका
गनिका भासत करण भगन सात है गुरु ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।। ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽऽ
मत्त गयंद छन्द ॥ १३९ ॥

कंकन लीलख सीतरकी करचूरि रुवास सुजाकर-
केजहि आवत आजु किरीट प्रभाव सुजान यहां धननें
नित भेजहि लागि सँवार न तल्प प्रकाशित फूल न मा-
ल सुगंधित केजहि हेतु विचारि करे अनुमान भने ग-
निका यह वासक सेजहि ॥ १४० ॥

वाम भुजा फर्कनादि सगुन विचारि कहत जे मन भावत धन
आठ पहर पठावत ते मित्र आजु आवत यह निश्चय मानि फूल
सुगंधित के माला दीपादि की प्रकाश सज्जा सँवारन लगी इहाँ
हेतु ते कारज सिद्धि मानो ताते अनुमानालंकार वासकसज्जा गनिका

नायका भाव मुख्यार भगन ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ यह किरीट छंद है २४०॥

न्नरवधु सखिहि पठय नायक ढिग कहजब अपन-
य रसि तहँ शशि माल लय चाहत तव शशि मुखि नय-
न नलिन भानु न उदय अवहि सिधि सधक हि लय असं-
ता पर रति दुखितहि ॥ २४१ ॥

अपनी सखी को बुलावन हेतु नायक के पास पठाई तहाँ-
आपही भोग करि चन्द्रहार लाइ कही हे कमल नयनि अबहीं
भानु नहीं उदय होत नायक नहीं आवत ताकी दशा देखि दुखि-
त भई ताते अन्य संभोग दुखिता गनिका सिद्धि काज साधक
भोगी ताते असंगता अलंकार न नलिन भानु नगन लघु नगन
भगन है नगन ॥॥॥ऽ॥॥॥ यह चन्द्रमाला छन्द है ॥ २४१॥

अयार्द्ध सम निशि सेज गई जु सीद्ती बकने को-
प सभारि लागिती तजि सुंदरि मैलि काच है सुअ-
युक्ता उत्कंठिता कहे ॥२४२॥

राति बीती नायक ना आयो दुखित है जाय सेज पर बकने
लागी याते उत्कंठिता सुन्दरी को छाड़ि मैली को चाहत याते
अयुक्तालंकार सिगे जैग है सगान जगान गुरु ॥ऽ॥ऽ।ऽ।ऽ पहिले
तीजे चरण में सँभारि लागि सगन भग न रगन लघु गुरु दूसरे
चौथे चरण में ॥ऽऽ॥ऽ।ऽ।ऽ यह सुन्दर छन्द अर्द्ध सम है॥२४२॥

मिलन नरयना फिरी दुखारी निजजरि मै सहि-
पुष्पिताग्र वानी सुखहि मिलन सो गताहि सब्वा शु-
भ अनुयुक्त अयुक्त विप्रलब्धा ॥ २४३ ॥

सैन के गई नायक नाहीं मिल्यो दुखित फिरी ता विरह ते स-
[illegible] आंध जरी याते विप्रलब्धा सुख के स्थान दुःख ताते

युक्तायुक्त अलंकार ननरय प्रथम तीजे निज जरगै दूजे चौथे ।।।।।ऽ।ऽ।ऽऽ१ ।।।ऽ।।ऽ।ऽ।ऽऽ २ यह पुष्पिताग्रा छन्द है गन १४३॥

हितसेजसाल हियलेखि निशिजगि दुखाहि-तोषिता आह्हामरिन भागगाता असुजासुयुक्तग-निकाधिपोषिता ॥ १४४ ॥

बिन मित्र सेजसाल सब राति जागी दुःखही में तोष भ-यो हमारी भाग्य ते परदेश गये द्रव्य ले मित्र आवेंगे इहां । अशुभै शुभ मानै ताते अयुक्त युक्तालंकार प्रोषित पतिका गनिका सेज साल ।।ऽ।ऽ।।ऽ। १ निशि जागि ।।।।ऽ।ऽ।ऽ२ आल भाग ऽ।ऽ।।ऽ।।ऽ ३ सुजा सुजुग ।।ऽ।ऽ।।ऽ।ऽ।ऽ४ सेरभ छंद नियम ...

कसिकरवरवीन गान गुण परवीन साजि सुरलय ली अमल अलापरी मान तान रस बसि हाव भाव द-सिकसिकरगर मोरि फेरि अलय कला परी उझकि झझकि भूमि चपल चलत भूमि तनु नटि पर घमि मृ-दंग रंग थापरी एकतीसवरन गुणंत मनहरन सु-आदिअंत छेक गन गुन गनिका भरी ॥ १४५ ॥

श्रेष्ठ हाथन ते वीना कसि गान गुण में प्रवीनो सुर लय-लै को साधि सुन्दर अलाप करती अर्द्ध ... वरण एक ताते आदि छेकानु प्रास ... तान मारत हावभाव देखाय रसयुत ... स चाही तैसेही गर हाथन को मोरत ... भूमि भूमि चंचल है भूमि पै नाचत ... पर मृदंग की थाप परत इहां है है पद अन्त में ... अन्तपद छेकानुप्रास अलंकार गुण में प्रवीनता ... गुनगर्विता गनिका एकतीस वरण गुणांत मनहरण छन्द है १४५

मधुर मयंक मुख मृदु मुसकानि सुख मानन म-
यूख लाल आभूरी मिली तनै सैनकान्ति मैन मद मा-
तीं मिली मधुर मसुर मल्हा मंजुल दसुख रमजीरनै भूरि-
मुख सैन साल नागत मणिन माल मोल लेत मनलाल
लानि मानि जोवनै मधुर वरण ईक आवै बार जो अनी-
कहत उपनागरी करति गनिका मनै ॥ २४६ ॥

आपना जोवन माल मानि ताके मोल यै लाल को मन
लेत ताते गणिका की रति वर्णन इहाँ मकार एकही वर्ण
की आवृत्ति पदकी आदि में ताते आदि पद वृत्तानुप्रास माधुर्य
गुण की ग्यों लै मधुर शब्दन ते वर्णन ताते उपनागरि का
वृत्ति ॥ २४६ ॥

कोट पर चटकील चोटी लट लटकील कुटिल
कटाक्ष की लखनि भाँति भाँति नै भृकुटी विकट तट
ललित ललाट पट टीका टेढ़ि पाटी घट सुभटन टंकिनै
छटा भाल छटक सुलटि कटिल लटक पटक पद की भमा-
कन्तली मैंन मनै संधिलो समास रूप ओज साट वर्ग
रूप वृत्ति परुषा सरूप गर्व गनिका मनै ॥ २४७ ॥

जो आदिसौं चटकाल पट मांई अगम कोट में वास चोटी
की लटक कटाक्ष कै लखनि अनेक भाँति टेढ़ी भृकुटी तट ल-
लाट पर सुन्दर टीका टेढ़ी पाटी तट ताटंकादि सब सुभट है तन
की लसन आनन की छिटकनि कीन कटि की लटकनू सुरसु-
त पंजनकी भनाकते नायक को धन मन लूटत याते रूपगर्वि-
ता गनिका इहाँ टवर्ग एकही की आवृति पद अन्त में ताते
पदान्त वृत्तानुप्रास ओज गुण की ग्यों लैकै संधि समास
रूप वर्णन ताते परुषावृत्ति है ॥ २४७ ॥

रमत अनतनत हित नित इत रत ममतन चितव-
तलखतन आन है मुदित करत बात बनित गह्नतजा
तखुसित भरत गात उरन अघात है रह्नत कपोत गनि
त्रियित तदपि अति निरत सुमति गति रति अधिकान
है सरल वरण हित बिनहि समास रत कोमलाप्रसा-
द प्रेम गर्व गनिका कहै ॥ १४८ ॥

कपोत गति रहत ताह्र पर प्यास नहीं जात याते प्रेमगर्व-
तातकार एकही वरण की अनेकावृति पद अन्त में ताते पर्यं-
त वृत्यानुप्रास सरल वरण प्रसादगुण को आसे लै वरणन
ताते कोमला वृत्ति ॥ १४८ ॥

जमकजमक ललनग निकतकत मननुरग नि-
त विनवित विनवित मिलन मिलन हित नित १४९

मन अनुराग के वश ताते जमक जमक कहे बार बार लल-
न को गणिका तकत है विनवित कहे बिना दाँवं नहीं मिलि
सकत सोई हित के मिलबे हेतु नितही नितही विनवित कहे
विनती कीन करत ताते अनुरागवती एक शब्द है बार ताते जमक
अलंकार ललन है लघु नगन ॥॥॥ जमक छन्द दोहरा पर ॥ १४९ ॥

जग कीरति कीरति कीरति जागहि जागहि जा-
गहि जागहि ता मग सगजावत जावत जावत नाम-
हि नामहि नामहि नामहि ताठग ठगत्यागहि त्या-
गहि त्यागहि रेगहि रेगहि रेगहि रेगहि रेमग सगन
ठललाटहि आवृत पाद यथा सुखदा सुखदा सुखदा
जग ॥ १५० ॥

जग में है जिनकी कीरति ऐसे जो भगवान् तिन की गति
कहे प्रीति सहित कीरति जो राधिका जी तिनको अरंगह

जागहि जिनको गहिके जागते हैं जागहिता मुनेश्वर लोग तिनको मरा बल्न रक्तादि जावत मगे है तिनको तजावत कहे छुड़ाइ देत जिन भगवान को एक नामही नामहि नाहीं तो भूमि विषय नामहिं तुम्हारे नाम को नामहिं नवाइ देंइगो ताके ठग कामादि तिनको त्यागहि रे मन ठग त्याग वैराग्य सोई त्यागहि रे तरवारि गहि कै रेगहि चलहि रे गहि रे गहि रे संग साधुन के सगनाट सहित अंग आठ साष्टांग दण्डवत करि आपने ललाट को तिनके पादन में आवृति करे बार बार नवाउ यथा आपने सुखदाता को चाही यथा उनको सेवा करि सुखदाता हो तब तो को सब जग सुखदाता होइहि पद की आवृत्ति ताते लाटानुप्रास अलंकार सगनाट ललासगन आठ है लघु ॥ऽ ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ यह सुखदा छन्द है ॥ १५०॥

बन जल मधि रिपु गहत बिकल अति गत क्षण सा युग नाम लय भो काजै गजराजै सकल सुखसदन जिन्हि अवध सरिस घर सरिता सरयू बिमल सुता के तट राजै दरश परस जल विचरत विहरत थल हरि पापहु तापहु त्रिभंगी चौफल साजै चरित विशद जिनकर सुनि मुद भल तन ससना पुनरोक्तिवत आभासे रघुराजै ॥ १५१ ॥

बन में जल मधि पैठे ग्राह पकरि लियो तब ऐसे बिकल भये जो एक क्षण युग सम गयो ता समय जाको नाम एकही बार ले गजराज को काज सिद्ध भयो ऐसो नाम है मन सुख को सदन अयोध्या ऐसो धाम ता तट निर्मल सरयू नदी जा थल बास मंजनादि पाप हरि त्रयताप नासि चारिउ फल साजि देत तिनको सुन्दर चरित सुनि तनहू मन में आनन्द होत ऐसे जो रघुराज तिनके रूप को आभास पुनरोक्तवत है जाके देखबे की इच्छा बारम्बार बनी रहत इहां बन शब्द जल शब्द घर सदन सुख सुबिमल विशद भलादि शब्दन में पुनरोक्त भ्रमभासत अरु है नहीं ताते पुनरोक्तवदाभास अलंकार छन सा युग नाम लय छानगान है

सगान नगान मगान लघु यगान ।।।।।।।।।।।।।।।।।।ऽ।।ऽ।।।ऽऽ।।ऽ
यह त्रिभंगी छन्द है ॥ १५१ ॥ इति नायका लंकार ॥

अथ काव्य लक्षण हाव भाव मय सुंदरि सकल गुणन भरी अवगाहू भूषण पूर्ण लक्षण निरखि मोहि रहू यक विनाहू ॥ १ ॥

अथ काव्य लक्षण गुणयुत दोषरहित शब्द अर्थ सुंदर इति चारि अरु प्रसिद्ध चित्र श्रवण स्वप्न इति चारि दर्शन चारि छन्दन में बखान है यथा हाव भाव मय अवगाह गुण गुन्दर पूर्णभरी काव्यलक्षण देखतही कवि मोहित होइ सो गुण युत काव्य अरु हाव भाव मय अवगाह भूषण सम्पूर्ण भारे। ऐसी सुन्दरि नायका को देखतही नायक मोहित होत यामें प्रसिद्ध दरशन है भूषण १२ पूर्ण १५ बारह पन्द्रह सत्ताइस मात्रा की गाहू छन्द है ॥ १ ॥

द्वादश विषम दश आठ सम दोष रहित लक्षण अवगाहा काव्य रमणि लिखि चित्रहि देखत माहि रहत मन कवि नाहा ॥ २ ॥

विषम सम आदि जो दोष ताते रहित अवगाह लक्षणयुत विचित्र काव्य देखतही कविजन मोहि रहत याते दोष रहित लक्षण पुनः दोष रहित अवगाह लक्षणयुत नायका को चित्र हू देखि नायक मोहित होत याते चित्रदर्शन विषम कहे प्रथम तीसरे चरण में बारह मात्रा सम कहे दूसरे चौथे चरण में अठारह मात्रा बारह अठारह तीस मात्रा की उगाहा छन्द है ॥ २ ॥

कविनायक सुखशब्द सुलक्षण सुनि गावहिं मन कीसा देखन चाहकाव्य सुमती सकल पद परसत ईसा ॥३॥

सुन्दरशब्द सुलक्षण कविनायक के मुखते उच्चारण होत-ही अपरकविन हारि मानिलियो ता काव्यके देखवेकी चाह करि सुमति जन ईश्वर के पदपरसत की ऐसी काव्य देखवे। को मिलै याते शब्दसुन्दर लक्षणकाव्य को है पुनः नायका-के सुन्दरलक्षण अपरके मुखते सुनतेही नायक को मन हारि देखवे की चाह करि सुमतिते अनेक उक्तिकरि ईश्वर के पदपर-सत ताते अवणदरशन तो सकल पद परसत ईशा प्रथम प-द १० कला दूसर २७ कल यह गाहा छन्द ॥ ३ ॥

मत सत ईस सुमती सकल लक्षण अर्थ विगाहा
सपनेहू काव्य नायका देखत मोहि रहत मन कविनाहा ॥

जामें सत मत होइ ईश्वर चरित्र होइ अर्थ में सुमति के लक्ष-ण होइ ऐसी काव्य सपनेहू में देखे कवि नायक मोहित होत याते अर्थसुन्दर लक्षण काव्य को है पुनः सतमत सकलसुम-तिवारी नायका को सपनेहू में देखि नायक को मन मोहित होत याते स्वप्नदरशन मत ईस सुमती सकल प्रथम पद सता-ईस कल दूजे तीस कल यह विगाहा छन्द ॥ ४ ॥

दीन्ही शक्ति सुप्रीति चित होय नायक को बीस-बिसुधि गाय गुण रावरेन चेष्टा विस्वा बीस न चेष्टा विस्वा बीस चतुरता चितवनि लीन्ही चित पति लाग मुकयन बुद्धि दउ गुणागरा भीनी सतत नेह अभ्या-स बढ़त चेष्टा हरि लीन्ही करि दोहा रोलाग चित्त कुंड-लका दीन्ही ॥ ५ ॥

अथ काव्य को कारण चित्त ताके कारण तीनि शक्ति १ श्वि-तर्पात २ अभ्यास ३ अरु प्रीति लागे हँसिबो रोइबो आदि अनेक चेष्टा होत सो या छन्द में यथा है ईश्वर जाको आपुने शक्ति दी-

न्ही सो आपही कवीश्वर ह्वै गयो चित्त में प्रीति रीझी ताते लोक
की चेष्टा मारही विशुद्ध है आपु को गुण गान करन लगी प्रेम
शक्ति की चितवनि आपु में लगी ताते लोक की चतुरता जाती
रही ईश्वराधीन ते शक्ति कारण है लाग काहू चित में चोप भ-
यो औ बुद्धि दोउ मिलि गुण गण काव्यादिकन में मगन भये
ते काव्य करवे की गति भई ताको वितपत्ति कर्म औ सदैव न-
हू लगाइ पढ़त पढ़त विद्या बढ़ी ताको अभ्यास कर्म पुनः प्री-
ति की शक्ति ते नायक कवीश्वर ह्वै है नायका रावरो गुण गा-
वत में विशुद्धि भयो ताते पूर्व की चेष्टा जात रही एक टक-
चितवनि लागी ताते चतुरता जात रही लाग काहू चोप ते वित-
पत्ति कहे गुण कथन बाढ़ि गयो ताते दोऊ की बुद्धि गुण गण
में भीजि गई सदैव नेह के अभ्यास ते नायका की चेष्टा हरि ने
लीन्ही दोऊ लाग करि हारे ताते चित कुण्डल में लागि गया-
पुनः दोहा रोला मिलि कुण्डलिका छन्द है ॥ ५ ॥

मान प्रयोजन यशहि जगत निज काव्य विभावत
भूषण सम्पति व्यास काव्य हरिनाथ नुभावत प्रमा-
नंद जयदेव गाय जस सात्विक धारी विचरत जग का
कारन काव्य के सब संचारी वसि सदा राम पद कमल
मन तुलसि भक्ति थाई लही चौ चतुर विंश षटु विंद
है बैजनाथ षटपद सही ॥ ६ ॥

यश सम्पति आनन्द जगत राम वसि होवो इति काव्य प्रयो-
जन सो विभाव अनुभाव सात्विक संचारी स्थाई रति भावरस
के अंग है यथा मानसिंहादि कवि है जगत में काव्य विभावन
उद्दीपन करत तिनको यशही को प्रयोजन है भूषण हरिनाथ
एक एक कवित पै लाख लाख रुपैया पाये ते काव्य अनुभाव-
न कविन के मन में आनन्द बढ़ावत तिनको सम्पति को प्रयोजन

है जयदेवजी हरियश गावत प्रेमानन्द में रोमांचादि सात्विकहो
त तिनको आनन्दही को प्रयोजन है कैसो दास आपनी काव्य
में अनेक बातें बखानकरे जो संचारी भाव भी जग में विचरत
याको देखतही सबको मन वसिहोत यथा खानखाना बीरबल
इन्दुजीत जन्मभरि यश रहे ताते इनको जगवसि होनो प्रयोजन
है तुलसीदास भक्ति स्थाई करि प्रभुपद में मनलगाय इनको
रामवसि होनो प्रयोजन है चौबीस कला के चारि चरण अट्ठा-
इस मात्रा के है यह छप्पै छन्द है ॥ ६ ॥

प्रभु संमित शब्द सुवेद सर सरस लहत अवगाहि
न जाहि सु हृद संमति अरु ख्यातादिक बहु भावन कह-
बतीस दिनताहि ॥ ७ ॥

चारि भांति कहिबो प्रभुसंमत यथावेद वाणी सर्व्वोपर।
गुरुता तथा रसको रूप जे अवगाह न करत ते लहत दूसरो सु-
हृद संमत यथा ख्यातादि हितोपदेश तथा भावन करि कविती-
सह दिनकहन वेद सरस रस चारि छाक चौविस छातीस मात्रा
प्रथमदल बत्तीस मात्रा दूजेदल गाहिनि छन्द है ॥ ७ ॥

कांता संमित काव्य पुराणो युवति सकल यक रसि-
क राजहरि बालमीक आदिक कवि सिंहनि कहि तीस
दिन भावन रस भरि ॥ ८ ॥

तीसरो कांता संमत प्रिय वाणी काव्य पुराणादि तथा-
अनेक नायका रसिक राजहरि एकनायक चतुर्थ सर्वोपकारक
आगम बालमीकादि कविसिंह भविष्य वक्ता तथा भावनभरि
और कविजन रसवरणा प्रथमदल कला ३२ दूजेदल कला ३०
गिर्गिति छन्द ॥ ८ ॥

शब्द तन गुणौं गुण भूषणौ भूषिता नारि आलंक

पीरा समाही कोकिला मोर पिक शोर को अर्थ तन-
सूक्ष्म उद्दीपन बन फूल जाही दिशा दिशि दशों शात बा-
स कादम्ब की फूलिये फूल चाहात सपाही व्यंग जिमि
जीव रस मूल थी भावत्वे होत श्रृंगार मृदु हास माही ९

शब्द काव्य को स्थूल तन है गुण प्रसादोज माधुर्य मांई गु-
ण है देशकालादि सँभारि काव्य करिबो भूषण है औ पति
संग रामादि नारि को आलंबन बिभाव है औ अर्थ काव्य को
सूक्ष्म तन है औ कोकिल मोर कोयल आदि को शब्द पुत बन
फूलादि उद्दीपन विभाव है दक्षिण नायक प्रति नायका कहत
की कदम्ब कहे समूह नारी दशों दिशा में है तिनकी वासना-
थी करो भाँति की तुम्हारे है तिन पास फूलना फूलिये मनरोग-
इये इत्यादि व्यंग काव्य को जीव है तथा रस को मूल बिभाव है
दिशा दिशि दशों शत सैंतिस मात्रा को फूलना छन्द ॥ ९ ॥

आये परि शर्म लाल पूस निशा सेद जाल उत्तम क-
वि व्यंग हाल सात्विक यह गाई व्यंग वाच मध्यम मा-
मानस सधि मोद बसा बार बार बार दशा चंचरीक ताई
नेन बैन चेन सित्र लखन न रवन कार चरित्र काव्य और
शब्द चित्र सानुभाव काई सतु तन मन अहाज्य मध्यमों
त्तमो चतुर्ज्य जान और कवि मधुर्य्य अर्थ चित्र भाई १०॥

उत्तम मध्यम अधम तीनि भाँति काव्य को सात्विक मानसि-
क काइक अहाज्य चारि भाँति अनुभाव यथा बड़ी परिश्रम करि
आये ताते पूस की राति में पसीना आयो यह व्यंग उत्तम काव्य
औ सेदादि सात्विक अनुभाव है चंचरीक लाई दशा तुम्हारी बार
बार यथा भौंर अनेक फूल चाहत तथा तुम अनेक नायका चा
हत यह व्यंग बार बार बार यह वाचक व्यंग बराबरि ताते मध्यम

काव्य मन में मोद बसाय यह मानसिक अनुभाव है नयनन की स-
रखनि में चंचलता नयनन में विह्वलता तन में नखादि चिह्न।
यह कायक अनुभाव है तन में सात्विक मन में आनन्द बचन में
चातुरी यह आहार्य्य अनुभाव है नयन नयन चयन नखन लखना-
दि शब्द चित्र है तन में सात्विक मन में आनन्द बचन में चातुरी
यह अर्थ चित्र है ये दोऊ चित्र अवम काव्य है भार १२ बार १२
बार १२ दुगा १० मात्रा ४६ चंचरीक छन्द है ॥ २० ॥

स्तंभथके सुसेदम से सु प्रसयन से सुसुनि बीनाध्व-
न्यात्मकरा रोमांच तना पै वे पथ्य कांपै राग सुनापै
कानजबै वरणात्मपरा बोलै सुरभंगा विवरण अंगा
आँसुन गंगाधार बहै मन अर्थधरा भव सात्व दशा ठ
ठ रस सिधि राम ठ धुनि बरणा रथठ तिय मन हरि बनि
मदनहरा ॥ २१ ॥

सुनाय सो शब्द सुभाय सो अर्थ सो शब्द द्वै भाँति वर्णा-
त्मक सुरते ध्वन्यात्मक बाजाते स्तंभादि सात्विक भाव यथा
थकित होवो स्तंभ १ पसीना होवो सेद २ नसा मो होवो प्रलाप
३ बीणा को शब्द जो ध्वन्यात्मक ताके सुनतेही वर्णात्मक श-
ब्द सुरते राग उचार सुनतेही तन पै रोमांच भये वे पथ्य कम्प-
तन कांपि उठी ताको अर्थ मन में धरतेही स्वरभंग भया बोलि-
न सकी विवरण भयो अंग चेष्टा जाती रही आंसु भये नेत्र में
जलधार बही ध्वन्यात्मक जो बीणा को शब्द वर्णात्मक जो
गान शब्द ताको अर्थ सुभाइ मदन ने मोर ह्यो है तिय को मन
हरि लियो ताते आठहू दशा सात्विक भाव की भई सो सात्विक
रस सिद्धि करता कै मो है पद्या यह रस सो रामठ होगा दशा २० छ-
न्दम ६ विरति ८ चालिस मात्रा की मदनहरा छन्द है ॥ २१ ॥

ग्लानि गर्व मति मर्ष मद असूया मर्ष चपलता निर्वेद

श्रम उग्रता माहि निहि त्रास उन्माद आवेग विषाद जड़ता स्मृहीन अपस्मार चिंताहि मरनौत्सुक शंका क्रीग्लानि वितर्क वसि व्याधि विबोध सुति मोहनी दाहि। आलसावहि थंगा वचलक्ष्य काव्यं गतित शब्द संचारि निशिदीप मालाहि ॥ १२ ॥

वाचक व्यंजक लक्षक तीनि भांति शब्द औ तेंतीस संचारी भाव के नाम यथा धृति १ गर्व २ मति ३ हर्ष ४ मद ५ असूया ६ अमर्ष ७ चपलता ८ निर्वेद ९ श्रम १० उग्रता ११ त्रास १२ उन्माद १३ आवेग १४ विषाद १५ जड़ता १६ असमृत १७ दीनता १८ अपस्मार १९ चिंता २० मरण २१ औत्सुक २२ शंका २३ व्रीड़ा २४ गलानि २५ वितर्क २६ व्याधि २७ विबोध २८ सुप्ति २९ मोह ३० निद्रा ३१ आलस्य ३२ अवहित्था ३३ इति तेंतीस संचारी भाव उग्रता कर्म करि श्रम भई ता दिन्ना तें अपस्मार मूर्च्छित है आलस्य बहाने अवहित्था करि छिपाउती है तुम्हारे वचनही में व्यंगलक्षित होत ऐसे शब्द त्रिया तासो कहि कहत की निशा भई दीपन की माला संचारु शब्द संचारि दश मात्रा चारि बार चालिस मात्रा की दीपमाला छन्द है ॥ १२ ॥

तांके छबि आचर्यौ रतिभावुर्यौ सिपद्धाभिय प्रारा कही नहिं रुधिर गलानी उत्सव जानी जाति नामसुनि रसवरही भयदाङ्कलागी करि क्रोधाग्नी स्वन्दति जिल्हा ब्रह्मारि सही हँसि शोक विभीषण रावण रा स्थिर गुला इत्याम पुराने भुवन मही ॥ १३ ॥

यरिष्ठा १ जाति २ जिल्हा ३ गुला ४ इति चारि भेद वाक्य में रति १ हासी २ शोक ३ क्रोध ४ उत्सव ५ आश्चर्य ६ भय ७

गलानि ८ इतिस्थाई आठो रसन की यथा रघुनाथ की अद्भु-
त छवि देखि माधुरी अवलोकन में रति कहे प्रीति बढ़ी ताते
जानकीजी स्वइच्छा ते प्राणप्रिय नाम कहे यज्ञरक्षा रक्त चबे-
रुधिर देखि गलानि न भई वीरताते उत्सव बनो रह्यो ताते वि-
श्वामित्र जातिनाम रघुवीर कहे दण्डकवन में राक्षसों को
भय देखि क्रोधाग्नि सों खलन को दले ताते क्रिया को नाम
खरारि कहाये हासी को शोक बिभीषण को देखि शरण में
राखे श्याम रंगगुणा ते श्यामनाम गुणगान सो भुवन में अद्भु-
त है पुराणों १८ भुवन १४ बत्तीस मात्रा की दंडकला छन्द है २३

शृंगार संयोगी करुणा वियोगी हास विषम गुण
का दंगा अद्भुत उ... ...र समर्था समय भया-
नक प्रसंगा करि रौद्र विरोधिन विभत्स देश घिन बहु
शब्दार्थै कादंगा योगाद्यभिधा दश वसु वसु रसय-
श चहि पदु भावत सारंगा ॥ २४ ॥

शृंगारादि आठो रस यथा नायक नायका को संयोग को शृं-
गार कही जहां कुछ वियोग तहां करुणा कही विषम गुण संग
ते हासी होउ ताको हास कही आश्चर्य उचितार्थ तहां अद्भुत क-
ही युद्ध को समर्थ ताको वीर कही भय प्रसंग को समय जहां भ-
यानक कही विरोध ते क्रोध तहां रौद्र कही घिन देश देखाय तहा
बिभत्स कही पुनः बहु अर्थी शब्द में योगादि ते एक अर्थ की प्र-
तीत होय ताको अभिधा शक्ति कही सो संयोग वियोग सुगउचितार्थ
समर्थ समय प्रसंग विरोध देशादि करि प्रतीत होत ते अभिधा
कही अरु त्रियन के अंगन करि जो भाव प्रकट होत तिनको हाव
कहीं ते विलासादि हाव संयोगादि अभिधाशक्ति जो वाचक
में ... शब्द हैं ते आगे की छन्दन में वर्णन करब दश १०
... ८ वसु ८ रस ६ बत्तीस मात्रा की पद्मावती छन्द है ॥ २४ ॥

संचारि विभावा सात्वनुभावा पूरह्नोत ऋस्थैया मनरथ स्वपने । ावोपनायका काव्य अलौकिक गे- या लौकिक तन भोग योग बियोगा द्शा श्रृंगारहिं। चैया सगहावन अविभा शब्द विदग्धा [illegible] चवपैया ॥ १५ ॥

संचारी विभाव सात्विक अनुभाव अस्थाई करि रस को रूप पूरण होत सोरस द्वै भाँति एक अलौकिक यथा मनोर- थिक स्वपनिक नायका वोयोग इत्यादि काव्य अलौकिकरस है ओतन भोग योग वियोग श्रृंगार की सम्पूर्ण दशा ते लौकिक रस है अव हावन के साथ अविधाशक्ति विदग्ध शब्द में यो- गादि ते अर्थ को निश्चय पाइयं सो आगे वर्णन है दशा १० श्रृं- गारहि २६ चैया ४ तीस मात्रा की चौपै छन्द है ॥ १५ ॥

दृग भरिता मरसास्य विलासा निज जयमाल योग मनबासा सुमनबाग विच हरि सुख चन्दा अनु- यसयोग समुझि रघुनन्दा ॥ १६ ॥

विलास हाव संयोग ते अविभा यथा फूल बाग बीच कन्द सो सुख हहरि है हरि अनेक अर्थ तहाँ अनुय संयोग ते रघुनन्दन की प्रतीत भई पुनः बोलन हँसन चलन चितवनादि विलासहा- व यथा ते रघुनन्दन के कमल मुख की छविको विलास देखि आपने जयमाल पहिराइबे योग रूप मन में बसा याते नेत्रन भरि निहारती है याते विलास हाव निज जय नगन है जगन नग- न ।।।।ऽ।।ऽ।।ऽऽ यह तामरस छन्द है ॥ १६ ॥

षोड़श द्विदश साहेरि सुख हरि गोत गा सखि मे- षिली गुरुजन समाज सकोच मोटाइ तब ग्वा दग।

चक्राली भय सरित इत उत जात आवत नजरि चक-
ई सी थकी कुल लाज निशा वियोग ते यह जानिये
चक्रवाली ॥ २७ ॥

सांझ श्रृंगार बारह भूषण युत हरि को मुख देखि गीत
गावनेवाली जो सखी तिनके मध्य जानकी जी के गुरुजन की
लाज को संकोच बड़ा भारी है इत देखन की प्यास ताते नेत्र
चंचल हैं इहां लाजते देखन की हर्ष छुपावत ताते मोटाइत हा-
व है भय रूपी सरिता के ई पार उत पार आवत जात में नजरि
चकई सी थकि गई तहां चकई अनेक अर्थ इहां कुल लाज नि-
शा वियोग ते चक्रवाकी है षोड़श २६ द्विरश अष्टाइस मात्रा
की गीतिका छन्द है ॥ २७ ॥

नारि प्रिय विभूषित जात लीला तिय पति सुगात
नैनी गुहि निरखि लोभि शिरसंग भलि मांग शोभि ॥

नारि प्रिय को भूषण धारण कै गई पति तियको भूषण
गात में धारयाते लीला हाव पियके नैनी गुही देखि लोभि
जाइये तहां बेनी अनेक अर्थ शिर के संग भली सोहत ताते
सोहाई भूषिजात बारह मात्रा अंतगान लीला छन्द है ॥ २८॥

राति में जो चूंबि वांका आइ फेरि जाइ आयो धा-
म वार लेहि घेरि जाइये जु कहरी मांचि लखाहि शत्रु
तो अनेक पिया मित्र आहि ॥ २९ ॥

राति में सांको चूंबिबे हेतु जो फेरि आइ हौं तो जाइ भाषि
कै पहचाने तुम्हें मांगि लेहैं इहां गर्व अभिमान ते नारि नायक-
को पहचान करत ताते बिब्बोक हाव में आइ जाइये अनेक
स्त्रन पै गमन करत है ताते मेरो जनके हरि जानिये कहारि

अनेक अर्थ अनेकप कहे हाथी ते शत्रुता ताते सिंह जानिये। शाति में जो रगन तगन भगन जगन ऽ।ऽऽऽ।ऽऽऽ।ऽ। यह केहरि छन्द है ॥ १९ ॥

सोवत चोपलवंग मई दिशि चौभरी पी भरि अंक सशंक चकी झझकी उरी क्रोध भयो मन में किलकिं चित हर्षही चिन्हत हाय पयोधर अर्थ उरोजहि २०॥

नायका सोवत ताको चोपलवंग भय सुगंध चारहूं दिशि भरी है ताही समय नायक ने अंक भरि लियो ता शंका डर तें चकित है झझकि उठी किल कहे निश्चय करि क्रोध भयो मन में पुनः किंचित हर्षी की हाय मेरे पति को है यह चीन्हे तें अहाँ श्रम अभिलाय हर्ष शोक गर्व भय एकही साथ ताते किल किंचित हाव है तहाँ पयोधर अनेक अर्थ तहाँ हाय में कहे कंध में उरोज भयो चौभरी चारि भगन रगन ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ।ऽ यह प-लवंगम छन्द है ॥ २० ॥

सहजे मोहनि शोभातय सी भूषणाना द्युतिगो री छवि क्षिप्तार्गजलिप्ता तनना तजिमाले धरु नाचे ल सुरवे देखन देहु पिया सुनुरी वास शिंगार प्रसंगो जानि तिया ॥ २१ ॥

दूती वचन नायका सो तुम्हारे तन में सहजही शोभा सो हती है जैसी तैसी भूषण करिके नहीं है गोरी छवि छिपी जाती है ताते अरगजा लेपन ना करु तन में माला उरते उतारि उत्कृष्ट सोभो पन खुला सुख देखन दे पीय को है वाम वचन सुनु वाम अनेक अर्थ शृंगार प्रसंगते तिया जानिये भूषणन को निरादर ताते विक्षिप्त हाव शोभातयसी सगन भगन तगन यगन भगन ॥ऽऽ ॥ऽऽ॥ऽ॥ऽ यह मोहनी छन्द है ॥ २१ ॥

समरअवनितल्पपैकौच सो धारिकै चीरको न-
नन्न तनहि साजिनैा भूषणो सैन लै वीर को मृदुहँ-
सि किरपाणा भू चाप पी जीति है लाचरी मन तन हा-
नि विकै शार समर्थो हि नाराचरी ॥ २२ ॥

शय्यारूप समरभूमि में बसन रूप कवच पहिरि नवीनतन
में भूषण रूप वीर सजि सेना मृदु मुसक्यानि कृपान लै भौंह चाप च-
ढाइ हेला करि धावा करि हावारसों तन मन बेधि पीव कोजी-
ति लियो शर अनेक अर्थ तन मन वेध बलासमर्थ सो नाराच कहि
बाराजानिये आपनी शोभा बल सो पीव को मन जीति लियो
प्रेम प्रताप ते लाज भूलि गई ताते हेला हाव है हि २ नाराची
४ गुरु लघन चारि स्थान ।।।।।ऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽ यह नाराच छन्द है २२

हँसि बोलनि ललित चितवनि रति लेखे हगसा
मन्ने निशि नाथ मगारि पियदेखै द्विजराज मन सुख
मन हँसि द्विज भौरा जग भास उचित चितवनि शशि
चकोरा ॥ २३ ॥

हँसि बोलनि सुन्दरि चितवनि में रति माने सुखसन सुख
मन हि में पिय को देखत सब राति पितीत भई कैसे यथा द्वि-
जराज के सन्मुख द्विज को मन भौरा होत इहां द्विजराज अरु
द्विज अनेक अर्थ तहां ऐसी चितवनि उचित चन्द्रमा चकोरही
को है विशेषि शोभा अवलोकन ते ललित हाव है मानन सिंगा
।।ऽ।।।।।।।ऽऽ रति लेखा छन्द है ॥ २३ ॥

शोभित ज्यौं राति गई शशांके शोभि है तैजो जाती हि-
तांके लाजती न भली बाल कुंज फेरि सुकौ भलो बाल
पुंज ॥ २४ ॥

यथा चन्द्रकरि राति सोहत तथा मीत के अंक में तु सोभित काहे को लजाती तू भली बाल है इहाँ मुर फिरे ते भली बात सुन है लाजते बोलत नहीं ताते विहित हाव है गति गन गनति गुरु एक ऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ बाला छन्द है ॥ २४ ॥

मुद्रासंदेश्य प्रभातजि सियाहि मीले बोधक। चूड़ामणि दैहरि प्रियाकपीले गोपक्रियालिंगमतो समुझ तो समर्थे राम रमा राम सिया कहत हैं द्विअर्थे ॥ २५ ॥

प्रभा पास तजि मुद्रिका लय आइ जानकी जी को मिले तैसे हरि प्रिया चूड़ामणि दियो इहाँ क्रिया गोप है ताते बोध हाव है पुनः लिंग मत ते अर्थ समर्थ समुझत हैं राम शब्द पुलिंग ते रघुनाथ रमा स्त्री लिंग ते जानकी भातजि सिया ऽ।। ऽऽ।।ऽ।।।ऽ।ऽऽ यह हरिप्रिया छन्द है ॥ २५ ॥

मन चातुरि बिथ बैन सैन नहिं करि परज के बाँह पकरि तब नाह भरो लै बरबश अंके कूटामित मुख करे सखि गइ तन का रूहा मनकदंब सुख शब्द सहित कहि अर्थ समूहा ॥ २६ ॥

मन सो चातुरि मुख सो बचन विथ ऐसे बोलत पर्य्यंक पर सैन नहीं करत बाँह पकरि नाह बरबश अंक भरि लियो तब तन की रूह सखि गई मुख ते अनेकन कूटि करत मन में कदम्ब सुख है कदम्ब अनेक अर्थ मुख शब्द समीप ते अर्थ में समूह जानिये सुख में दुःख की चेष्टा ताते कुट्टमित हाव चातुरि वीस चौबीस मात्रा की रोला छन्द है ॥ २६ ॥

पीतल्पेजाबसुनि करै कानैना प्रभाती मन मद।

मनै मानिनी पीहीलागी नभतम भासै भाये के-
कानैं कार्मुक जलधर्मालाये ॥ २७ ॥

सखी कहती की पीव की सय्याको जाउ ताको कान
नहीं करती पति को प्रेम अत्यन्त जानि मन में मान मद है।
ताते मान तीन नहीं है ताही अवसर आकाश की प्रकाश जा-
तौ रही अन्धकार छाड गयो ताको देखि आपही पीव केऔर
में लागी कार्मुक छाड आयो कार्मुक अनेक अर्थ वरषाका-
लते मेघ जानिये भूरसा प्रेम प्रताप ते गर्व बढ़ो ताते मद हाव
है मभासेमा मगन भगन सगन मगन ऽऽऽऽ।।।।ऽऽऽऽ यह जल
धर माला छन्द है २७ ॥

भासमतन गोरी भोरी है विभ्रम थकिता सेंदु-
रदृश में भाले लाये अंजन चकिता नूपुरगरमालाये
बाजी सुनि बनिता धावत व्रज देशै गाई वंशी सुरधु-
निता ॥ २८ ॥

शोभा सब तन बराबरि ते गोरी चकित विभ्रम थकित है
भोरी भई ताते दृगन में सेंदुर भाल में आंजनगरे नूपुर पांवमें माला
इत्यादि साजि बाजी सुनतेही बनिता धाई बाजी अनेक अर्थ
व्रजदेश ते बंशी सुरधुनि जानिये भूषण स्थान बदल बताते
विभ्रम हाव भाम मतन गो भगन सः मः तः नः गुरु ऽ।।।ऽऽऽऽऽऽ।
।।ऽ यह चकिता छन्द है ॥ २८ ॥

रूप जाचाम वाम पूजन का मिलना आदि बाग
फूलन का शर ज्यों लागा बाल दास रथी अविचार्यो
न शब्द वा अर्थी ॥ २९ ॥

वाम शिव तिन की जो वाम पार्वती पूजन हेतु जानकी

जो गई फूल लेन हेतु रघुनाथ जी गये बाग में अवन मिलनभ-
यो परस्पर अवलोकन दोऊ केसर भो लागो इहां बाग बाग-
स्य बालादि शब्द श्लेष हैं तहां अविधाशक्ति करिके गकही।
अर्थ की व्यक्ति याको अविधाशक्ति कही यो प्रथम मिलन है
सरज्यों लाग सगन रगन जगन लघु गुरु ॥ऽऽ।ऽ।ऽ।।ऽ यह अवि-
धा छन्द है ॥२९॥ इति अविधा शक्ति ॥

वन भूषित दिशि दश फूले षोड़श रस शृंगार द्र-
ग साफलता पीवत छवि छाके रवि दिपला के मा-
द कलाके मनथलता लूटी रति रंगी सेन उमंग सं
भंगी बेकलता जाने मुनि राधन स्वारय वा वन कहदी
लक्षणा विछुरनता ॥ ३० ॥

अथ लक्षणा जहां लक्ष सों अर्थ ना बनै तब दिग ते गहिये
जे ताको रूढ़ी लक्षणा कही भूषित को अर्थ नहीं पाइये तब
वन शब्द दिग ते फूलो अर्थ गहि लीजे तथा फूले शब्द को मा
रस शृंगार भूषित अर्थ पाइये साफल्यता नेत्र करि देखनो च्यौं
रीनव छवि करि आसक्ती रवि दिपला करि यक टक चलता मन
करि आनन्द इहां सुनि नहीं दिग शब्द ते अर्थ बनत ताते रूढ़ी
लक्षणा बन शृंगारादि भूषित दिखाव यक टक अवलोकन भा
व की अनुभाव हर्ष बिछुरन को विखादादि संचारी रति स्थायी
है ताते संयोग शृंगार मांग पूरों है दश १० षोड़श १६ मत है भावि
मात्रा त्रिभंगी छन्द है जाने काहे जगन ना होइ ॥ ३१ ॥

सुवाग प्रयोजनवंति पधारी शिव पन पूजि गु-
जाय निहारी प्रभा भाले है सुत फूलन दोना [illegible]
सि अलंब शृंगार सलोना ॥३२॥

प्रयोजन याइ बाग को गई पार्वती को पूजि गाय [illegible]

तहाँ फूल सहित दोनाकरि भली शोभा है ताहि देखिजानकी जी चकित भई याते आलंबन विभाव है तहाँ फूल दोनाकरि शोभानहीं बनि परत ताते फूल दोना सहित रघुनाथजीकी शोभा भली यह धुनि ताते प्रयोजनवती लक्षणा है जिनुआ यवें जगन यगन ।ऽ॥ ऽ॥ऽ॥ ऽऽ धारीछन्द है ॥ ३२ ॥

रस गान पुरशोभायक से सुन तो लगे हियेशायक से छुउपादनलिनी के बन में बनहै रसिकउदीपन सें ॥ ३२ ॥

प्रयोजनवती छा भाँति की प्रथम उपादान जो परगुण लीन्हे होइ यथा रस को गान पुर को शोभायमान सुनत शायक सो लागत इहाँ पुरते पुरवासीन को गान यह परगुणते उपादान लक्षणा है कमल बन पर भ्रमर गुंजत यह उद्दीपन विभाव है ताको देखि मन रसिक होत सुन तो लागे सगन नगनसगन लघुगुरु ॥ऽ॥ ऽऽ॥ऽ शायक छन्द है ॥ ३२ ॥

गुंजत भृंगा सरे लक्षणा लीला करे आनँद ह्वै जानमी सानुभावो मानसी ॥ ३२ ॥

लाक्षन लीलाकरि भ्रमर सर में गुंजत ताको देखि उर में आनन्द होत सो मानसी अनुभाव है अवसर में भ्रमर गुंज बनहीं बनत ताते कमल पै सर आपनो गुण कमल को दियो ताते दूसरो भेद लच्छ लक्षणा है गा सरे गुरु सगन रगन ॥ऽऽ।ऽ लीला छन्द है ॥ ३३ ॥

सरोजातोहि दरवेश हगाली अन्तनाजाही भुजा लो धाव लाव की तथा सो जात है नाही करोछेपानु भावाकाङ्का सम्बन्ध दो ताही सरूपा शुद्ध गायेरी

तुमाला मोहिये माही ॥ ३४ ॥

जाको आरोपिये जामें आरोपित कीजेते दोऊ पद पाइये सो तीसरी शुद्धासारोपा यथा हे नायका सरोजालोनहिं दृष्टि मेरेनेत्र अनत नहीं जात भुजन करि गरे में लगावे की त्र्या नहीं जात तूं सो उर की माला है नेत्र के तकनि भुज अच्छे पादिका इक अनुभाव हे नायका अरु नेत्र को कमल भ्रमर में आरोप दोऊ पद बराबरी सम्बन्ध ते शुद्धासारोपा लक्षणा। ये गे तन माला सो ।ऽऽऽ।ऽऽऽ।ऽऽऽ।ऽऽऽ शुद्धगा छन्द है ॥ ३४ ॥

कंज लोचनि रूप माल मराल गौनि सुमंद हरतो किन हेरि तोहिं अधीर होत सुछंद त्यागु लाज अलिंग हार्ज रसानुभाव चरवंद हे चकोर ललारि साजि यथो चितो मुखचंद ॥ ३५ ॥

हे कमल नयनी रूपमाला हंस मन्द गवनि तोको हरत स्वच्छन्द हरि तेरी अधीन होत तू काहे नहीं हेरत आलिंगन को अर्जे है ताते लाज त्यागु इत्यादि अहार्ज्यानुभाव है नेत्रन को कमल में आरोपगुण सक्षित गौनी सारोपा लक्षणा मुखचन्द में आरोप्रकाश गुण ते गौनी सारोपा लक्षणा ललारी साजज ऽ।ऽ।।ऽ।ऽ।।ऽ।ऽ।।ऽ। रूपमाला छन्द है ॥ ३५ ॥

तकते हरि बाला बिवरण हाला मन औरै रंग तन और गहि प्रलय समाधी फंदन बांधी असतंभ थकित रहि ठौर अंकुर श्रृंगारो मच थल सारो लगि मैन भूमि पुलकान सात्विक अनुभाव सद सब सुने दश कहि घत्ता साध्य वसान ॥ ३६ ॥

सात्विक अनुभाव यथा हरि को तकते बाल के तन में और रंग भयो मन में और रंग भयो याते बिवरण १ नेह फंदन सों बंधी

प्रेम की समाधि लागी चेष्टा निरोध याको प्रलय कहौ २ थकि रहै ठौर पर ही याते स्तम्भ है ३ मैन भूमि पुलकित देह में राव यत्न शृंगार के अंकुर उठे रोमांच है ४ इति सात्विक अनुभाव है अंकुर शृंगार रोम मैन भूमि देह केवल उपमान ते शुद्धा-साध्यवसाना लक्षणा है दशा १० वसु ८ त्रैदश १३ एकतीस-मात्रा की घत्ता छन्द है ॥ ३६ ॥

घनश्याम नवल शोभित छबिलखि लोभित भय चपलातन्द कंपरी गरजनि सुनि भइ भोरी थकित मयूरी विह्वल ह्वै सुर भंगरी चन्द्रमुखि आंसु भरी दिशि शशि हेरि श्रम कन चकोरि भोर की रुद्र मुनि त्रिदश गमन साध्यवसन तिस घत्ता नंदकिशोर की ३७

नवल घनश्याम शोभित की छवि देखि चपला को तन थर थरानो सो कम्प है ५ गरजनि मयूरी थकित ह्वै भोरी भई शब्द विच्छिन्न भयो सो सुरभंग है ६ शशि मुख नायक दिशि हेरि चंद्रमुखी के आंसु गिरत सो अश्रु है ७ चकोर के तन में श्रमकन कांई सो स्वेद है ८ इति सात्विक घन चन्द्रमा नायक चपला मयूरी चन्द्रमुखी नायका इनों केवल उपमान शुद्धा सहित ताते शुद्धा साध्यवसाना लक्षणा है शिव मुनि देवन को साधना करि वश करिवे की गमन नंदनन्द किशोर की घात देखे नाय कन को गमन करत रुद्र ११ मुनि ७ त्रिदश १३ एकतीस मात्रा की घत्तानन्द छन्द है ॥ ३७ ॥ इति लक्षणा सात्विक भाव ॥

पतिवैर्त अरुदा सुर गावै अरुदा चन्दहा सैनु चाला तनजै हंस माला ॥ ३८ ॥

अथ व्यंजक संचारि यथा पतिव्रत पर जो व्यारुद है तिनको ... देवता गायन है ताको श्रीकृष्ण ... सर्वे भाग्य

ताको धर्म देखि हंसन की माला लजात पतिव्रता की सुराई व्यंग सो प्रकट ताते लक्षणा मूल अगूढ़ व्यंग है भैगर्व्य संचारी है सुरगा सगन रगन गुरु॥ऽऽ।ऽऽ हंसमाला छन्द है॥३८॥

दृगआनन सा गर्वलखी आवते सरत किते मग की अंतरवीस कलाधर रजवारन पै लखि हर्ष उर गूढ़ मति मन पावन को मान सुराम न हंस गति॥ ३९ ॥

नेत्रसुख को गर्वसहित कमलन को देखि कमल की गति विषे देखि हो भाव सम्मुदित है जैसे अन्तकार इसान सहित सहित चन्द्रमा देखि हो भाव प्रकाशहीन होइ गज विरथ पै डारत देखि हर्षी की मेरी गति आगे आसु को लघु मानत पावन को मान मन में की मेरी समान हंस की गति नहीं है इत्यादि व्यंग ते लक्षणा मूलक गूढ़ व्यंग है सब ते आपु को अधिक मानत ताते गर्वसंचारी भाव है वीस कलाधर हंसगति छंद है ३९ ॥

जलद स्वाति की तृषा गही तृषनि चातकाय कामही कहत तीय वाच व्यंग मा मति नरी जगे मनोरमा ॥ ४० ॥

एक स्वाती के मेघही तृषा गहे है ताते भूमि पै एक चातकी तुही धन्य है इत्यादि वाच में आपनो पतिव्रत व्यंग कहत ताते वाच व्यंजकता है मानो रमा की सी बुद्धि मानुषी की जागत पूर्ण ज्ञान ते मति संचारी भाव है नगी जगे नगन रगन जगन गुरु॥।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ मनोरमा छन्द है ॥४०॥

फूलि रहे तरु दलनो भारन भरि भ्रमही मनिकुंज लखि हर्षत बन भ्यास सु घूमही देखि बिकल च-व्यंग अनल दहि उर शीर की धिक धिक तीरक स्व-

हिं ढिगक्यों लाइ अहीर की ॥ ४१ ॥

फूले वृक्ष दल भार भरि झूमि रहे ता सूनी कुंज में श्याम मूरत देखि तन आनन्द भयो सो हर्ष संचारी भाव है श्याम अंग की छवि देखि काम की अगिनि सौरी ने उर को दहि दियो तातें विवान्द है सखी सों कहत तो को धिक है मोहिं अहीर के ढिग क्यों लाई यहां धिक धिक विपरीत तातें धनि धनि कहिबो व्यंग तातें लक्ष व्यंजकता है कलशा व्यंग अनल छा कला व्यंग कहे तीनि बार कहे अठारह कला पै अनल कहे रगन चन्द्रहीरक छन्द है ॥ ४२ ॥

नवल तमाल पल्लवत फूलि कुंजबन में खगमृगसंग सों भरहि भौंर गुंजरन में सुतन भरीयुवा मनहि व्यंग व्याजतज सो ममद विलासिनी वसनलाजमानुसजसो ॥ ४२ ॥

नवीन तमाल पल्लव ले रहे वन में कुंज फूलि रहे तापै भँवर गुंजत खग मृग संग करि शोभा है सुन्दर तन में युवा अवस्था भरी मन में व्यंग सुख तें नहाना तजु हे गजगति विलासिनी लाजनि वसन मज सहित साजु इहां संकेत देखाइबो व्यंगता में संयोग कराइबो दूजो व्यंग युवा भरी यह मद संचारी भाव है लाजनताजु मज सो हे लघु म: ज: स: ज: म ।।।ऽ।ऽ ।।।ऽ।ऽ ।।। ऽ समद विलासिनी छन्द है ॥ ४२ ॥

जाउँ कैसे सेज पियारी होत पीरा मो हग भारी। रकलवन्त्या सूयरती होत वक्ता बोधगतीया ४३ ॥

पीद की सेज कैसे जाउँ मेरे नैनन में पीरा होत कंचनवरणी है आँगुनि करि आये राति में मवति के ईर्षा असूया संचारी है वक्ता नायका नेत्र पीरा वचन में मवति ईर्षा छपावति है ताते

वक्ता वैशिष्ट व्यंग है रतीया ऽ।ऽऽऽ।।ऽऽ रुक्मवती छन्द ॥ ४३ ॥

विचारि सपत्नि अमर्षौ प्रबोधत मीत महर्षौ। कितै घर को तजि जैये निशा भरि सून गवैये ॥ ४४॥

सवति पै क्रोध अधिकताते आमर्ष संचारी भाव है पति दुरभाव ते मीत सों वचन चातुरी करि कहत घर छांड़ि कहाँ जाइये राति भरि सून घर में बिताइत है इहाँ मीत को बुलावन व्यंगताते बोधव्य व्यंजक है जिजैये जगन है यगन ।ऽ।।ऽ।।ऽऽ यह महर्ष छन्द है ॥ ४४ ॥

करत चपलता घनी नारि री प्रकट स्रग प्रभा दुरै हारि री पटकसि तन छोरती देखने करत वग व्यंग सूने बने ॥ ४५ ॥

स्रग में तनकी प्रभा प्रकट करि स्रगों में दुराइलेति पटकसि पुनः छोरि अंग देखावत इत्यादि अनेक चंचलता सों चेष्टा देखाइ मीत बोलावब व्यंगताते वग वैशिष्ट व्यंग है घनी चंचलताते चपलता संचारी है नीनारिरी है नगन है रगन ।।।।।।ऽ।ऽऽ।ऽ प्रभाछन्द है ॥ ४५ ॥

सहि मोर कोकिलन कूक कान सो रहि चंद देखि मम देह प्राण सो सजि साज गौन पिय रैन राखिनी निरवेद काकु कहि मंजु भाखिनी ॥ ४६ ॥

मोर कोकिल की कूक कान सों सहिबे व्यंग की न सहि जाई चन्द्रमहि देखि हमारी देह में प्राण रहिबे व्यंग नहिं है [illegible] रात्री है हे पिया साज सजि विदेश गमन कीजे यहाँ [illegible] ति रोकब व्यंग ते काकु वैशिष्ट व्यंग मंजू भाषिणी नायिका [illegible] मूति मानि पति को निन्दत सो निरवेद संचारी है [illegible]

।।ऽ।ऽ।।ऽ।ऽ। मंजु भाषिणी छन्द है ॥ ४६ ॥

ललन भरे यहि नैन क्यों तिहारे हरि सुख ते श्रम बुन्द जात धारे थकित रहे चुप कौन हेतु धारी मृदु हँसि भाषत वाक्य व्यंग नारी ॥ ४७ ॥

हे हरि आपु के सुख ते श्रम बुंदन की धारा चली तुम्हारे नैनन में पलक क्यों नहीं चलती कौन हेतु चुप साधि थकित से हो रहे इत्यादि मृदु वाक्य भाषत में यह व्यंग भयो की तुम्हारो मन और नायका के अनुराग वश है ताते वाक्य वैशिष्ट व्यंग है थकित रहिबे ते श्रम संचारी भाव है लन भरे यल पुनः भः रः यः ।।।।ऽ।।ऽ।ऽ।ऽऽ हरिसुख छन्द है ॥ ४७ ॥

सुनेहि नाराच घातिका पीहीन श्वेत रात्रिका त री लगेन राचिका ती भाष्य व्यंग वाचिका ॥ ४८ ॥

पीव हीन श्वेत रात्रि नाराच सों लागत मोको प्राणघात कौं त्रास है ताते त्रास संचारी भाव है सूनो घर कहि बचन चातुरी सों मीत को बुलावत ताते वाच वैशिष्ट व्यंग है तरी लगे तः रः लघु गुरु ऽऽ।ऽ।ऽ।ऽ नराचिका छन्द ॥ ४८ ॥

सांचे सों करु जनि उग्रताइ भोरी शृंगारै सजु तन मान गारी गोरी रूसे में रहत महर्षिनी वृथा है है प्रस्ताव प्रकार व्यंग काय का है ॥ ४९ ॥

हे भोरी तें रूसे में खुशी रहति सो मान में आगि लगाउ शृंगार को सजु सांचे पति सों उग्रताई जनि करु इहाँ सांचो पति कहिबे में यह सूचित होत की झूठे पति सों नेह राखत है ताते प्रस्ताव वैशिष्ट व्यंग है पति सों निर्दयताई सो उग्रता संचारी भाव है मान जारु गोरी मः नः जः रः गुरु ऽऽऽ।।।

ऽ।ऽ।ऽऽ प्रहर्षिणी छन्द है ॥ ४९ ॥

पियपैस्थित चढ़ो उन्माद जैसे गिरैं गलिन ऐंठे गात तैसे न और दिग मेरे आवयाही अकेलि रहि हो हौं द्वार माही ॥ ५० ॥

पति समीप गात ऐंठि गलिन में गिरत कहत मेरे लग कोऊ ना रहे अकेले बरोट में रहिहौं पीव के दिगही अकेले रहिबो मीत पै व्यंजित ताते और दिगते व्यंग्य विचार बैन चित भ्रमते उन्माद संचारी भाव है जे गिरैगजः मः गुरुः गुरु ।ऽ।।।ऽऽऽ।ऽऽ पैस्थित छन्द है ॥ ५० ॥

आवेग घाम डर बाग जाइहौ छाया जलादि ललिताइ पाइहौ तू माजुरी इतन आउ संग में नारि कहै समुझ देश व्यंग में ॥ ५१ ॥

घाम के डरते आकुली ताते बाग को जाइहौ तहां छाया जलादि सुन्दराई पाइहौ हे सखी तू मेरे संगना आउ इहां बाग में मित्र को मिलिबो व्यंजित ताते देश वैसिष्ट व्यंग मित्र मिलिबे की आकुली विभ्रम ताते आवेग संचारी भाव है तू माजुरी तगन भगन जगन रगन ऽऽ।ऽ।।।ऽ।ऽ।ऽ ललिता छन्द ॥ ५१ ॥

न सजन नित त्यागो विषादाजु है शरद रयन में चन्द्रिका साजु है तरु प्रफुलित गुंजारत भृंग है कहत प्रकट नारी समै व्यंग है ॥ ५२ ॥

हे सजन नितही ना त्यागो आजु मेरे बड़ा दुःख है इहां पति बिदेश जात इष्टहानि ताते विषाद संचारी भाव है तरु प्रफुल्लित पै भौंर गुंजत शरद राति में चांदनी प्रकाश है इत्यादि

भनय तें पति मेंकिनो व्यंजित तातें समय व्यंग है नजिभ त्या गां हु नगन हु भगन गुरु ।।।।।।ऽऽ।ऽऽ।ऽ चन्द्रिका छन्द है ॥५२॥

चरुणा चर्णों नयन कमल में कालि ते कान्ह भावै श्याली यामें भनय ययन्ही नाम सो वाम लाखै जानी ताकी ध्वनि लाजि जड़ता धारियो हाल तेखा ज्योंकी त्योंही रहि चुप गहि बाला भई चित्रलेखा ॥ ५३ ॥

चरुणा सो वरण कमल सो नयन यह कान्ह कालि नेक हल भेंसी वातें लाखन सखी ते सखी भायती है ऐसी वातें सुनि सुनि ताकी ध्वनि विचारी की मोको सब कहती हैं यह जानि नायका लाज वश ते जड़ता धारण करि ऐसो हाल भयो ज्यों की त्यों चुप गहि कैसी रही यथा चित्रसारी यहज इता संचारी भाव है सखिन के वचनन में आपनो हेतु विचारि नैनो यह ध्वनि है में भनययय मः भः नः त्रैयगान ऽऽऽऽ।।।। ।।ऽ।ऽऽ।ऽऽ यह चित्र लेखा छन्द है ॥ ५३ ॥

लियह पिया जु कुंजरिनि बचै सुनि स्तुति पी को। चकि रहि चित्र पुतरि यथा सो सुधि नहिं ताको रहूप टूटे निज नयन या आंशु रुत नांपै यह अवि वक्षित कहिन वक्ता सुनि कढ़ि आपै ॥ ५४ ॥

कुंजरिनि वचन की लेइ पियाजु ताको सुनि पति की सुधि करि चकित है देह सुधि भुलाय चित्रपुतरी सी रहि गई नयनन में आंशु चले ताहेतु दृढ़ करि पट मों बन्द कियो रहांक इवैया को इच्छा नहीं पियाजु शब्द में आपही ते धुनि कढ़ी ताते अविवक्षित वाच्य धुनि है पति की सुधि आवबे ते अस्मृत संचारी भाव है निज नयन या ।।।ऽऽ।।।।ऽऽ।।।।ऽऽ दृढ़ पटदेस
गुही रही गृह काज करि भन लाल कर मन गासि

अभागिनी हम जात पितु गृह दीनता इमि भाखि ल-
घुतादि पंचन बीस विधि सुगा इत व जसु गीत ध्वनि
अर्थांतर संक्रमित वाच्य सविवक्षित रीति ॥ ५५ ॥

तू इहां रहि गृह को काज करि भली भांति लाने को मन
राखियो हम अभागिनी हैं जो पितु गृह को जाती हैं इत्यादि
दीन बचन में कहत की आदि में तू हम ते छोटी है अब पच्चन
में बीस विधि ते तेरो यश गायो जायगो यामें यह धुनि की
तेरी भाग्य जागी अकेले सुख बिलास करु इहाँ वक्ता नायका
की इच्छा तें व्यंग कढ़ी इहां अपनी अभाग्यता को अर्थ सपत्नि
की भाग्य को लै रह्यो ताते विवक्षित अर्थांतर संक्रमित वा-
च्य धुनि है दुःख को उत्कर्षताते दीनता संचारी है लघु आदि
पंचबीस मात्रा की सुगीत छन्द है ॥ ५५ ॥

लखु चन्द पूरण श्वेत किरणों रैन भल सुख देत सुनि
अपसमार प्रस्वेद तन में बाल विकल अचेत लघु आदि
है षट बिंस कल गीता हि प्रकट सुजाचि अविवक्षित
यहि जानि जग [illegible] वाचि ॥ ५६ ॥

देखु पूर्णचन्द्रमा की श्वेत किरिणों राति यात्र भली शोभाद-
ती हैं यह सुनतेही बाल के प्रस्वेद चलो विकल मूर्छित ह्वै अचेत
भई इहाँ चन्द्र नायका शोभा किरिणा कुंज रात्री इहाँ व्यंग कों अ-
धिकाई कहिबे को वाचक आपनो अर्थ छाड़ि दियो ताते अ-
त्यन्त तिरस्कृत वाच्य ध्वनि है मूर्छित होबो अपसमार संचा-
री है आदि है लघु छब्बीस मात्रा की गीता छन्द है ॥ ५६ ॥

गोप स्थिति लोग सयान जागे गर्जे घन पोन्ह-
हि ध्यान लागे शोचें विरहानल में विपक्षा चि-

ता व्यभिचारि धुनी विलसा ॥ ५७ ॥

सखान सोंच बंदि जागत ताही समय मेघ गरजे नायका को बिरह ने सताय्यो ता शोच में विपक्ष आगु को जानि यांव में ध्यान लागो रहो गरजनि त्रास सो चिंता व्यंग ताते चिन्ता संचारी भाव धुनि है तिलोक सखात गन लघु गुरु सगन यगन ऽऽ।।ऽ।।ऽ।ऽऽ उपस्थिति छन्द है ॥ ५७ ॥

उपचार षोड़श दशोरूपन पूजते भावते श्रवणा कथा शिर नाय विष्णु पद गुरु तात्र्यंत पावते विरह प्रेम में मगन रहत मन मरगा सरिस जगत में धुनि भाव विवसित सदेव रति देखिये भगत में ॥ ५८ ॥

जे भाव सहित षोड़शो उपचार करि दशोरूपन को पूजते श्रवण करि कथा सुनत विष्णु के पावन में माथ नावत ते अंत काल गुरुता मुक्त पद पावत जिनको मन प्रेम की विरह में सदा मगन रहत संसार में मृतक सरिस रहत ऐसे भक्तन की प्रीति परमेश्वर में सदा देखियत है याते देवरति भाव ध्वनि है जग में मृतक सो रहिबो मग्न संचारी है सोरह दश बत्तिस मात्रा पूरेत विष्णु पद छन्द है ॥ ५८ ॥

भवश्रोत मुक्यसन सो सुजस सुनि श्रवण सो शरणागत सुखद में रघुराज रति पद में ॥ ५९ ॥

भव दुःख ते आकुल है शरण सुखद सुयश कान सो सुनि रघुराज के पावन में प्रीति करत है याते राज रति भाव ध्वनि है आकुलता औत्सुक्यता संचारी है सनि अ सगन नगन सगन ।।ऽ।।।।ऽ रति पद छन्द है ॥ ५९ ॥

त्लामिस सोंक करि वालि भेद सो सशंक जाती

लजि रही सुखेद सो हिते लियो गोद भरि मंद भा-
षिनी अलक्ष क्रमहि रस व्यंग संचारिनी ॥ ९० ॥

और भेद बहाने सो दौड़ करि नायका को नन्द बुलाइ नि-
यो शंका सहित जाय नायक के मुख सें स्वेद तनि आगु के अ-
सक्त जानि लजाय रहि गई ताही समय नंद भाषिणीको गोद
ने अंक भरि लियो इहाँ रस पूरता है अरु विभावादि क्रम नहीं
जानो जात ताते विवक्षित अलक्ष क्रम रस व्यंग है शंका संचारि
भाव है जाती लजिर जगन तगन लघु जगन रगन ।ऽ।ऽऽ।।।ऽ।ऽ।ऽ
मन्द भाषिणी छन्द है ॥ ९० ॥

सुबँगला बिच मसाल है तदा अधर पान भजुरी
प्रियंवदा सुमुख बीड़न हि लाल प्रस्तुते सब्दलक्ष
क्रम वस्तु वस्तुते ॥ ९१ ॥

बँगला पान बीच मसाला है ताको अधर पान करु है
प्रियम्वदा सुन्दर मुख बीड़न करिकै लालिमा प्रशंसित है
पुनः बँगला बीच मसाल बरत तहाँ लाल के सन्मुख है अ-
धर रसपान करु हे प्रियम्वदा ब्रीड़ा लज्जा ना करु इहाँ वक्ता
इच्छा ते विवक्षित बँगला मसाल बिभाव सन्मुख होनो अनु-
भाव लज्जा संचारी अधर पान स्थाई यह क्रम जानबे ते लक्ष
क्रम है वाचक ते अर्थ ताते शब्दशक्ति साधारण अर्थ व्यंग्य
अर्थ होऊ वस्तु ताते विवक्षित लक्ष क्रम शब्द शक्ति वस्तु ते व-
स्तु ब्रीड़ा संचारी भाव है न भजुरी नगन भगन जगन रगन ।।।ऽ
।।।ऽ।ऽ।ऽ प्रियम्बदा छन्द है ॥ ९२ ॥

भोर दिन याम गत नैन मुदिता मैं इन्दु वदना
भजसि लाल यह श्याम मै मानत गलानि यहि ठान

वस्तु सांगी वस्तुहि अलंकार्य जु वस्तुहि व्यजारी ॥ ६२॥

प्रभात ते पहर दिन चढ़ा ताहू पै नयन भौंरि रही है इन्दुवदना लाल को न भजती है ते श्याम रंग है यासों ग्लानि ते मन तें उदासी है रतिश्रम चिह्न देखनो सखिन प्रति ग्लानि संचारी है आलस वस्तु ते श्याम को भजिबो व्याज अस्तुति व्यंगता ते विवक्षित मलक्ष शब्द शक्ति वस्तु ते अलंकार भजसि नाया॥।॥।॥।॥।ऽऽ इन्दुवदना छन्द ॥ ६२ ॥ इति शब्द शक्ति

मुनक्षत्र व्याह्यो अंत गुरु शुभ गीत गावत भामिनी कहि इतु त्वपर एस पाव वितर्क करती कामिनी धनवंत स्वमति आलसी सुनि भूर्ताही हर्ष है स्वतः संभावी वस्तु वस्तु धुनि अर्थ शक्तिहि कहे ॥ ६३ ॥

अथ अर्थ शक्ति तासें जगत प्रसिद्ध अर्थ को स्वतः संभावी कही कवि कृत प्रौढ़ ताको कवि प्रौढ़ोक्ति कही सीधी कहनूति ते अलंकार न ठहरे ताको वस्तु कही स्वतः संभावी वस्तु ते वस्तु यथा सुन्दर नक्षत्र में व्याह भयो शुभस्थान में वृहस्पति को न भेषु न ऐसा वरपायो की आलसी सूम धनवन्त धूर्त है ऐसी तर्क भामिनी करती ताको सुनि नायका खुशी भई की आलसी है तो कहीं जायगो नहीं धनवन्त सूम तो खर्च ना करी धूर्त है तो कामी होइगो नायक के अवगुण वस्तु तासें मूर्य सोऊ वस्तु लोक प्रसिद्ध अर्थ ते स्वतःसंभावीवस्तु ते वस्तु व्यंग धुनि शंका संशय वितर्क संचारी नक्षत्र सत्ताइस मात्रा अन्त गुरु शुभगीत छंद है ६३

मासगनि तिथि अंत लौं थकि विरहतापन व्याधि होत गुंज भौंरन की दहै अति गीत कोकिल सोधि मौन बालका सुनि चौकि के इत पीव मो है कौन ढंग स्वतः संभावी वस्तु धुनि अलंकारहि होत व्यंग ॥ ६४ ॥

अवधि मास पूर्णाभा नक्र गनि विरक्त भी ता भई ... कोकिला को शब्द अत्यन्त दुःखदा भई पपीहा ... ते चौंकी की मेरो पीव इहाँ कौन भाँति है इहाँ पपीहा ... वस्तु में पति को भ्रम होवो भ्रान्ति मान अलंकार लोक प्रसि... अर्थ ते स्वतः सम्भावी वस्तु ते अलंकार व्यंग विरहादि दुःखते व्याधि संचारी भाव है मास १२ तिथि १५ अन्त लघु सनाउस मात्रा की अतिगीत छन्द है ॥ ६४ ॥

मोहन इत उत लीलावति सजि षोड़श ... अन्नन धारी सेज समर महि रति सुख लरि गिरि ... शिथिल अंग घावन कारी असुधि विबोधनि श्रमआ लस में पल खुलत अध खुली रहि जावे स्वतसंभावी अलंकार ते वस्तु व्यंग धुनि कविजन गावै ॥ ६५ ॥

इत मोहन उत नायका सोरह शृंगार रूप सेत ... धारण करि सेज समर भूमि पै रति सुख समर लरि सब अंग शिथिल सोई कारी घावन करि गिरे दोऊ ता श्रम आलस ते बिसुद्धता ते पल खुलि अध खुली रहि जात इहाँ रति समरादि रूपका लंकार सो अमिता वस्तु सखी लक्षित करत सो व्यंग ताते स्व तः सम्भावी अलंकार ते वस्तु व्यंग धुनि है पला अध खुले ताते विबोध संचारी भाव है षोड़श दोज बत्तीस मात्रा की लीला- वती छन्द है ॥ ६५ ॥

शोभा इत हि जगत की रस बश ... सेज परदा- वे बिलसत रहै रैन दिन रति सुख नैनन मुख छवि जोवै तदपि न त्रपित नेह करियक दी ... कोवै स्वत सम्भावी अलंकार धुनि अलंकार व्यं- गोवै ॥ ६६ ॥

[illegible] मोह गयो यक योवन [illegible] गगन की सब जरा की [illegible] गाही होत बहुरि के गहिगई काहे ते दिन राति रति सुख [illegible] में मुखन की शोभा परस्पर देखत रहत ताहू पर तृप्ति नहीं होत नेक और दोऊ मकड़ी ह्वै रहे तिनके आगे शिव पार्वती कौन हैं भाव गोर वरणा रूप दोऊ इहाँ श्याम गोर तातें [illegible] जग की शोभा यह परिसंख्या लंकार ते शोभा देखत [illegible] [illegible] नहीं यह विनोक्ति व्यंग नेक ते सो वरणा सब है [illegible] आगे शिव पार्वती कौन हैं यह व्यतिरेक तातें स्वतः संभावी अलंकार ते अलंकार योवबे ते धृति संचारी है रस ई वस्तु [illegible] चोदह [illegible] महाहंस गाथा की सैंदे छन्द ॥ ६६ ॥

षोड़श नवल सजि नायका उत सनमुख लाल हैं मोहवश ह्वै थकि रहे सुरपुर लगि अस हाल है उमँग बढ़ि गगनांगना परि नृहि सुरतिय दंग हैं ध्वनि वस्तु ते कढ़ि वस्तु कवि प्रौढ़ोक्ति हि व्यंग हैं ॥ ६७ ॥

[illegible] शृंगार नवीन सजि इत नायका उत लाल अवलोकि मोह वश ते दोऊ थकि रहे ताको ऐसो हाल अलौकिक रूप की ऐसी उमँग बढ़ी गगन रूप आँगन में परिदेव तिया दृष्टि कै दंग है रही यहाँ शोभा वस्तु ताकी उमँग देखलिया थकी इसी वस्तु व्यंग मोह वश थके सुरलोक में यह हाल गगनांगनादिक विप्रौढ़ोक्ति वस्तु ते वस्तु है चितवनि [illegible] मोह संचारी है षोड़श नय पर्यन्त मात्रा अंत गुरु गगनांगना छन्द है ॥ ६८ ॥

वास ग्रहे मान मुतादीर की नींद स्वप्न में मिलनि बलवीर की जागि हिय लागि मान गत पार है वस्तु प्रौढ़ोक्ति ते अलंकार है ॥ ६८ ॥

मान किये [illegible] की सुता वास घर में सोवत रहे तहाँ स्वप्न में

बलवीर सो मिलनि ह्वै गई ताते जागतहीं नायक के गये में लप टाइ गई सोन अकारशों छूटि गयो मानकरि सोइबो वस्तु स्वप्न तें अकारणमान जाको प्रथम विभावना व्यंग बलवीर कवि प्रौढोक्ति वस्तु तें अलंकार व्यंग है स्वप्न तें निन्द्रा संचारी है चन्द्र ग्रह ऐसयह माधा की हीरकी छन्द है ॥ ६८ ॥

तव भास जागि तन प्रभावती महा नैना नगना करता मरयाद राति हा भालांक चन्द्रल परसाद संग है प्रौढोक्ति लंकृति करि वस्तु व्यंग है ॥ ६९ ॥

तुम्हारे तन की भास प्रभावती जागत घाम सी आलस करि नयन अरुण सूर्य्य तें मर्य्यादा राति के नाश करता भाल विषे नखांक चन्द्रमा सो प्रसाद तुम संग में लेके आयो है सो भा घास नयन सूर्य्य मर्य्यादा रातिनखांक चन्द्रमा इत्यादि रूपक अलंकार तें परतिय गमन व्यंग वस्तु मर्य्यादा रातिशा चंद परसाद कवि प्रौढोक्ति अलंकार तें वस्तु व्यंग ध्वनि आलस संचारी है त भास जागि तगन भगन सगन जगन गुरु ऽऽ।ऽ।।।।ऽ।ऽ।ऽ प्रभावती छन्द है ॥ ६९ ॥

मीतहि सौंहें कहत लखि चवाई सदन मोहि दुसह दुखमई है धामन जैहौं डर भगि अबहीं थाकनि पूछि सखि कहा भई है मारत मोको नंद अमित तन्वीन दशा यह पट फटि अंगो भातिन शोभा भनय युगुति लंकार हि लंकृत पउद्दक व्यंगो ॥ ७० ॥

मीत के ढिग रही तहां चवाई न को देखि सौंहें खाइ कहत सदन मोको दुसह दुःखमई है ताते धाम को न जैहों इत्यादि। वचन में छल क्रिया ते आपने कर्म छिपायो ताते युक्ति अलंकार तामें कहत की दरकरि भागी ताते थकि गई सखी पूछत

का भई कहत नरेंद मोको मावत ताते यह दशा भई तन में पर
आदि गंध उस्मो ओरं वहाने साखु आकार दुरायो ताते व्याजो-
क्ति अलंकार इत्यादि प्रौढ़ोक्ति ते अलंकार ते अलंकार व्यंगभ
प्रकार नगइव तें अवहित्था संचारी है भातिन जो भा भनम
।।।ऽऽ।।।।।।ऽऽ।।ऽ।।।।।।ऽऽ तन्वी छन्द है ॥७०॥

गमज्जन के हेतु प्रिया लालन ताही दोऊ डुबकी लेतब दै बादरनि माही बूड़े वहु बीचे रहि ताले तिय-मगे याहू छल संचारि उभै शक्ति हि व्यंगै ॥७१॥

मज्जन हेतु प्रिया लालन गये तहाँ बाद बदि साथे डुबकी
ले बहु बीच ताल में बूड़ि रहत मज्जन हेतु जावे में अर्थ शक्ति
ते संकेत जावो व्यंग बहु बीच बूड़ि रहबो शब्दशक्ति ते स्पर्श
व्यंग ते उभय शक्ति व्यंग है अरु यही छलसंचारी में गनि यत
है ताले तिय संगे तगन लघु तगन यगन सगन गुरु ऽऽ।।ऽऽ।।ऽऽ
।।ऽऽवाहम माया किय छन्द है ॥७१॥इति धुनि औ संचारी ॥

चारु दिशि दशो वन भूषि फल फूल वहि पौन त्रै भाँति मिलि मलय के साथ जू बिजे जग मैन रति नैन या समै में दीप्ति रहि फलि नव देह ब्रजनाय जू होत दिन अंत वासंत की जोन्ह भलि वहत सरिताहि में धो दूले हाय जू अर्थ अंतर रहि यह वाच्य संक्रमित धुनि पद प्रकाशक व्यंग कविनाथ जू ॥७२॥

अथ एक पद प्रकाश धुनि अरु रति भाव यथा वन फलफू-
लन करि भूषित ताकी सुगंध ले त्रिविधि पौन वहि दशो दि-
शा सुगन्धित है ब्रजनाथ की नवीन देह की दीप्ति फैलि रही
मानों काम की जग विजय है नैनन सों तो को निहारत यामें
रात रति ते दिन अन्त होत वसंत की चाँदनी भली सो बहती।

नहीं हाय. धोड़ले इहाँ यह व्यंग की या समय मिलिके नायक मिलि लेइगा शब्दन को अर्थ संयोग करावे में मिलि रह्यो. एकही पद में व्यंग है ताते पादैक प्रकाश अर्थान्तर संक्रमित वाच्य धुनि है स्थायी रति भाव है नामु ८ दिशि १० दशा १० वृत्ति, १२ चालिस मात्रा की विजया छन्द है ॥ ७२ ॥

रूपसुधा धाम जे श्याम को चित्त जो चाह के भू-लने भूलत तो तनों बाल सो भाषि सखि मों न तो रतन द्ग सास ना ले तहा नाहि कर्नी बोल्न है चाल आनन्द खुन सातनादै सुरति कानता टौर टर्नो व्यंग अत्यंत धुनि तिरस्कृत्य वाच्य पादैक प्राकाश चंद्रांग ब-र्नो ॥ ७३ ॥

रूपसुधा के धाम जो श्याम तिनको चित चाह के भूल-ने पर भूलत में उतरत नहीं है ऐसे बचन सखी नायका सों कहत सो ना नजरि सामने करे न बोले नाना हीं नहीं रसीलि रिसानि कान्ह सो सुरति लगाइ सुनत ता ठौर ते टरत नहीं यांं व्यंग को नीक लागत ताते श्रवण रति भाव है नानार्थ वाचक आपने अर्थ छांड़ि नीक लागिवो अर्थ लियो ताते एक पद प्र-काश अत्यन्त तिरस्कृत्य वाच्य व्यंग धुनि है सुगंत चंद्रांग वर्ण भूलना छन्द है ॥ ७३ ॥

पहुँचिय जान्त करती शिंगार हरि पास सहच नु-सिरति बदार मम मिलनि कहब वा सम यार करा-लस्य शब्द रस व्यंग पाद ॥ ७४ ॥

शृंगार करती है तो वहाँ को जाई यह जानि नायका नायक के पास जाइ कहब कि वह सार आपु को सुमिरत है यह कहाँ, मिलनि काहि कहब कि वह समय यारि है रहो वह समय की

पूर्व भूर्ति अर्पित करत इहां शब्द शक्ति लक्षक्रम एक पद प्रकाश
[illegible] ध्वनि [illegible] शान्त सिंगार जगनांत सोरह कला
[illegible] छन्द है ॥७४॥

हरि सिंगार भूमनहिं अभिलाषत है वनमाली
नन्द [illegible] लाखत हैं तरति सेवति वै निवारी स-
द शब्द शक्ति वस्तु व्यंग वस्तु पाद ॥ ७५ ॥

सुन्दर हरि को सिंगार को मन सों अभिलाय करती ताते ये
मन [illegible] हैं [illegible] उनकी प्रीति सेवत है वे निवारत को-
[illegible] नहीं निहारत हैं इहां तन मन मिलन की चाहता-
ते अभिलाष विप्रलंभ अभिलाष वस्तु ते रति चाह दूसरी वस्तु
व्यंग भूमनादि शब्द शक्ति वस्तु ते वस्तु व्यंग एक पद प्रकाश व-
गु ८ लिगि १० अठारह गाथा की माली छन्द है ॥७५॥

नयन सुखैन नेक कल पावती निते विरह नहीं स-
ह्यौ सुगम धारि हो चितै शरण प्रभद्र के शिव मनोज भा-
नुं [illegible] शब्द शक्ति साहुरे ॥ ७६ ॥

प्यारे को देखन नहीं पैये ताते नयन सुखी नहीं हैं नेह नित
की कल [illegible] है सो विरह मो सों सह्यो नहीं जाइगो ताहेतु सुग-
म उपाय चित में धारि मो कल्याण कर्त्ता शिव की शरण में-
गई ताते मनोज [illegible] नहीं भस्म ह्वै जायगो इहां विरह विप्रलं-
भ [illegible] शृंगार है विरह वस्तु शिव शरण काव्य लिंग कल्-
पावती शब्द शक्ति वस्तु ते एक पद प्रकाश अलंकार व्यंग ध्वनि
[illegible] नः भः गुः रः ।।।।ऽ।ऽ।।।ऽ।ऽ।ऽ प्रभद्रक छन्द है ७६

नवली सेज नवल नायक नहिं काहु डरपा तुमला-
यक [illegible] नाहिं स्वत संभावी वस्तु वस्तु ते [illegible]

भुलियासाहिं ॥ ७७ ॥

तुम लायक मैं नहीं हौं या सहस्तु तुम नवीन नायका हौ। तुम को नवीन नायका सेज पै चाही यह दूसरी वस्तु व्यंग है लोक प्रकाश अर्थ ते स्वतः संभावी वस्तु ते वस्तु व्यंग धुनि एक पद प्रकाशित सपत्नि की ईर्षा विप्रलंभ वियोग शृंगार है उन्तिस मात्रा की झुलियाना छन्द है ॥ ७७ ॥

यक छुन प्रारा तु क्षत हम पीरा प्रात समय चिह्न राकीन्ही। स्वतसंभावी अलंकार ते वस्तु व्यंग चा-पदलीन्ही १ ॥

हमारे तुम्हारे प्रारा सत्य सत्य एकही हैं काहे ते तुम्हारे कपोल में क्षतलगो हमारे पीराहोती यह असंगत अलंकार ते तुम परारी तिया पास रहे यह वस्तु व्यंगलोक प्रकाश अर्थ ते स्वतः सभावी अलंकार तें वस्तुव्यंग एक पद प्रकाश जो राति को आवते तो चिह्न वाके को देखती प्रभात भये ते देखिलई याते समय वारो विप्रलंभ वियोग शृंगार है यही छन्द आगे है तामें लक्षरा लिखे हैं तीस मात्रा की चौपद छन्द है ॥ १ ॥

स्वातिसमेति चातकि घन उदि पीछे गुरनि दे-अनुसारा तिय पहिले गिरति सकल देखी स्वत-अलंकार लंकार २ ॥ ७८ ॥

पुनः तिय चातकि विहार समय स्वाती के मेघ पीव है ताही अवसर अन्त जाबे को गुरु आज्ञा मांड दई तिय को गिरतो पहिले सबनने देखी इहां रूपक तें अत्यन्तशयोक्ति अलंकार ताते स्वतः संभावी अलंकार ते अलंकार एक पद व्यंग धुनि तीसकला की चौपद छन्द गुरनिदेश वारो विप्रलंभ २ ॥ ७८ ॥

तब भूमियेक दासुशापके हरिगालुप्त भयेजे-
हि देखिके वशशाप पांडुना संगाचहै कवि प्रौढ़ो-
क्ति वस्तुहि वस्तु कहै ॥ ७९ ॥

शिवगिथ भूपगणसाकी रहिगये समकहे साधारण श्रवण
कारिणक समय कुन्ती दासी भई तिनको देखि स्वयं अस्त न
भये तेसे स्त्री पाइ शापवश पांडु भोग करियो नहीं चाहत
यह शापवारो विप्रलंभ वियोग शृंगार है सहज शृंगारवस्तु
तरंगिको मोहि जावो वस्तुव्यंग सम भूमि कवि प्रौढ़ोक्ति ब-
स्तुते वस्तु व्यंग एक पद प्रकाश समकहे दूसरेचौथे भूमिवा-
रक शेष प्रथम तीजे एकादश वरण हरिगालुप्तछन्द है ॥ ७९ ॥

पी प्रवास तिय हगा अपूर्व घननिशि दिन वरखत
एकरसधार कहत सवैया यह अलंकार को कवि
प्रौढ़ोक्ति वस्तु लंकार ॥ २ ॥

पीव विदेश में देशान्तरवारो विप्रलंभ है वियोग वस्तु-
निशि दिन एकरस वरखत ताते नयन मेघ ते अधिक यह अ-
लंकार अपूर्व घन प्रौढ़ोक्ति वस्तु ते अलंकार ॥ २ ॥

पिचकति चकि निशि दैव दवानल वरत देखिम-
न इत उत जान समुझत सुकवि जानि प्रौढ़ोक्ति हि
अलंकार ते वस्तु वखान २ ॥ ८० ॥

नायक चकवा तिया चकई दैवयोग दावानल संकेत-
वन में बाने लगी सो रात्री में वियोग करी ताते दोउ के मन
इत उत धावत यह दैववारो विप्रलंभ वियोग शृंगार है चकव
यों कपक ते वियोग होवो वस्तु देव कवि प्रौढ़ोक्ति अलंकार
ते वस्तु व्यंग एक पद प्रकाशित एकतीसककाकी सवैयाछन्द है ॥ ८० ॥

चतुर पढ़ै उतै इतै सुगारा सों दुवानी सुखद्विजरा-
ज सोय ग्यो ह्वै कालकराठ दानी सुनतहि आँसु नैनन ते
बिडरि मानिनी के कवि प्रउढ़ोक्तिलंकृताहित ग्र-
लंकार लीजो ॥ ८१॥

इतै चन्द्रमुखी दुकान पर बैठी उतै चतुर चातक ने पीव शब्द
पढ़ि उठी ताके सुनतेही वाके पति की सुधि आइ गई ताते
मानिनी के आँखिन ते आंसु बहि चले इहां चन्द्रमुखतुल्य सुधि
आइबो सुसिरसा व्यंग चतुरादि प्रौढ़ोक्ति अलंकार ते अलंकार ध्वं-
या एक पदप्रकाश पीव शब्द में पीव सुधि होबो याते विप्रलम्भ
विप्रलम्भ वियोग शृंगार है द्विजराज सोय कारिता रगान
जगान सगान यगान ।।।ऽ।ऽ।ऽ।।।ऽ।ऽऽ मानिनी छन्द है ॥ ८१॥
इति विप्रलम्भ ॥

पीतीय वियोगागारी मध्यतरी है जानो धुनिया-
में प्रबन्धकरी है ॥ ८२ ॥

अथ दसा दशा यथा पीव की वियोग अग्नि में तिया मरी
यह मरणादशा पीय वियोग प्रबन्ध ते अर्थ निश्चय ताते प्रबंध
धुनि है तीय तः यः ऽऽ।।ऽऽ यह मध्य छन्द है ॥ ८२ ॥

नजी भसी जग सुख सो न चन्द्रमा सुदेस सो नतरु
चिराई कंदसा हितै लखैवो बसन अधात असना।
सुशब्द में गुणा कथ सोय लक्षना ॥ ८३ ॥

न उनकी जीभसी जग में और की जीभ है न मुखचन्द्र सो
चन्द्रमा है न देश सम सुन्दर भेष है भीत जो बसन धारना की-
न्हे तिनको देखे नैन नहीं अघात है इहां जीभ सो न जीभ इ-
त्यादि शब्द नहीं शोभ मतकार माते स्वयं लक्षना शब्दध्वनि

रं संग तें सब अंग बखान ताते गुरा कथन दशा है जीभ सी
नन नः भः रः मः गुरु ।ऽ।ऽ।।।।ऽ।ऽ।ऽ नत रुचिरा छन्द है॥८३

सो सोरो रोय उठै चौंकि देखै गा गा भा वा ग स्त्रा-
या लि तरंव वातो मीसी करना तीय याको उन्मादो
तोहि स्वयं लक्ष वाक्यो॥ ८४ ॥

सोय सोय पुनः चौंकि चौंकि उठि रोय रोय देखै सायभा
स गान गाय उटत भया वायु की लहरी सेसे करतव्य तिया-
करत ताते उन्माद दशा है इहां रोइ रोइ आदि वाक्य पुन.
रुक्ति ही में चमत्कार ताते स्वयं लक्षणा वाक्य व्यंग कर-
ना तीय याहि गुरु तगन है यगन ऽऽऽऽ।।ऽऽ।ऽऽ वातोर्मी छंद है॥

त्रिवली वली नाभी कुंड लि शाला भातो यतिया
को तारं मणि माला जूड़ी तपसी कौंपे प्रीति विथा
दा में व्याधि दशा सोयं लक्षणा पादा ॥ ८५ ॥

नायक की त्रिवली लहरी है नाभी कुण्ड शोभा जल में
रंग परनहो बूड़ी तहां तियको मणिमाला ने उभारी भाव
भूषणा ते शोभा मूंदी है इहां पद प्रकाश स्वयं लक्षणा व्यंग
समय पद मांच मतकार है प्रीति ऐसी दुःखदाता जाते जू-
ड़ी तापरसों वही कांपत तन विवरता भये ते व्याधि दशा है
तोगति याते: यः तः यः ऽऽ।।ऽऽऽऽ।।ऽऽ मणिमाला छन्द है ८५॥

गाथा का दै चन्दन विय सस चन्दा गी तासम्बंधा
नागरी न लग मती पागी का चंडी दोऊ कहहु मति
नना नारा सोयं लक्षो हग मुपदहि विभागा मो ८६

मुग्धा नागिनि समकाटत चन्दन पिव सम दाहत चन्द्रमा
भनि रस लागत काहे ते ताके संग हमारो सम्बन्ध भयो याकी

सखि नागरीन संग पागी हैं काचे रसिक हौ तुमको सखा नाम कोऊ भूलिन कहौ यहाँ पद पद प्रति चमत्कार है ताते स्वयं लक्षणा पद विभाग व्यंग है सुखदाई वस्तु दुःखदाई भई ताते उद्वेग दशा है गतिललनानामो म: त: ऊँलघुन: स: ऽऽऽऽऽ।।।।।ऽऽऽ मा सम्बन्धा छन्द ॥ ८६॥

मुनिन सुसमाज भूप्रपर ह्यो कटक हटकि हठकै पितुडह्यो प्रकटत विकट प्रलापमुखंडो स्वयलक्षणा हि रसरौद्र प्रचंडी ॥ ८७॥

यज्ञ भूमि में मुनिन सहित राज समाज सुरीदस के तहाँ पतिका अपमान देखि सतीजी समाय समाग्र समाज कोहटकि पिता को डाटती भई इहाँ तन मन में परिताप प्रिपाप्रसोकोधित वचन ते प्रलाय दशा है स्वयं लक्षणा रौद्र रसव्यंग है निनसुसग ।।।।।।।।ऽ।।ऽऽ चराडी छन्द है ॥ ८७॥

गर्जेमेघा मत्तमयूराधुनिजाही ज्योंकीत्योंधामेतियसंगे रहिताही बोलेना डोलेज किसी बाल असा है हीमेपी भावोदय अस्मृत दशा है ॥ ८८॥

मेघगरजे मत्तमयूर बोलि उठे ताकी धुनि सुनते सहामिभ तियन संग धाम में, ज्यों की त्यों रहिगई यामें त्रास भावोदय है न बोले न डोले जकिसी रहिगई हीय में पीव की सुधि ताते अस्मृत दशा है मैं तिय संगे म: त: य: स: गुरु ऽऽऽऽ।ऽऽ।।ऽऽ।।ऽऽ मत्त मयूर छन्द है ॥ ८८॥

गुरुन वसत भयलज अलिलाखन हरय सदा नहित जतललाखन विनतनत्रपितन लखत मुलाखन कावसुसन्धिदशा अभिलाखन ॥ ८९॥

गुरुजन की समूह सखी तिनकीलाज देखवे की इरखताते नेत्रन के आगेते लला को सराहृ मात्र नहींटारत इहाँ ब्रीड़ा हर्ष भाव की सन्धि है लाखनबार निहारत विना तन सों मिले तृप्तिनहीं ताते अभिलाष दशा है नवसतभ सोरह मात्राजम-कयुत भगनांत अलिला छन्द है ॥ ८९ ॥

गंगा मेरो रोगयह कैसे मिटैवी वेपीकी रैना क्यों घटै विश्वदेवी गोगी गोरी सोना हि शक्ती। असा है मिथ्या भावा भासाहि चिंता दशा है ९०॥

हे गंगा मेरो रोगयह कैसे मिटाय सकोगी हे विश्वदे-वी लक्ष्मी विना पीव की रात्रि कैसे घटै गिरिजा गौरी को ऐसी शक्ति नहीं है जो मेरोदुःख हरै इहाँदेवतन सों चिन्ता अनु-चित ताते भावा भास है चिंतादशा है गंगा मेरो रोगाहि गुरु गः इरः गुरु ऽऽऽऽऽऽ।ऽऽ।ऽऽ विश्वदेवी छन्द है ॥ ९० ॥

श्रुतिकर्णा समासाते सोगी होत अचेत दशाते नखोगी अचला तन वेगवती को भावबली जड़-ता युवती को ॥ ९१ ॥

यति विरह भूतकी करतव सम दुःख दायक यामें वि-षाद संचारी ताते अचेत्त यामें अपस्मार वेगवती की तनअ-चल यामें जड़ता संचारी दुवराति जात तनखोइ देइगी यामें मरण इत्यादि बहु भावन ते भाव सबल है विशुद्धि तेजड़ता दशा है श्रुतिकर्णा समासाते सोगी अस असम प्रथम तीजे-चरणातिसोगी तीनि सगनांत पै गुरु ॥ऽ॥ऽ॥ऽऽ सम दूजेचौ-थेश्रुतिकर्णा भगनतीनि द्विगुरु ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽऽ वेगवती छंदहै ९१ इति दशदशा ॥

तियदुख दिन तेरे गये पिय आये रविसकमलफू-
लेनहीं समाये चकिचक सम सोहै व्यथा नि सान्ती
तियपिय सम संयोग भाव सांती ॥ ९२ ॥

हे तिया पीव आये तेरे दुःख दिन बीति गये पति रूपर-
वि देखि उरमें आनंदकमल सो फूला सो नहीं समात व्यथा कर्णगति
बीती ताते चकचकई सो रोक मिले ताते सम संयोग है अक-
स्मात् भाव मिटिगयो ताते भाव शांति है द्विनतंरगहै नगन
तगन रगन गुरु ॥॥॥ऽऽ।ऽ।ऽऽ सुभा छन्द है ॥ ९२ ॥

सीदतपी सुखदा लोगन चूमत एक गहो रोजन
भाग सभाहि सरूप्यह मान व्यथा रस आभासह ९३॥

पीव पै क्रोध करि दुःखदा अपर लोगन को सुखदाता
कोऊ चूमत कोऊ उरोज गहत सभा लोगन की भाग्य तहाँ
रूप सुन्दर है बहुनायक संग्रह ते रसाभास है पति सो ब्या-
मान है भाग सभा भगन गुरु सगन भगन ऽ॥ऽ॥ऽ।ऽऽ स्वरू-
पी छन्द है ॥ ९३ ॥

शोभा देखे मदन ललिताई जात छन में माला
को हेरि मगन सुतैसे कुण्डलन में हेरी ही माहिं न-
खछद क्रोधै नैन भरे है शृंगारो रौद्र रसवत लंकृताभा-
नगुर है ॥ ९४ ॥

नायक की शोभा देखे कामकी सुन्दराई छन में मात मा-
ला अरु कुंडलन की शोभा देखि मगन भई ताही समय हृदय-
में नखछद देखी तैसेही क्रोध सों नेत्र भरि आये याते नायका
को गुरुमान है इहाँ शृंगार रस रौद्र रस को अंग है ताते रसवत
अलंकार है मगनगुतैसे मः गुः नः सः तः गः ऽऽऽ॥॥॥ऽऽऽ

।।।ऽ मगन ललिता छन्द है ॥ ६४ ॥

लघुकुलजातिजावसन मैलसातिन्हैंप्रीतिजो तबहिंकरारकै करतऔरबैयहैरीतिजो हमतजि नन्दनन्दनजि भैजु द्वैरिहौजानहै असुयविभत्तयार सबलंकृतामधीमानहै ॥ ६५ ॥

लघुकुल जाति जाके वसन मलीन तासों प्रीति यह धि- ना है तब हमसों करार और और कि है अब और करणी देखि- यत है हमैं तजिजो और सों प्रीति करै तो हे नन्दनंदन तुम्हारे द्वै जीभै हमारे जान है इहाँ विभत्स रस असुयाभाव को अंगता- ते रसवत् अलंकार है मध्यममान नायका को है नजिभैजु। द्वैरि नगन जगन भगन जगन है रगन ।।।।ऽ।ऽ।।ऽ।ऽ।ऽऽ।ऽ यह नन्दन छन्द है ॥ ६५ ॥

रहोदेखीकोउवसनकचमालारामाही नहोंनी- कोलागैतुमहिंसोहातयाही यमैनासोगायेप्र- वराललिताहासताही भयोगर्वालोमानप्रिय उचितलंकारनाही ॥ ६६ ॥

बसन कच मालादि विगलित अंग में कोउ देखी ताते र- ही हमैं नहीं नीक लागत तुमको यही सुहात ऐसे चरित ना- यका के प्रतिवरणा सुन्दर सब हाल मैना गायो ताको सुनि हासमानि लजानी इहाँ लज्जा भाव हास रसको अंग ताते प्र- योन्वित अलंकार हास ते गरवकरि पतिसों मान करी ताते ल- घुमान है यमैनासो गाये यः मःनभसः गुरु यगन ।ऽऽऽऽऽ।।।।। ऽ।।ऽऽ प्रवरणा ललिता छन्द है ॥ ६६ ॥

पीसासीसादेखीबोलीलालिआर्व[illegible]बै।

झूठी मोमे माया याके साथ लेई मसखरी ऐसे करत रोजे बंची धूर्तकारी चरित्रे मानो पी गुर्जास्ती भावा भासरौद्रो बिचित्रे ॥ ९७ ॥

पीव सहित शीशा में आपनी छाया देखी ताते आम रख करि लाली आँखि करि बोली की मोमें झूठी प्रीति याको साथ राखत हौ सो मसखरी ऐसी बात तुम रोज करत हो ताते छली धूर्तकारी तुमारे चरित्र हैं यहाँ लालि आँखि करि बोलिबो आमरख मोमे झूठी माया यामें निर्वेद मसखरी जे यामें असूया साथ सुखदेखन हर्ष इत्यादि भावाभास रौद्र रस के अंग ताते उर्जस्वित लंकार तिय की आस्ती ते पीय को गुरु मान है मोमें माया या ऽऽऽऽऽऽऽऽऽ।ऽऽ।ऽऽ चित्राछंद है ॥ ९७ ॥

कलहास रोइ सजि सास ग्रहीता करछोनि। क्रोध सुख युक्त अहीता पिय मध्यमान उर्जस्ति तिया की मति उग्रता सुरस भास पिया की ॥ ९८ ॥

पीव हँसिबे में हर्ष तामें तिय रोइबो दीनता उसास सजिबो विषाद कर छुये क्रोध में असरख अहित में उग्रता यहाँ शृंगार रसाभास उग्रता को अंग ताते उर्जस्ति अलंकार पिय को मध्यम मान है सजि सासग्र सः जः सः सः गुरु ॥ऽ।ऽ॥ ऽ॥ऽऽ कलहंस छन्द ॥ ९८ ॥

सजि षोड़श मुद अन्तह कर्ता जेहि उपाय कुलकानि बिगार्ता भाव संधि तिय सकीन आई मान समाहित लंकृत गाई ॥ ९९ ॥

षोड़शो शृंगार सजि नायक पास जाबे की हर्ष कुलकी

लज्जाते जाइनस की ताते नायक को लघु मान औ हर्षत्री ड़ाकी संधि ताते समाहित अलंकार सजि षोडश अंतव्यक्ता सोरह कला अन्त द्विगुरु यह पाया कुलक छन्द है॥ ९९॥
द्युतिमान ॥

चाहो हौ हीय सो प्यारे जू तुम्हारी मायाया ना-
ताको छाड़िये जापै प्रीति की नीदयाया नारी वे पी-
पिये नारी राति वे चन्द्र लेखा [illegible] तो अलंकारो
भाव सांती सयेखा ॥ १०० ॥

अथ मान मोचन उपाय साम यथा हे प्यारे जो दयाकरि प्रीति की नीताही सया को होइ हिये सो चाहती हौ ताको न छाड़िये काहे ते नारी बिना पीव यथा राति बिना चन्द्र मन्द पीव वे नारी यथा चन्द्र बिन राति अँधियारी इत्यादि साम उपाय मान मोचन है दीनता बचनन में कोप शान्ति सो धृति भाव को अंग ताते समाहित अलंकार है म्हारी माया या म: र: म: य: य: ऽऽऽऽ।ऽऽऽऽ।ऽऽ।ऽऽ चंद्रलेखा छंद है १०१

मानन कीजे प्रिय सुनु भूले भाग भलाया हुउ
अनुकूले भाउदचंदा निशि लखि हरखी साम अ-
[illegible] परखी ॥ १०२ ॥

हे प्रिया भूलिहू मानन कीजे जब दोउ की भली भाग्य होती है तब अनुकूल रहते हैं यह पीव की सम उपाय है ताही समय चन्द्रमा उदय है राति में प्रकाश देखि मान छूटि गयो इहाँ हर्ष भाव को उदय मानिनी नायका को अंग है ताते समाहित अलंकार है भाग भलोया म: गु: भ: ल: य: ऽऽ।ऽऽ ।।ऽऽ अनुकूल छन्द है ॥ १०२ ॥

त्रिचरता कंचन सेद मालती [illegible] रिभ-

आसु वालती विपयुक्ले सुरभंगा लंकाते सवलसमा हिलसान दैहिलै ॥ २०२ ॥

नायक को मान देखि नायका विदग्धा भई सो कंचन है सेद सो मोती माल थिरता वसन आसनजरि विपथ प्रलय सुरभंगादि भूखरा इत्यादि दान दै नायका मान छुड़ावा चाहत ताते दान उपायमान मोचन है वहभाव सवन्न मानी नायक को अंग है ताते समाहित अलंकार है नजरिनः नः जः रः ।।।ऽ।।ऽ।ऽ।ऽ मालती छन्द है ॥ २०२ ॥ इतिउत्तम काव्य

वासौजाता लै कुसुमित लता वञ्जिता री थलाये सुग्रीवै राजै दशनन सुमोती नये त्रास पाये रामै सौमित्राग्रकर हनुमानांग दै लंक ग्राही या शोभा मैं दानरसवत सा शव्द सक्तीय काही ॥ २०३ ॥

अथ मध्यम गुणी भूत यथा वासौजात वालि ता वाते किहकिंदा जहाँ कुसुमित लतातर्नी थल आइ रघुनाथ जी सुग्रीव को राज दै कहे कि रावण करिकै हमारी सुन्दर तिय ने नये त्रास पाये ताके हेतु सौमित्र आगे करि हनुमान् कंग द लै लंका गांसे मेदान युद्ध करि शोभा विजय पाई राम उपमा है उपमेय यथा कुसुमित लता ता आस्यमें वास स्थान में गये तहाँ नायका की सुन्दर ग्रीव राजत आस्य मुख ने दशन नये मोती पायो इत्यादि शोभामयी दान दै राम ऐसे मित्र ने आपने अंग नायका के अंगान में दै दै लंक कटिकर मों गहि हनुमान् मान को मिटाइ दई याते दान उपायमान मोचन है राम उपमा मित्र उपमेय इहाँ शब्द शक्ति सों उपमा दृढ़ करत है ताते अपरांग है मोती नये त्र मः तः नः यगन ऽऽऽऽऽ ।।।।। ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ प्रफुल्लित लतावल्लिता छन्द ॥ २०३ ॥

छन्नन गनन गे महरन कलिका नलनि प्रफुल तय

निधनि अलिका तियिधनि जुठे प्रभेद मन अरूढ़ है अरथनतर संक्रमित अगुढ़ है ॥ २०४ ॥

सगा सगा गनत पहरन बीति गये कलिका कहे सम्पुटित मानिनी बनी रही है कमलनी नायका द प्रफुल्लित प्रसन्न हो तो भ्रमर नायक धनि होइ जो अभेद पर आरूढ़ है उतो तिय पिय दोउ धनि होउ नायक सखी को मिलाइ लियो सोई मनावत ताते भेद उपायमान मोचन है कमलनी कमलनी को अर्थ नायका में मिलि रह्यो ताते अर्थान्तर संक्रमित अगूढ़ गुणी भूत है ननगननगे ॥॥॥ऽ ॥॥॥ऽ प्रहरन कलिका छन्द है ॥ २०४ ॥

भानु उदै दिन सब गात [illegible] बरबैनन मन गाउरि भेद लखाय मान गहे जनु बिन तियजन मगवाय व्यंगात्यंततिरिसकृत अगुढ़ कहाय २०५

प्रभात ते दिनगयो रात्ति आई आपुके बचननेमें मन के भेद जानि पाये ऐसा मान किहे हो मानों बिना तियेजन्म गवाइ हो व्यंग की फिरितिय के लगजाउगे इहाँ व्यंग के अर्थ वाचक अर्थ छाड़ि दियो ताते अत्यन्त तिरिस्कृत्य अगूढ़ गुणी भूत है नायका सखी को मिलाइ लियो सोई मनावत ताते भेद उपायमान मोचन है भाव १२ दिन ७ धन इसमात्रा की बरवा छन्द है ॥ २०५ ॥

किमिवचन कहे गहे रसना भने अचरज यह जीवनो रहनो तनै ।हतप्राण द राजित दृग दे परो मरि तुलय प्रधान प्राण रूसे लगो ॥ २०६ ॥

बचन कैसे कहे जीभ को तो मनुपकरे है याके तन को जीवन रहनो अचरज है काहे ते प्रधान प्राण नायक रूसे है

ताते भरगा तुल्य लागत है हारि माने नायक के पांवन में रग दिके नरमित है क्षमा चाहत ताते प्रगान उपायगान मोचन है नायका के प्राग नायक को कहे यह व्यंग वाचक को बराबरि है ताते तुल्य प्रधान गुणी भूत है न भागा क्रमे नगे न: न: र: स: ल: गु: ॥।।।ऽ।ऽ।।ऽ।ऽ अपराजिता छन्द है २०६॥

व्यग चित विनय वैन ह्वै दीन बोले करन पुरुष रे पांव में शीश कोले नेम तजि मित्र चित्त बोमह्व वा मते प्रगात संदिग्ध अपराध वा काम ते ॥ २०७ ॥

मानिनी जानि नायक को मन व्याकुल ताते बिनती करत में दीन ह्वै वचन बोलत नेम तजि हाथ जोरि वाम के पांवनमें शीश धरे याते नायक को प्रगात मान मोचन है प्रगातहो नो अपराध ते वा काम ते सक निश्चय नहीं याते संदिग्ध प्रधान गुणी भूत है बीसह्व मात्रा नेमतजेमित्र छन्द है ॥ २०७॥

रैनि भासनभ चन्द वरत में मेघ व्याल विय को वरषत से वाच सिद्धि अग औषध तिय को ओट पान रस पेच्छह्व पिय को ॥ २०८ ॥

राति में चन्द्रमा की प्रकाश नभ में वरतसी है अरु मेघ रूप व्याल विष को वर्षत है इहां मेघ के जल को विष व्यंग में कहे सो विष जलह्व को नाम है सो वाचक ही सो अर्थ सिद्धि भयो याते वाच सिद्धांग गुणी भूत है इहां प्रवत्स्यत्प्रेयसी नायका वर्षा के बहाने विरह की औषधि ओट रस पान चहत ताते पीव को उपेक्षामान मोचन है रैन भासग: भ: भ: ऽ।ऽ।।।ऽ।।।।ऽ चन्द्रवरतम छन्द है ॥ २०८ ॥

रिस हिना भजय सेज पिया को स्फुट लता ल-

खगुपेच्छ तियाको विलखि चौंकि झझकी हर-
हरयानी सद्गुत पांव धरि पीललपटानी ॥ २०९ ॥

रिसते पीवकी सेजपर नाहीं जात ताही संसय मुकुलित लता पर नजरि गई तैसे कामोदीपन सो चौंकि झझकी अके-ली ताते विलखी पीव लगी चही जानि हरखी जलदी पांवध-रि पीव के गरे लपटानी ताते तिय को उपेक्षा मान मोचन है इहाँ कष्ट सो अर्थ पाइये ताते असफुट गुणी भूत है नाभजय ।।।ऽ।।।ऽ।।ऽऽ दुतपा छन्द ॥ २०९ ॥

चपला चमकि मेघ गरजे घमासान इतचाति-क सुकारि अव राखि हो मान पति सोनभजिते म-लिन दीप की अंस क्षण का कुशल होतय प्रसंग-विध्वंस ॥ २१० ॥

चपला चमकि मेघ घमासान के गर्जे औ चातिकपीव पीव पुकारी ताको सुनि सखी कहत की अव मानु राखि हो। भाव की अव मानु ना रहैगो याते काकु है दीप ज्योति मली-न अर्थात् भोर भयो तू पीव पास नहीं गई अव कुशल मा-नु ना रही गरजनि सुनि मान छूटि गयो ताते प्रसंग विध्वंस मान मोचन है चाति चारितगान ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ दीपकी छंदहै२१०

नवल लिय सुन्दरि दलै सजे फूलि कै त्रिविधि बह कोकिल धुनै लता झूलि कै करुणा सुनु रारि यह काल अवतंस है विपिनि तिलको मधु प्रसंग वि-ध्वंस है ॥ २११ ॥

नवीन पल्लव लिहे सुन्दर वस फूलि रहे हैं त्रिविधि पवन बहत लता झूलि रही तापर कोकिल पुकारत यह जन्म

कालहै वसंत ताते रारि ना करौ यह सुनतही मान छूटो ताते प्रसंग विध्वंस है अवतंस समय ते बसंत व्यंगासो वाचक ते सुन्दर नहीं है ताते असुन्दर गुणी भूत है न मनु रारि न: स: न: र: र: ।।।।।ऽ।।।ऽ।ऽऽ।ऽ विपिनि तिलक छन्द है २२१
इति मध्यम काव्य ॥

स्वात्या अपि प्रेम अमीपपिहा तीला भगालान लौत पिहा पीकी समिता गुणा काम दुहा सिक्षा मन मोटन कान सुहा ॥ २२२ ॥

अथ गुणालहाँ वोज प्रसाद माधुर्य्य वृत्यानुप्रास में कहि आये हैं समिता गुणा ओसी कर्स यथा शिक्षा स्वाती को मेघ पीव ताको प्रेम जल पपीहा नारि को लाभको समय बीति गयो तौ सालन पियास सहनो परी पीकी समिता गुणा काम धेनु है यह कछनूति प्राचीनन की नहीं है गुणते समिला है ताते समिता गुणा है सिखावन ते सखिन को शिक्षा कर्न है मिलाभ ससा ऽऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ मोटनका छंद है २२२॥

हँसी तौ कांति गुणा मुकुता तेरे हेरे मगन सुसुता जाचैता देहु दरशा दिखा मानो प्यारे हरि मुनि सिख ॥ २२३ ॥

तुम्हारे कान्ति गुणा मुकुता पै वृषभानु सुता हँसी है जो देखने ही मगन रहत ताने जो याचना करै ताको दरशा दिखा दीजे हे प्यारे हरि मुनि वै सिखावन मानो यातें शिक्षा कारी सखिन को है हँसी मुक्ता कांति दरशादि सुन्दर पदन ग्राम्य रहित ते कांति गुणा है मगन सुभ: गु: न: स: ऽऽ।ऽ ।।।।ऽ हंसी छन्द है ॥ २२३ ॥

बास बाम सा बाम स बाम पी षिनती बिनती

सुनियाम पूर्णेन्दु निशापै छाइ गुण उदार तो सांचो पाइ ॥ २२४ ॥

बाम शिव बाम भाग में बाम नारी सहित है हे तिया तू बिना पीव कीस बाम सहित कुटिलता हंसि तरते मेरी बिनती सुनु जब पूर्णचन्द्र राति पै छाइ रहत तब सांचो उदार गुण राति पावत है इहां समास करि अर्थ कठिन है ताते उदारगुण है सखिन को विनय कर्म है पूर्णचन्द्रह कलाचोपाईछंद है २२४

सूरे अम्भोज मगन लसिता तैसे कंजे भ्रमर विलसिता त्योंती पीव्यक्ति गुण प्रणाय मो प्यारेती हेरिसुनि विनय मो ॥ २२५ ॥

जैसे रवि सों कमल मगन रहि शोभत तैसे कमल पर भ्रमर बिलास करत तैसे तिय पिय को प्रकट गुण है जो परस्पर अपनपौं राखै ताते हे प्यारे तिया की ओर हेरो यह मेरी विनती सुनो यह पीव प्रति सखिन को विनय कर्म है सहज ही सें अर्थ समुझिये ताते व्यक्ति गुण है मगनलगि मःभःनः लः गः ऽऽऽऽ।।।।।।ऽ भ्रमरविलसित छन्द है ॥ २२५ ॥

सुधा झूनी वाणी प्रणायमन सा तैसे त्रिगुणा सा चकोरी मे आखी चतुरगुणा पावै चित्तगगन सा मयूरी तेमधा प्रकृति गुणा नाचे मेघ तन पे मनावेपी प्यारी सतगुणा समाधीलो मगन पे ॥ २२६ ॥

अमृत से झूने मीठे बचन अपनपौ ते त्रिगुणी मन में प्रीति चन्द पै चकोरी ते चौगुनी नैनन की चितवनि लगन ते पचगुनी चित में लगन श्याम तन मेघ पै मयूरी ते पचीस गुणा अधिक सुखि नाचत है समाधि ते सौगुणा अधिक मगन पीवको मनावत है याते तिया को मनावन है अधिकते अधिक कहबे ते समाधि

गुरा है यमंग साते से य: म: न: स: त: स: ।ऽऽऽऽऽ।।।।।ऽऽ।।।ऽ सुधा छन्द ॥ २१६ ॥

मिलि निशि लालसा यश शशी मधु कोकिल का तिमि पितिया मनावन सनेह बढ़ो दिलका ब- सन सुगंध लाइ तन मालहि फूल चुनै सुकवि परा- थैलघु समास मलेख गुनै ॥ २२७ ॥

यथा शशी मिलबे की लालसा चन्द्रमा को यथा कोकिल मि- लबे की बसन्त को तैसे पीव के उर में सनेह बढ़ो तिय के मना- वन को बसन में सुगंध लगाय माल हेतु फूल चुनत इहां परा शब्द पर समास ताते लघु समास श्लेष गुरा है औ पीव को मनावन है लालसा यश शशी ।।।ऽ।ऽ।।।ऽ।।ऽ।।ऽ कोकिल छ- न्द है ॥ २२७ ॥

सुनै तिन जौ लग मैं बरगी गयंद गती अब है हरगी मिला [illegible] सुनै समध्य समासस लेख गुनै ॥ २२८ ॥

मिलबे की बात जब लग मैं बरनन करी ताको तैं सुनबे नहीं कियो पन मिलबे की चाह ते मन्द चाल तजि हरिणी की चाल चलती है ऐसी आतुरता जो स्वरो भरे की गमनियाता को नहीं है यामें तिय की मिलनि अरु मध्य समास श्लेष गुरा है तिन जौ लग पै जगन लघु गुरु ।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ हरणी छंद २२८॥

सकल निशि गौरिसै पिका लखि कर अंगुली समुद्रिका हग मन हरिगो मदेखते गुरा समगुरु मा- मास लेखते ॥ २२९ ॥

सब राति पीव को रिझावेही बीती सहित गुर रीति की-

अँगुरी देखतही हग मनु सब हरिगयो आपही मिले यामें बहुते शब्दन की एक मेंसमास ताते गुरु समास श्लेषगुरा पीको मिलन है तानिरि जुगैल: न: स: ज: गु: ।।।।।।ऽ।ऽ।ऽ सखुद्रिका छन्द है ॥ २१९ ॥

फिरि फिरि फिरि फेरे चित पीको छिन छिन। छिन दाढ़ै मानही को पुट दिन दिन दै दूना नमायो। पुनरुक्ति प्रतीकासे भुकायो ॥ २२० ॥

बारबार पीव को मन फेरे ताते क्षण क्षण प्रति मान हिये में बाढ़ि गयो दिन प्रति कुवचनन की पुट दै दै दूना करि दिहे। अब नाहीं खबात यह तिय को झुकाइबे सखिन को कर्म है एक शब्द बहुवार परो अरु अर्थ सुन्दरताते पुनरोक्ति प्रतीका स्युन है नानमायो न: न: म: य: ।।।।।।ऽऽऽ।ऽऽ पुरछन्द है ॥ २२० ॥

कटिसिंह [illegible] टसी लटसी मणि। [illegible] पटशीश शृंगारजरी जटसी जट- सी [illegible] वाकटसी ॥ २२१ ॥

ऐसन में कटिसिंह कैसो जो लटकी समान नई जात। [illegible] सहित मणिमाल उरझै है जरीजटित पट शीशलौं शृंगारे है सब भूषण जटित बिना लाल के मिले सबबाकठ [illegible] यहां पदादि अंत एक शब्द जो है बार परो ताते सिंहा- वलोकन यमकालंकार को भेदहै तियको शृंगारहै शशि- गार [illegible] तोटकरीति गहे सिंहविलोकित छंदहै २२१॥ इति [illegible] ॥

[illegible] बिना सुपीव तजीन रूपसे निका-

सिजीव विछोह माहिं हाइ संसदूरव स्वनिष्ट कारुणा विनाविभूष ॥ १२२ ॥

अथ करुणा विना पीय जराजरै लगो सो कांही ना- रूप सो जीव निकारि लेइ पीय को बिछोह हाइ देव मा को ऐसे दुःख यामें अलंकार रहित स्वनिष्ट करुणा रस है जरै- लगो ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ सेनिका छन्द है ॥ १२२ ॥ इतिगुणा ॥

नित चित्त चल धृत नाहिं कलपपलक। लखिय- दहरा कुसुमन तलपकलक भ्रम विरह प्रलय घन सदन झलक सरिसम करुणा हउत मदन फलक ॥ १२३ ॥

अथ गुणांत यथा नितही चित चंचल धीरज नहीं मक पलक कलप सम बीतत औरहो शृंगार फूलन की सय्या दे- खि उरमें चालक होत मेघ में चपला चमक देखे विरह ते प्रलय को भ्रम होत याते विरह भयभ्रम है कलप पलक तलप कलक याते सनसरि उत्तम गुणान्त है कुसुम नपुनो रह ।।।।।।।।।।।।।।।।।। चलधृत छन्द है ॥ १२३ ॥

भारत भौन लागि शर भूषण तन भरि में दुहि- विहाल बाल विरहाय विषम सरिमें सोपरनिरद- खि कारि व्यग्र वारुणा हरि में हो वर बंश पत्र यह वा- चहु सुनजरि में ॥ १२४ ॥

वियोग शत्रु भौन समरभूमि भूषणावान मे नव तन में लागत विरह विषम सरिता में विहाल है बाल बूड़ी है तुम उत्तम बंश में हो यह पत्री सुन्दरनजरि ते बांचो याते नायका की पत्री है ताको देखतही व्याकुल है हरिने करु-

भई ताते परस्थिर करुणा रस है भरि मैसरि मैया मैं तीनि चरणा की समिता ताते विषम सरि उत्तम तुकान्त है भगण भौन सा गि ऽ।।ऽ।ऽ।।ऽ।।।।।ऽ वंशपत्र छन्द ॥ १२४ ॥

निज भजती गरुड़रत पन्नगी सीतिया तुमवि नवाढ़ि कष्ट सरिताहि साभीतिया करुणा विल म्ब है निठुर कौन तौ प्रीतिया कहत हम जाव तौ रहन मोहिं प्रातीतिया ॥ १२५ ॥

पन्नगी सीतिया वियोग गरुड़ के डरते आपही को भज ती है बिना तुम्हें कष्ट सरिता बाढ़ी तामें बूड़िबे को तिया डरती है वाके लगाजावे में बिलम्ब जनि करौ जो निठुरता करत हौ तौ यह कौन प्रीति है कहत हौ कि हमजाव सोओ जैहोना तौ मोको यह परतीत की महनारही वा तुमनाजैहौ यह सखी को बोरहनो है इहां तिया शब्द चारिहु चरण में ताते कष्ट सरि उत्तम तुकांत है निज भजतीग ।।।।ऽ।ऽ।।।ऽ।ऽऽ।ऽ गरुड़रुत छन्द है ॥ १२५ ॥

गेडुत मध्य करील पियारी निजजय पायस जोगतियारी मैसुलजाय पती - मक्यारी महुह सिबाल स्वपनि सटारी ॥ १२६ ॥

करील मध्य कुंज रोज गये संयोग समय तिया आपनी जय पाई तब लज जाय नायक मुसक्यानो याते स्वनिष्ट हास रस है नारी हँसी तामें प्रविश्व हास है प्यारी क्यारी पद ते असंयोग मध्यम तुकांत ह्वैगे मुलजाय ऽ।।ऽ।।ऽऽ १ २ निज ।।।।ऽ।।ऽ।।ऽऽ २ ४ द्रुत मध्यका छन्द है ॥ १२६ ॥

हगापल निष्ट परमेश्वर भालु कीश ह्नलै

रथ वाजि पालकी साजत जै गयंद हू चै हनुमान पीठि मुस्काय चढ़े प्रधान ह्वै लखि देवपुंगव वैं कलहास नारि हू कै ॥ १२७ ॥

छगपालन के इष्ट परमेश्वर भानु कीश संग में लिये रथ घोड़ा पालकी गजादि राज साज तजि लंका पयान समय रघुनाथ जी मुस्क्याय हनुमान की पीठ पर चढ़े यामें स्वनिष्ठ मंदहास है ताको देखि फूल बरसि देव नारी कलहास करती यामें परनिष्ठ कलहास है नक्षा लौं चरनन में तुकांत तामें सिस्वर मध्यम तुकांत है साजत जै गय ॥ऽ।ऽ।ऽऽ॥ऽ।ऽ।ऽऽ दिगपाल छन्द है ॥ १२७ ॥

सोहन वनि नारी सखिन शृंगारी नरव शिरव भूषण निरमल्ला गुण रूप हि माती दृग कर नाती वसन जरी जरि उज्वल्ला देखो प्रिय याही दिशि व सुधाही भुवन तिया असदुर मिल्ला भेंटत उरजानी प्रिया मुसक्यानी हँसी तालदय सब वाला ॥ १२८

सोहन नारी बने निर्मल भूषण नख शिख सखिन शृंगारी गुणरूप माती नेत्र कानादि अति सुन्दर जरी के उज्वल वसन धारे सखी कहती है प्रिया देखो ऐसी तिया भुवन में नहीं मिलि सकत है ताको मिलत में प्रिया जानी मुसक्यानी तातें स्वनिष्ठ अतिहास नारी दै सब सखी हँसी यामें परनिष्ठ परिहास है जहा मिला बालादि ने दुर्मिल मध्यम तुकान्त है दिशि १० वसु ८ भुवन १४ बत्तिस मात्रा है गुरु अंत दुरमिला छन्द है ॥ १२८ ॥

करि दो हाथ कोदण्ड कारण द्विजदेव हितर्थ

मनउमंग रघुवीर को बढ़ह्सुरसमर्थ बढ़ह्सुर समर्थ ह्मि [illegible] रुंडुपटि प्रचराड डिगतन खंडित्शिरकर जुभतहरिपुर संतालभि तसपादह्मतरि देवर्थ्यपसरबह्‌ह्विजजयत्य मृह्नुनिकारि ॥ १२९ ॥

ह्विजदेवन के हित अर्थ रण में कोदण्ड को दोऊ हाथन में करि खैंचतही मन में उत्साह रघुनाथ जी के भयो ताते असुर सामर्थन को कैसे बधकरत कि अकही वारा अमित निशाचरन के उरनाथि जात शिर बाहु खंडित ह्वै गयो ताहूपर डिगतनहीं प्रचराड ह्वै रुंडपरत है जूझतही हरिपुर जो सन्तादिकन को अभिलनाही मिलततांही पदको अधम तरिजात ताको देखि देवऋषि अप्सरादिजादि अमृतधुनि करि जयजयकार वदत हैं इहां देवन पै दया वीर युक्ति देवे में दान धीर समर ते युद्ध वीर रस मुख्य है देवद्वितर्थ ह्सुर समर्थ पदप्रथमाक्षर में एक ह्सुर नहीं ताते आदि अमित सुर अधम तुकांत है दोहा को आदि कै ताये दंडिका करन ह्विज है गुरु चारि लघु तीनि आवृत पद में दोहा १३ ११ दंडिका ऽऽ।।।।ऽऽ।।।।ऽऽ।।।। अमृतधुनि छन्द ॥ १२९ ॥

जगत सब ओधै को धायो भूपागारे मध्य मिल चनै सौ गें मांगै मोद्‌ धारे प्रभुजनम में नंदी सुदैके सन्माने नृपति मनमोदै सो सो सबै धनानै ॥ १३० ॥

अवध में भूप धाम को सब जग धायो तिन मधिलुब्धे ह्वै मांगन हेतु आनन्द ते गये भूप सबको सन्मान करे प्रभु

जन्म में नन्दी सुख आदर करे भूप के मन में उत्साह नहीं ताते सर्वस धन दान करि दियो याते दान बीर है यहाँ भूमौरूप स्वर नहीं ताते मध्य अनमिल स्वर अधम तुकांत है मेरी गे मागे सो ।।।।।ऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽ मंदीमुखी छन्द है ॥ १३० ॥

कै राम दाया आजु दै माल सुग्रीव आजु उत्साह कै श्रीकन्त बालीत मे लो अन्त ॥ १३१ ॥

श्रीराम दाया करि सुग्रीव को माला दे पठायो उत्साह करि श्री कंत बालि मारि जन को पाय्यो यामें रणबीर है श्री कन्त लो अन्त श्री लो में एक सुर नहीं याते मध्य अनमिल सुर अधम तुकांत है तमेलो ऽऽ।ऽऽऽ।यह छंद है १२ द्विबीर ॥

लै धनु राम सक्रोध बैन घने घने खैंचित हां-सार देखि भै गरले रने आनन है बिबसा तजि जने जने रासस बेग भगे सजे सुगने गने ॥ १३२ ॥

अथ रौद्र रस श्री राम धनुष ले सक्रोध घने घने बैन बोले खैंचि शर छांड़े तिनको देखि गरल की भय मानि रण में गनती बाले रासस जने जने बिबस है मुख तजि आनन है बोलि बोलि बेग सो भागे याते भयानक रस है रघुनाथ जी के क्रोध ते रौद्र रस है मुख्य जने जने घने घने एक शब्द बार ते बिबला तुकान्त है भगे सजे सुग भः गुः सः नः जः गुरु ऽ।।ऽ।।ऽ।ऽ।।ऽ।ऽ चित्तहंस छन्द ॥ १३२ ॥

मधु मार पात द्रुम देखि लाल बहु रासकाल बिन देखि लाल ॥ १३३ ॥

बसंत में लालि दल मारन ते बसन की लाली देखि

आठोयाम कालअस लागत विना लाल के मिले याते भया नक रस लाल लाल दोऊनें ताते जामक तुकांत है छजासः जः ॥ऽ।ऽ। मधुमार छन्द है ॥२३३॥

मेघनाद पूरौंलरवान रविइन्दु मदहरवान। दशमुख भूप पूरौं बलवान रुद्रवराचलवान भुवननि एक पुरी सुखदान निशिचर जूमि लालाट कटि हरि शर अन्तकवान तालंकिनि रंडा भई विभसहोलनकवान ॥ २३४ ॥

मेघनाद पूरौंवर पाये रविइन्द्र को मदहरणाहारो दश मुख भूप पूरौंबली ताकी पुरी सुखद भुवन में एकही है तहाँ हरि के शर लागे शिरकटिकटि निशाचर जूझे ललु चरा भये ताते संकिनी रंडा भई देखे घिन लागत ताते विभत्सरस है यान वान सब तुक में ताते लाटि तुकांत है प्रथम चरण पन्द्रह कला दूजे १२ तीजे १५ चौथे ११ पंचम १४ पीछे दोहा दे ताले किनिरंडा छन्द है ॥ २३४ ॥ इतितुकांत विभत्सरस॥

देखत अद्भुतरूपतातको विसमित मन भा रामसात को पूरौंपरांत कहत जाकला उत्तमकवि हरियश उज्ज्वला ॥ २३५ ॥

अथ उत्तम कवि अद्भुत यथा जैसा कहत नहीं बनत ऐसा अद्भुत रूपपुत्र को देखि कौशल्या जी विसमित भई कि जाको उज्ज्वल यश वालमीकादि उत्तम कवि गावत कि पूर्णावतार परब्रह्म है जाकी कलाते सब जग है विसमित होवेते अद्भुत रस है हरिको उज्ज्वल यश कहे सो उत्तम कवि है पूरौंपरांत गनांत पन्द्रह कला उज्ज्वला छन्द है ॥२३५॥

मारेज्यों सिंहिका को छलत कि जल में साहस

करी नाघे सामुद्र मार्गानि नित रा सुरसा को मद हरी वैदेही बोधि लंकैं दृह्नि फिरि मन विस्मै तब धरी गावै देवा सु कीर्तीकवि सवि मुख जे कार उच्चरी ॥ १३६ ॥

जल में छल तकि साहस करि यथा सिंहिका को मारे तैसे समुद्र नाँघत में सुख मारी प्रवेश करि सुरसा को मद हरे जानकी जीको बोध करि लंका भस्म करि फिरि समुद्र नाँघे तब हनुमान जीके मन में विस्मय भई याते स्वनिष्ठ। अद्भुत रस है ताको यश देव कवि सुखते उच्चार जयकार। करत देव यश गाइबो मध्यम कवि है मारगानन तम ऽऽऽ ।ऽऽ ।।।।।ऽऽ ।।।ऽ सुरसा छन्द ॥ १३६ ॥

तपै करत उक्ति उद्ध दृग है मनो खिंचत गंग धारहि गहे भगीरथहि क्योंकवी लघु कहै जलो-द्धतिगती सुजासु यश है ॥ १३७ ॥

तपस्या करत में ऊपर को नेत्र किहि ताकी यह उक्ति है मानो गंगधारा को गहे खैंचत है जाको जल मज्जन ते। ऊँची गति देत सोई जाको यश है ता भगीरथ को कैसे कवि लघु कहै दृष्टि ते गंगा जी को खैंचबो आश्चर्य ताते अत्युक्ति अद्भुत रस है मानुष यश गायबो लघु कवि है जा-सुजस- ।ऽ।।।ऽ।ऽ।।।ऽ जलोद्धति गति छन्द है ॥ १३७ ॥

प्रभाव देश लौ लगे जुराज उदार रूप से निका सुसाज समित्र मंत्रि कोटकोस पाय सुस्वांग राज्य लै रसै सुमाय ॥ १३८ ॥

जाराजा को प्रभाव देश भर में जाँवै उदार रूप होइ ।

चतुरंग सेना को साज होइ सुमित्र मंत्री कोट खजाना राज्य सुख के सब अंग पाइबो माया रस है राज्यांग है लगौजुरा-जा।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ। रूपसेनिका छन्द ॥ २३८ ॥

विषैसुखलोक सबेन्द्रिय याहि असारहि त्यागि सुसारगहांत गुरुश्रुतिवाक्यगहे सति चित्तय काग्र किये दुखलौ सुखमांत सजीवन मुक्त हरा सुछुटे वसुयाम समाधि गहे सियकांत समादि मुमुक्षुत त्याग विवेक सुसाधन चारि कहे रस शांत ॥ २३९ ॥

त्याग विवेक समादि षट् मुमुक्षुता इति चारि साधन शान्त रस में कहे हैं यथा लोकन के सुख ते वैराग्य सो-त्याग है असार जगतजि सार ईश्वर ग्रहण सो विवेक है मनादि वासना त्याग सम है नेत्रादि को रोकनो दम है वि-षय सें पीठि देना उपरति है दुःख सुख समान तितिक्षा है गुरु वेद वाक्य में विश्वास श्रद्धा है एकाग्र चित्त समाधान है इति समादि षट् संसार बंधन ते कब छुटिहौ यह मुमुक्षुता याते दुःख छूटे आठ याम समाधि में रघुनाथ जीको गहे रहे सो जीव न्मुक्त है यह शांत रस है वसुजा आठ जगनजामें होइ ।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽ। मुक्तहरा छन्द है ॥ २३९ ॥

हरिनयमालिनी निज भयोहै सखिसंग लै प्रिया। दिग गयोहै सुमनहराल ग्रीव करदीनी करत। शृंगार हास सखिकीनी ॥ २४० ॥

हरि आपही मालिनि है सखि संग लै प्रिया जी के दिग को गये फूलन को माला हाथ में लै ग्रीव में शृंगार करतही सखी हंसी इहां शृंगार हास को कारण है निज

भयो ॥।।ऽ।ऽ।।ऽऽ नयमालिनी छन्द है ॥ २४० ॥

कुलदीपकरिबोध मुनिगेलयरा सक्रोध-
कपिशोक मनवाक्र अगारौद्रकरुनाक ॥२४१॥

रघुनाथ जी बोध करि दियो ताको मुनि नयगा लान्-
किष्किन्धाको सक्रोधित गये तिनको तकि सुग्रीव के मन-
वचन चारि कैं शोक बढ़ो यासें रौद्र रस करुना रस को कारण
है मुनिगेल स: न: गु: ल: ॥ऽ॥।ऽ। दीपक छन्द है ॥ २४१ ॥

सजिकरालौपिनाको रघुबीर खंडिताको
सचकि दिगीसताके अगवीर अद्भुताके २४२॥

ऐसा चढ़ाय कान लौं खैंचि पिनाक को रघुनाथ जी
खंडन करि डारे ताको चकित है सब दिगपाल ताकत हैं या
में वीर रस अद्भुत को कारण है सजिकरा सगन जगन द्वि
गुरु यथा ॥ऽ।ऽ।ऽऽ दिगीश छंद है ॥ २४२ ॥

सुलखेलयरा जु घायक गिरिगेतकि रघु-
नायक इमिकारण रस भ्यानक बिभसाग
कहि भयानक ॥ २४३ ॥

लषणलाल को शक्ति को घाव देखतही रघुनाथ जी
गिरि गये इहां विभत्सरस भयानक को कारण है सुलखे-
ल सगन लघु है ॥ऽ॥ याको दोहरो पद है नायक छंद है २४३

राक्षसजूझे भामस्वै सिरमनि बंधो छोरि
चवै कीस हसै भोग्यो अघ मे हासक करुणा
नारि समे ॥ २४४ ॥

लंका में राक्षस जूझे तिनकी नारी शीश की बंधी म-
नी छोरि छोरि रोदन करती तिनको देखि बानर हसत हि-

आपनो पाय भोगो हास करुणा ते विरोध है इहाँ शत्रु- की नारी पै करुणा देखि कपि हँसत समय ते अविरोध है ताते हास को कारण करुणा रस है भामस्व भः मः सः ऽ॥ ऽऽऽ॥ऽ मनि बन्धो छन्द है ॥ १४४ ॥

लगाते मेहिकाते को न राखे शुद्ध गाते को
ससुरवा स्त्रो न प्यारी है विभत्सशृंगारो नारी-
है ॥ १४५ ॥

नवोढ़ा को पीव उर में लगावत देह दुःख ते गात शु- द्ध नहीं राखत ताके रति जख को रुधिर देखि पति को प्रि- या लागत विभत्सशृंगार ते विरोध है रुधिर में विभत्सरति में शृंगार मुग्धारति क्रिया समय ते अविरोध है ताते विभत्स शृंगार को कारण है लगातेमेल: गुः तः मः ।ऽऽऽ।ऽऽऽ सु- हृगा छन्द है ॥ १४५ ॥

सजि सेन भट शरचाप गहि कर खड्ग खैंचे
चमचमाति खरदूषणादि त्रिशिरा सम करि स-
मरचुटारो विषम पाँति प्रथमे धनुष हरि के धुनि
सुनि सुनिनसभाजे निशिचराति अरि बीर रस भ-
यना समय करि परशु धर [illegible] रताति ॥ १४६ ॥

त्रिशिरा सम जे हठि करिके समर करै ऐसे विषम जो धन की पाँति आगे करि सेना सजि खरदूषण चले धनुष बाण गहे तरवारि खैंचे चमचमात आवत देखि रघुनाथजी प्रथम धनुष टंकोर करे ताकी कठोर धुनि सुनतेही भयमानि निशाचर अति वेग ते भागे वीर रसते भयानक ते शत्रुता है इहाँ समय करिके शत्रुता नहीं परशुराम से वीर जनकपुर- में निर्स्मित भये याते समय करि वीर भयानक ते बैर अभाव

है मुनि मुनिन समाज स: न: स: न: म: भ: ज: ॥ऽ।।।।ऽ।।।।ऽ।।ऽऽ।।।ऽ। मरहठा छन्द ॥ २४६ ॥

मोहित देखि कोप धनु क्यों दल परिचोपाइ रूप षोडश कल हरि यह परशुराम विस्मय अद्भुतारि नहिं रौद्र ससैया ॥ २४७ ॥

प्रथम देखि मोहित ह्वै बोले मेरे गुरु को धनुष क्यों तोरे यों कहि परशुराम क्रोध करे पीछे परचौपाय की षोडश कला पूर्णावतार रूप है ताको देखि मोहित भये और विस्मय भई रौद्र अद्भुत सो वैर है इहाँ समय ते वैर को अभाव है षोडशकला रूप चौपाई छन्द है इति रस ॥ २४७ ॥

भागलया रामतो को चित्र पदारथ चारी गूढ़ स्वभाव सुने बासे भइ रोषित नारी ॥ २४८ ॥

अथ चित्रकाव्य तोको विचित्र चारहु पदार्थ परन्तु तेरे आशय में न्यारो प्रकार है यह समुझि नारी रोषित भई तातें गूढोत्तर चित्र है भागलया ऽ।।ऽ।।ऽऽ चित्र पदा छन्द है २४८

कारि को गैल तातीश व्यालहा कौन लखौ या रास सैना हि का हीक वाइ प्रश्नोत्तर नारिका ॥ २४९ ॥

मारग ताती को करत हाथी को कौन मारत लक्ष्मी को पति कौन रामकी सेना में है तिनको का कहौ इति बहु प्रश्न को उत्तर एक हरि रवि सिंह विष्णु वानर इति बहु प्रश्नक उत्तर गैल ताती गु: ल: त: त: ऽ।ऽऽ।ऽऽ। नारिका छन्द ॥ २४९ ॥

धरणि धराइ को असुर सात को जगत प्याग को नव भया रवि चढ़ि जाहि नाहि काहि काहि तें कहत

कौन भाघर कया निज भजि आनंदै सजि सुसाक्ता। सिद्धिदय कौन आ... यहि कवि भाखि श्रृंखलगता गतै युत समस्तव्यस्ता। ...तया ॥ १५०॥

धरणि धरा को अद्रि असुरन की माता को दिति जग में प्यारा को तन नवा भया को नया इति गत रवि काये चढ़त यान नाहीं कहि काहनत तो काको कहत तदि घर में अभा काहे कीदिया इति आगत आनन्द ते निश्चय करि साक्त काको भजत जो सिद्धि देत याद्रित नया यह श्रृंखलागतागत समस्तोत्तर है निज भजि आनन्दै सजि सुनः जः भः जः त्रिकलादि गुरु सः जः सः ।।।।ऽ।ऽ।।।ऽ।ऽ।।।ऽ।ऽ।।।ऽ याद्रित नया छंद है १५०

मिले पौने गामन्त सर गय का खाय जीवो मृता है सही वानी कौनी जगत जय पाये कहै कहिता है समस्तो व्यस्तो उत्तर युग गुगांताहि सवौं गता है कही छन्दै नामै कवन यहि को मेघवि... र्जिता है ॥ १५१॥

सरग में पवन मिलि कौन गमन करत मेघ का खाय जीव मरिजात त्रिस सांची वाणी कौन है सुर जग में जय पावत ताको का कहत जीता या छन्द को का नाम है मेघ विस्फुर्जित दुइ दुइ अक्षरगत सुनः समस्त ताते व्यस्त समस्त गतोत्तर चित्र है पौन गो मन्त सर गय त्रिकलात गुरु ।ऽ पौन गुरु मः नः सः रः रः गुः यः ।ऽऽऽऽऽ।।।।।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ मेघ विस्फुर्जिता छन्द है ॥ १५२॥

काफूलों में सारस्वपति शंको गामंती नामांगैरी तीय वरत शृंपे कातंती मासे मे के वार जमन भौ मै का गंती क्यों कासी का भोर मडु प्रिय लागी वासंती १५३

फूलन में सारका है वासपति संग कौन जाती मती तिय्या का ना मांगेगी सवती इति गत दीप में का बरत बाती मशीना में के दिन तीस जमन संगर को का कहत तिसंवा कामी भोर कासो जानत वाती संमधुरितमें प्रिया का लागत बासंती अथ-अक्षर कंकनाकार चित्र है मंतीना मांगेगी मः तः नः मः गुः गुः ऽऽऽऽऽ ।।।।ऽऽऽऽऽ बासंती छन्द है ॥१५२॥

सतुल्य वैन का कहे करांगुल्य ग्र को रहे कहा सुरागताल को गहे रहे गुणीधरा जना गरीब क्यों लहे समीपता महीप की क्षरोक नाम का कहे सगी घकाज में नरा निचोल चित्र को करे उड़ात पक्ष को धरे भुलोक नास का परे दशांश होत का धरः लगे सिंगार कूल कोलनाग फांस ऊन को इतो व बैजनाय दे सुवृत्यनंगशेखरः ॥ १५३ ॥

तुल्यबचन को का कहि असे अंगुरी के आगे कारहत नरवरा ग ताल को गुणीजन कहा धारणा करत गर गरीबजन राजन । राजन् की समीपता कैसे पावे सेअथेक सरा को नाम का कहत धन बसन को चित्र कासो होत रंग पक्ष धरे को उड़ात स्वग भूलोक को नास कौन लोक कहत नर धरा को दशांश का होत सेर संगार ते दूनी शोभा कामें होत अंग नागफांस परिन्यूनता कहा होत रसा इत्यादि को उत्तर बैजनाथ देत अनंग शेखर यह नागफांस उत्तर है लगे सिंगार फूल लघुगुरु क्रम ते बतीस बरण यथा ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ

अनंग शेखर छन्द है ॥ २५३ ॥

मरेंते कोभयकारी होतो कि हित्त कि तुरत भजत पंडिते करजो हाता मार्गे में जाती ताको का कह तलह्त कि हि कहते सबै धन को भृता का संज्ञा। छोटे जीवों की काहि कपरिचर कमलवद्ध उत्तरयो हता हेरी वे पीया सीरी पौन मम तन नि नरस लगे भुजंगविजृंभृता ॥ २५४ ॥

मरे पर भयकारी होत सो कौन है भूत पण्डितन के करकी करी कौनवस्तु है जाके देखत भूत भागत अंत मार। ग में जात ताको का कहत गत का पाय धनधर कहो जात वित छोटे जीवन की संज्ञा काहे जन्तु परिचर को का नाम कही भुज हेरी सखी विना पी खसीरी पवन मम तन में ऐसी निरसला गत यथा भुजंग विजृंभत जैसे सर्प्प की स्पर्शपौन यह कमलवद्ध उत्तर चित्र है मम तननि नरसल गैमः मः तः नः नः नः ऽसः सः शुः ऽऽऽऽऽ ऽऽऽ ।।।।।।।।।।।ऽ।ऽ।।ऽ।ऽ यह भुजंगविजृंभता छन्द है ॥ २५५ ॥



शोक देहलेत है जु ताहि नाम होत को खु जात को त्रिया लगे पिरात है पुनातहा पाय के समै सु कौन। घात जीव की करै सु अंग पै जु होत है कुचोट पाइ के कहा कोप नैन खोलि कै महेश भस्म कीन काहि वाग दस होत को सुगन्ध होत है महा उत्तरादि अन्तऊार सोजगो लगो सधैक तीस है सदा अशोक पुष्प मंजरी सहा २५६

दुःख को देह ग्रहण करिलेत ताको का कहत सम्म ग्रहणका त प्रिय लागत पाछे बिगत ताको का कहत दादि मलय पाइ भौ व की घात को करत कृत्रिकटिम छांदलागे दूषको दांत भोज कोपकरि तीजो नेत्र खोलि शिवजीको को भस्म कीन कामा, बाग वृक्षन में का होत जामें महा सुगंध होत पुष्प इति आदि अन्त देहै वरण को उत्तर भार सो जग में लागत ताको विरहि नी एक तिया सहत सो काहे सो सदा अशोक पुष्प मंजरी इति यह आद्यंतोत्तर चित्र है गोल सकतीस गुरुलघु सकतीस ऽ।ऽ।ऽ ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽ अशोक पुष्प मंजरी छन्द ॥ २५५ ॥

को स्वर है वरणांत गहे सब जातजि आनन है न-उदातना लोगन के बतरान समै विचका बिन होत सु दूसरि बातना काज पठाय कहू जन को विल भौ तिहि ऊबि कै बोलत कातना त पल शृंखल सेवत क्यों दि-न भोर तिया कहि मैं अरसातना ॥ २५६ ॥

वरण अन्त कौन सुर गहे जा बिना ऊंच स्वर नहीं होत व बतरात में का बीच में दे दूसरी बात करत अरु काज हेतु जन को पठाये पर विलम्ब लागे ऊबि कै का कहत अरसाहे तिया-भोर भयो अब पलन में शृंखला क्यों सेवत तिया कहे में आल त नहीं हो सक एक वरण बढ़ि बढ़ि उत्तर ताते शृंखल व्यस्त स मस्तोत्तर है दिन भोर दिल कहे सात भगन ताये स्यान ऽ।ऽ।। ऽ।। ऽ।। ऽ।। ऽ।। ऽ।। ऽ।ऽ अरसात छन्द में ॥ २५६ ॥

कालेजगनाशं शोभकामाहि कोकी रिसकाय अक्षसा आहि कौंतीलरायल पुत्र काकीन कामे-दयउत्र चित्रबानीन ॥ २५७ ॥

कालेन्दै जगनाश करत काले शोभा कामाहि [illegible]

कोट्टी रिस कोट्टी कोय अक्षमा आदि कोय कौंतीलरायल पुत्र को कौन कुन्ती विचित्र वानिन सो उत्तर देसौंदें वाको देत वानिनी इन्हीं प्रश्नही में उत्तरहै ताते प्रश्नोत्तर चित्र है तीलरायल तः लः रः यः लः ऽऽ॥ऽ।ऽ।ऽऽ। चित्रवानिनी छन्दहै २५७॥

ग्राहग्रस्योकहापटनपितुपकभरना पन्नगधामनामसिरिफलजमनकाना रामतिकोहिमालयकहिधवलकिता कोपसुसासनोत्तरगतगज विलसिता॥ २५८ ॥

ग्राहका को ग्रस्यो पटकासोनापिये तुपकका सो भरिये तीनि प्रश्न को उत्तर गज पन्नग धाम को श्रीफल नाम को जमन की नाहीं को तीनि प्रश्न को उत्तर बलराम की तिया को हिमालय को धवलकाको कही तीनि प्रश्नन को उत्तर सीतासासन उत्तरकौन पत्थ करत गज बिलसिता या सासनोत्तर चित्र है भरना पन्नग भः रः नः नः नः गुः ऽ॥ऽ।ऽ॥॥॥॥ऽ गज विलसिता छन्द॥ २५८ ॥

नयनयमाहामराि भुविमितै मनमगनैभाग्यमहतनितै सुधरमकारोअमरिचरित्रै मधुरमधायेन कुसुमविचित्रै ॥ २५९ ॥

नवीन महामरागि भूमि में अमित पावत बड़ी भाग्य है ताते मन में मगन रहत सुधरम करत ताते चरित्र असर है जहाँफूल खिले तहाँ मधुपान करत मकारलोपिये और अर्थ नैन हानि भूमि में मगन भाग्य हत नित सुधरो करे तो अरिसे होइ भूरि कुसुमय शपनायहै मराा लुत चित्र है नयनय ॥॥ऽऽ॥॥ऽऽ कुसुम विचित्रा छन्द ॥ २५९ ॥

सुकरम सुगम सुवृती में सुधरम शररा सुकी-

तीसें तिन हरि फल दय चूकैना जनन सुकरनवि
विमूखैना ॥ २६० ॥

सुकरम आदि करनहारन को फल देन सें हरि चूकत नहीं।
सुगति करिवे विमुख नहीं होत इहाँ नकार के नगणन लगाय दीजे तो कुसार्गी आदि को कुगति देवेतें और चूकत नहीं हैं इहाँ और वरण दीन्हे और अर्थ भयो याते उद्दजापर निरंद ननसुकरन नः नः सः द्विगुरु ।।।।।।।ऽऽ सुगति छन्द ॥ २६० ॥

तन धन सुख नहिं हीय धरो हरि हरि जीव निरा-
दरो सहज सुखहि नित दास चरो घोर कमाका-
लिकाल डरो ॥ २६१ ॥

तन धन को सुख हिय में न धरो हरिनाम जीव सों रटो।
यह निरोष्ठ चित्र है दास चरोदश चारि नोंदक मात्राकालि-
का छन्द है ॥ २६१ ॥

जलगगन हरचरणा धरतलगगन कर रक्षा घर २६२

जबलग शिवचरणानहीं गहत तब लग घर की नारक्षा करे लगन लः गुः नः ।ऽ।।। हर छन्द मात्रा नहीं ताते अमत चित्र है ॥ २६२ ॥

जलज नयन घन सजल हरण तन दरन मरत।
गर सजत नगन लर अधर दशन कल धनन हसन
तसलसत कनक तर भाल को अलक चार करजान
रवनदल जलजन गान यश दरश चहत अयश कल
अजरहर अघ नरहत जर अनद करत नर शरण ग-
हत जन जप्र रस्वसन धर ॥ २६३ ॥

कमल से नेत्र सजल मेघ शोभा हरण तन शंख शोभाहरन-

चारो गरनें मणिमाल मोहत ओठ दन्तसुत सुखकी हँसनि
तेसे कनक कुंडल दर अलक की झलक अँगुरीनख जस कंज
दल यैनना है तिनको दरश ब्रह्मा शिवादि देव चाहत हैं और अ
सन धनुषधारी की शरण जो जन गहत सो आनन्द करत।
अरुनन्दन को पापनाश होत यह अमत निरोष्ठ है बत्तिस
वर्ण लघु जलहरण छन्द है ॥ २६३ ॥

कपिय गंग भव पिवाक अघहा काहि।
पियमाक ॥ २६४ ॥

कपिय हनुमान् जी गंगभव भीषम इनकी वाक्य है कौस
लक्ष्मी के पतिहर नाम लेते पाप की नाश होत पिवाक वाणी
के पति धाता दट काल में आठम भेद को नाम है धाता ॥ ११ ॥
वाकि छन्द है यह अजीह चित्र है ॥ २६४ ॥

लीले लाल [illegible] लेलेलाललिलोले लेले
लाललिल्लोलल्लोलेलललोले लालेलालिल-
लिल्लालेलालीललिलोले लीला [illegible] ला
लीलेलेलिललोलें ॥ २६५ ॥

लीले नीले लालि लालि ललालित लाने आलै लेत कलाल
जल लालि अलि भंवर लोल चंचल यथा नील लालि मणि मं-
दिर लै भ्रमर गुंजजल झुङ्कार शोभित ललित ललितलो सहित
लल दललौ नो नवीन लैनें भुकित ललद लतालो ले चंचल य-
था लैलै लाल ललित सहित दल नवीन झुकि लता चंचल है झू-
मत है लाले पवने लालो लालि ललित है लाली लली सहितले
लीला करत है तालाल लली की लीला लाली कहे सुन्दरि है
ताको हे अली लेले देखि ले इहां तवर्ग के वर्ण लकार को
आगे पाइ लकार हैगे लोलीला तवर्गस्थ लकार और लकारो

भवति यथा नत लिखति तल्लिखति गतय गतय ऽऽ।।ऽऽऽऽ
।।ऽऽ लोलाछन्द यकाक्षरी चित्र है ॥ २६५ ॥

हहरि हहरि हर रहि रहि हरि रर ॥ २६६ ॥

शिवजी हहरि कै प्रेम मों रहिरहि हरिनाम रटत हैं।
यह द्वि अक्षर चित्र है चारि लघु ।।।। हरिछन्द है ॥ २६६ ॥

धारा गिरे रागे धरा धीरै धरी राधा ररा २६७ ॥

धरा भूमि पैसारि चढ़ाये भव धारा में गिरि है तातें धीरज
धरी राधा को नाम रटो त्रय अक्षर चित्र है गिरे गुरु रगन -
ऽऽ।ऽ धराछन्द है ॥ २६७ ॥

सीता सतवती सेवै सब सती वासी वसुमती
सारी वसु मती ॥ २६८ ॥

सबसती त्रब्रभूमि भूमिवासी सब सीता सत्यवती ।
को सेवत है चौ अक्षर चित्र है तास तः सः ऽऽ।।।ऽ वसुम-
ती छन्द है ॥ २६८ ॥

सुख सारो सग रामे सुखरा गोरस रामे ॥ २६९

सारो सुख रामही के संग ताते सुख ते राम रस में प्रीति
करौ पाँच अक्षर चित्र सगास: गुः ।।ऽऽ रामाछन्द है ॥ २६९ ॥

रखि लाज रघुवीर खल घोर घर पीर २७० ॥

घोर खल घर घेरे हैं हे रघुवीर लाज राखो षट्‌अक्षर चित्र
है लाज लः जः ।।ऽ।वीरछन्द है ॥ २७० ॥

सुबुद्धि सिद्धि साधंत जुगंगजलगाहंत २७१ ॥

जो गंग जल असनान करत ताकी बुद्धि सिद्धि की साधना करत सप्ताक्षर चित्र है जलजलः ।ऽ॥ बुद्धि छंद है ॥२७१॥

भागानित्यौसनव रामगुणगावनव ॥२७२॥

नवीन भाग्य होइ तो निशि दिन रामगुण गावबे में मन लागे अष्टाक्षर चित्र है गनि गुः नः ऽ।।। निशि छंद है ॥२७२॥

अथ गतागत यथा तरणिजा बल सदा तरक जामिनि मदा ॥ २७३ ॥

अथ गतागत यथा तरणि सूर्यबंश उतपति जो रघुनाथ जी केबल ते सदा मोहमद रात्री पार जावे की गति होत इति गत निमिजा जानकी जी दास को लव मात्र आशु में प्रीति जानत तौ दामद्रव्य समूह देत इति आगत लसलःसः ।।ऽ तरणिजा छन्द है ॥२७३॥

श्रीरामास्याकारा सीतालीलाधारा ॥२७४॥

जैसी रामलीला की आकार तैसही सीता के लीला की धारा है इति गत राधा ललिता सीसखीले राका पूर्णिमा राति में कृष्ण संग रास करत इति आगत मगनऽऽऽ तालीछन्द ॥ २७४ ॥

जगकरतानरसमरा जग[illegible] ॥२७५॥

हजारन यश अयश सहित नर अमरादि जग करता ब्रह्मा है इति गत हजारन हाथी साथ सजे ते बलते रंक भये जब राम शरण भये तब गज उद्धार भयो इति आगत नरस नगनरस त्रि मात्रा अन्त गुरु ।।।।ऽ करता छन्द ॥ २७५॥

हैया जचिलो बैजनाथ नालौ नहीता तटजनिक

च सीता नया सखि रावणा मरी हैमासवरिक ती-
सरिहहै रिमनांतर निजाया हिते धीर मो व्रानिदर
की खरी हैरायनि दिन कलप विरह्लदा सिति म
दा रोष से कान सो काढ़ना हिय तरी हैदाढ़ रदन
धरिय तोरि मारुत लता करत रगसान वोल पिकते
घनाक्षरी इति गत ऋहक्षनाघते वापि लन्वरा सागर
तरक ताल तरु मारितो परिघ नरवढ़ दाहे गितथहि
नाढ़कासोन कासे खरो दास तिमि दाह हर विपल-
कन दिनियराहे रीषकीरवनिवा मेरधीते हिया
जानि रतनासरिहे हरिसति करिवससाहे शीसनच-
राखि ससान ता सीच वति जटत ता दीन लै ना[illegible]नाज
वैलो विजया है इति आगत ॥ २७६ ॥

गत में जानकी की विरह यथा है त्रिजटा दृगागुरय जब
लौं बना है तौ लौं नारभरि जो दुःख है सो हमको नदी सं घ-
पार है ताके तट बैठि सीता कहत हे सखी यह रावणा नामरी-
सवरी एक तीसरी है ताको माता सम माने यह आपने मन में
विचारि हमारे धीरज है कि हमारे वर की दानि [illegible] कछु
दुहे राति दिन कलप सम विरह हदते नाहर सदा रावणा को
रोष काण सों सुनि तता दुःखते हिया हमारो कब पार आई
लतन को तोरि सुगंधित पवन जो बहत ताही [illegible] में माने
पिक के घनाक्षरी बोल धरी घरी क्षण क्षण पर दाह करन-
एकतीस वरणा गुरांत घनाक्षरी छन्द है इति गत अथा आ-
गत में त्रिजटा को समुझाइबो यथा रीक्ष वानर लवणा सागर
को तरकि नांघते हैं ताल के रसन ते मारते हैं जिनके नखं।-

पर्णिय है तिनते राक्षसन के दाह करते हैं यथा सोन कसे खरा होत तैसे दास को कसिलेत यह तुम्हारे नाहकी रीति है अब तुम्हारी दाह हरिहै दुःख की नदी को पलक सम नियरि जानो ऋषि की नारि तारे ताको बिचारु अथवा मोरी बुद्धि के कहे वचन मानु अथवा तोहूं विचारु कि मेरो उरनाम में रत है सति करिके हरि यही नाम के बसिहै हेरी जानकी मन में समान-ता राखु दीनन के नाथ जबलै विजयनहीं पावत तबै लै तेरो दुःख है इत्यादि त्रिजटा के बचन जलरूप विरह दहित जानकी को सींचि हरित करत इति गतागत में बिजयाछंदहोत२७६

गो सकलालाकसगो गोपसुतातासुपगो २७७

यशोदा के मन में सक गई कि वहाँ मेरो लाला कसगयो तब यह विचारी की वहाँ गोप की सुता है तिन सों पगो है याते गयो गोसगुः सः ऽ॥ऽ कलाछन्द है ॥२७७॥इति गतागत

तारण जाको नाम सदा है तिहि भजु बिषम अगिनि किमिजरता तारज पावो की धरि माथे ऋषिवर रवनि तनसुभगकरता तारक चक्रो चारि भुजा जा शरण गहत नित सचर-अचरा तारचरक्षी भाम सभानोनलिन सदृग जिहि रच सुरनरता २७८ इति डमरूबन्ध ॥

जाको राम ऐसो नाम जगतारण है ताको भजु विषम अग्नि में क्यों जरता है जाके पावन की रज माथे धरि अहल्या सुन्दर तन है गई जाकी शरण चराचर आवत ताको तारण हेतु चारि भुजा सहित चक्र धरेहैं तामें प्रीति करुजो सभा में द्रौपदी की रक्षा करी जाके नवीन कमल से नेत्र जामें

सुरनर प्रीति करते हैं भाम समानी नलिन म ऽ।।ऽऽ।।ऽऽ।।।। ।।।।।।।।ऽ क्रौंच छन्द ॥ २७८ ॥

माकोनाम सदा है तिहि भजु विषम अगिनि नेमि नयनों कों धरि शिव करिवेलितन सुमन ...

डमरू बन्द चक्र २७८

ता

रामसीताक्रूपभू रामसेतावलभू रामरिःभूलतभू रारमारापरभू ॥ २७९॥ इति चन्द्र बन्ध ॥

रामसीता जग स्वामी हैं जिनते प्रीति करि जय विजय दली भये तेई रावण है भूले बैर करे युद्ध करि मरो ताहू पर दया करि मुक्ति दई यह चन्द्रबन्ध है राम सेरःपुःमः ऽ।ऽऽ।।ऽ भूप छन्द है ॥ २७९ ॥

चन्द्रबन्ध ॥

तकि सुर द्विज साजगा रते कनक हरे निजजोर तेहते चमक चलादि चपार चक्रते चढ़त चहुँदिशा चकारते ॥ २८० ॥ इति चक्र बन्ध ॥

देव ब्राह्मण सहित जग को दुःखित देखि प्रभु बाराह रूप ह्वै गये तिन को देखि हिरण्याक्ष चिक्कार करि चारिहू दिशा ते रण में दौरत तब बाराह जौं चंचल चमकदार चक्र ते चपरि हिरण्याक्ष को मारे इति चक्र बद्ध चित्र है द्विज सग जग चारि लघु सगन जगन गुरु ।।।।।।ऽ।ऽ।ऽ २३ पुनः निज जोरन: ज: ज: र: ।।।।ऽ।।ऽ।ऽ।ऽ दूजो चौथो चरण यह अपर चक्रबंद है २८०॥ इति चक्र बद्ध ॥

चक्र बद्ध चक्रम्

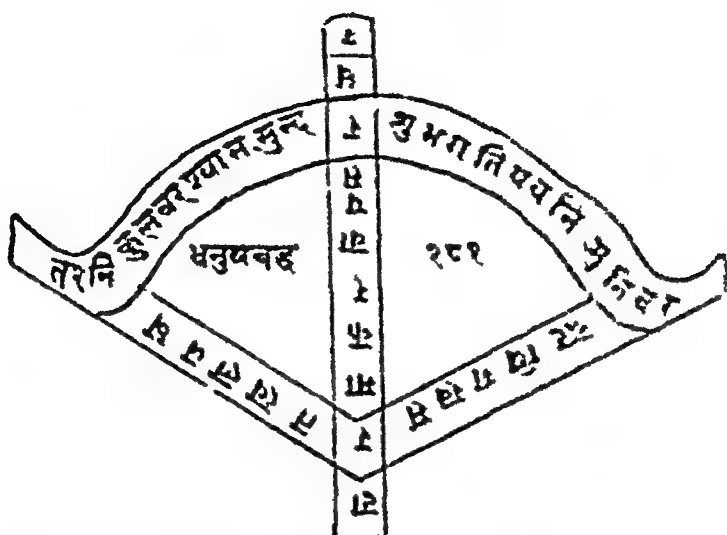


तरनिकुलबर श्यामसुन्दर सुभगतिपव-नि मुनिवरखनि ऋषि मख सरत खलवध नि-रंत टारसाकर चापसरधर ॥ २८१ ॥ इति धनु बद्ध ॥

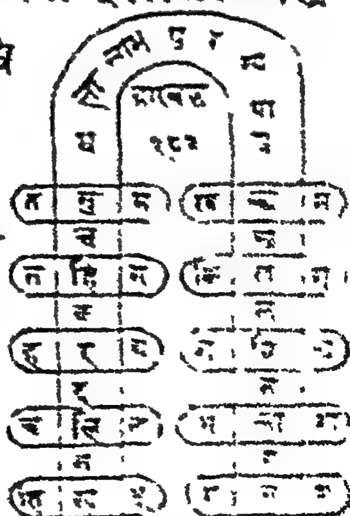
हे रघुकुल में श्रेष्ठ श्यामसुन्दर आप ते अहल्या शुभगति पाई राक्षसन को मारि मुनि मख रक्षा करे हे धनुषबाणधर मेरी साकर टारो यह धनुष बद्ध चित्र है मुनि मात मात्रा के आठ चरण शुभगति छन्द है ॥ २८१ ॥

इति धनुष बद्ध ॥

धनुष बंद्ध चक्रम्



धनु तनु मनु चहितहि गहि कर हर बर दलि च-
लि ललि नख सिख भुख न नगन गन गलामल मा-
ला तकि जकि चकि ललकि लगल चख ख छनल-
त्र पास्य रघु लला ॥ १८२ ॥ इति हार बंद्ध ॥

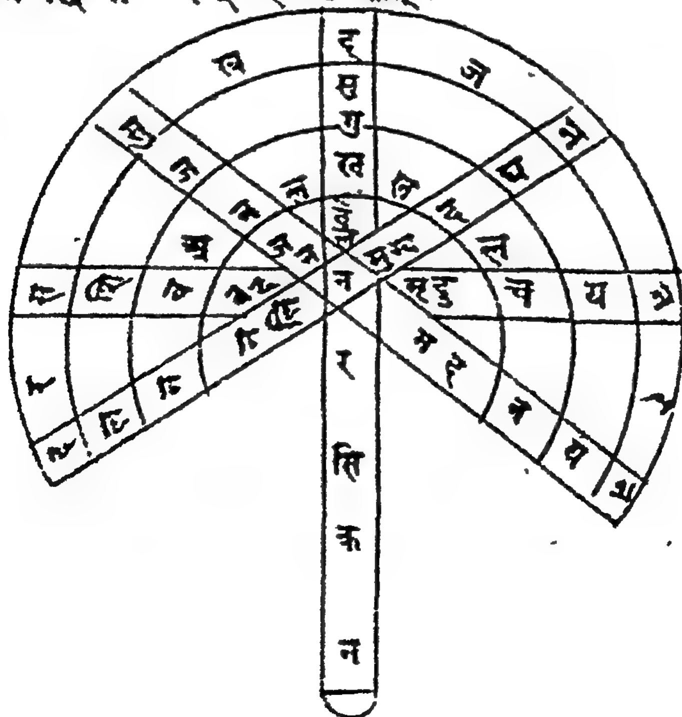


सुमन बाटिका में प्रभु छवि सुनतही तन मन धन की जो चाहता को हरबर कर सो ग-हि दलि कहे तोरि के ललीजा-नकी जी चलीं तहां नख सि-खा तक भूखण में नगन के गन के गण सपूज है गरे में अमल माला धारण ताकां तकि चकित है जकि के ल-लकि नेत्र लागि गये नक्षत्र

प्रचंद्र आस्य सुख रघुनाथ जीको तामें भूषण बारह नगन गल-लगुरु लघु मगन ।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।ऽ।ऽऽऽ पूर्वदल दूसरं दलनक्षत्र सत्ताइस मात्रा माला छन्द है ॥ १८२ ॥
इति हारबन्ध ॥

दलन नलिन मदनघन शशिवदन मृदुवचन सुजन जनन सुखद घन नव अनल खल दल वन। दरश सुखद जनन रदन दश सुख दल नर सिकन ॥१८३॥ इति छत्र बन्ध ॥

कमल मद दलनहारे नेत्र चन्द्रमा सो मुख कोमल वचन सुजन जन को सुखदेवे को मेघ खल दल वन जारिबे हेतु। प्रचण्ड अग्नि है रसिकजनन को दरश दै सुखी करत दश मुख आदिकन को रण को दलनहार है ऐसे रघुनाथ जी हैं शि-खरिणी चरण लघु ।।।।।।।।।।।। षट् चरण ते रसिका छन्द है॥१८३॥
इति छत्र बन्ध ॥ १८३ छत्रबन्ध चक्रम्॥



सखा दासै तवै मैं मान तो खास त्रखा सारी तजैं ये कै सुमेरास यरीति तौ अरी मैं राम मारास सदा मैत्र सभै मैशात्र मैं दास ॥ १८४ ॥ इति मेरु वन्ध

श्री रघुनाथ जी के वचन हैं कि स्वास सखा दास तवै मैं मानत हौं जब सब आशा तजि एक मेरी आशा राखै अरु जे याते बिमुख हैं तिनको मैं शत्रु हौं दासन को राम बिमुखन को मारा मित्र को मित्र शत्रु को शत्रु दास को दास यरीति तो ।ऽऽ ।ऽऽ। ऽऽ। यह सुमेरु छन्द ॥ १८४ ॥ इति मेरु वन्ध ॥

मेरु वन्ध चित्रम् १८४

					स					
				खा	दा	से				
			त	वे	मैं	मा	न			
		तो	खा	स	त्र	खा	सा	री		
	त	जैं	ये	कै	सु	मे	रा	स	य	
री	ते	तौ	श्र	री	मैं	रा	म	मा	रा	स

शिशु सो लगि रोवन पीत के नंद जु जाय रचीव हिखाटै दृग सों जल रोंकि ढपी तवै नंदित जा चुप चित्र कपाटै ॥ १८५ ॥ इति कपाट वन्ध ॥

नवोढ़ा नायका पीव को देखि रति भयमानि शिशु सम रोवनलगी ता समय वाकी नंद ने वाके हेतु शय्या रची तैसही नेत्रन सों जल रोंकि शय्या परजाय चुपचाप विचित्र कपाटवन्द करि आनन्द ते सोय रही शिशु सोलगि

शिशु	सो	लगि
रोवन	पी	तके
नंद	जु	जाय
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	दै	[illegible]

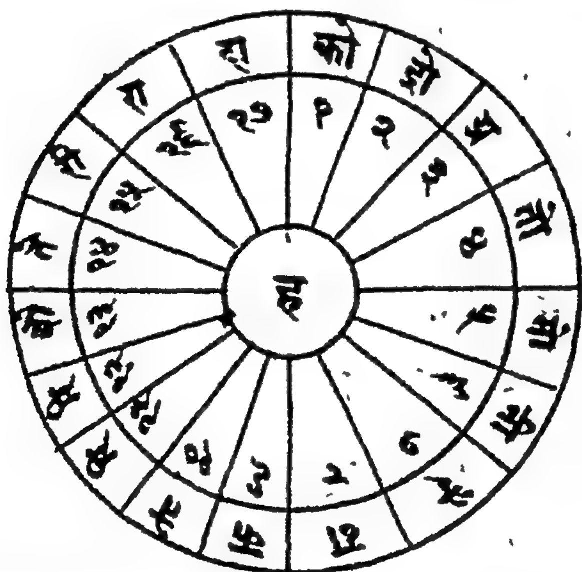
इति कपाट वन्ध चित्रम् १८५

सः सः सः लः गुः ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ प्रथम दल नन्द जुजाय नन्द चक-लादि गुरु ऽ। जः जः यः ऽ।।ऽ।।ऽ।।ऽऽ दूजो दल उपचित्र छन्द ॥ २८५ ॥ इति कपाट बन्ध ॥

कोह द्रोह पन्न तोह मोहनी हरैहठाह कहतेहरि हरि छोह ते हरी हराह दाह ॥ १८६ ॥ इति कमलबन्ध ॥

क्रोध पर द्रोह घर को मोह परिवार को नेहादि हठ छांड़ो हरि हरि कहो ताते हरि मया करिकै तेरो दाह जो है ताप ताको हरिले हैं ते हरि हरि कहे ईश ते आदि में ईश पीछे तेईस मात्रा की मोहनी छन्द है ॥१८६ ॥ इति कमल बन्ध ॥

कमलबन्ध चित्रम् १८६॥



आशरा जगत असीर बाद नहरत सपीर साधन भगत सधीर भासन करत अहीर ॥ १८७ ॥ इति कंकन बन्ध ॥

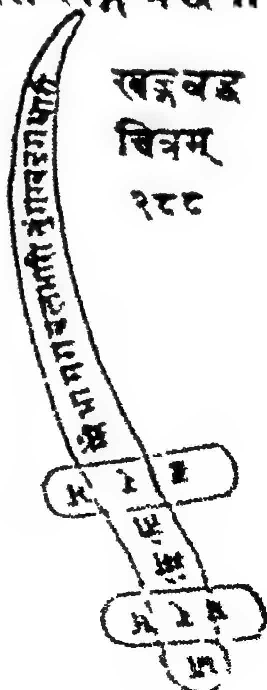
आशरा आशीर्वाद रै जग की पीर हरत जे भक्त भक्ति के

साधन करत तिनको अहीर कला शोभा को देखाय दर्शन दै भक्त न को धीर्य्यमान करि देत मनज ऽ।।।।।ऽ। अहीर छन्द इति कंकन बन्ध ॥ १८७ ॥



धीरधर धरम्मे तोरडर भरम्मे भासग बलभा- री तुंग खड्ग धारी ॥ १८८ ॥ इति खड्ग बन्ध ॥

धर्म्म में धीर्य्य धरै भर्म डर तोरि ऊँची खड्ग धारणा करै सो शोभा सहित बलवानन में गानो जाय भासग ऽ।।।।ऽऽ तुंग छन्द है ॥ १८८ ॥ इति खड्ग बन्ध ॥



हियरति सजो द्विजजन दविदास सियपति अजो भजमन छवि आस १८९ ॥ इति त्रिपदी ॥

है भगवत दासो वात्सल्य को स्वाद राखे रहो हृदय में प्रीति करि जनकनन्दिनी के पति जो रघुनाथ जी को अजहूं भजो अरु मन में शोभा देखबे की आशा राखो कि कब दर्शन देइंगे द्विजज द्विज कहे चारि लघु तापै जगन ।।।।।ऽ। छवि छन्द है ॥ १८९ ॥ इति त्रिपदी चित्र ॥

त्रिपदी चक्रम् १८९

[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]

बरुणी अति बन सघन भृकुटि गिरि विकट तट परिखत गहर पल भुवन नगर मंजु है अंजन-धुस अखम बिच सुभट चितवनि कुटिल सजग-टिकि अगमगढ़ बसत नयन खंज है ॥ १९० ॥ इति गढ़ बद्ध ॥

गढ़बद्ध चित्रम् १९०॥



बरुणी सोई सघन बन है भृकुटी सोई पर्वत है ताके तट पलकन की गहिरई सोई परिखा कहे खाबा है भूखण लई सुन्दर नगर है अंजन सोई धुस है ताते अखम के बीच कुटिल चितवनि सुभट ते सजग है टिके हैं ऐसे अगमगढ़ के बीच नेत्र खंजन बसत है भूखण नगर बारह नगन रगन खंजा छन्द यथा।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।।ऽ।ऽ १९० इति गढ़बद्ध ॥

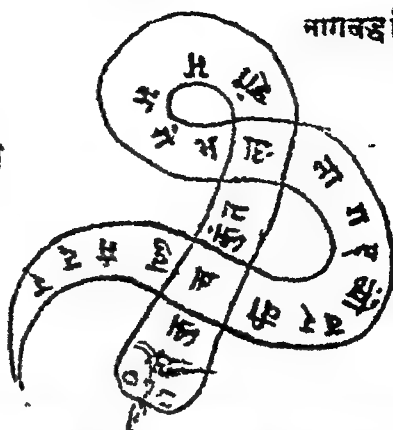
वीतापरे याम आधा कदा नाम धीमें यशो जा पकारी मभा ध्यार हीता नरे धाम साधा फदा दाम तीमें कसो आप टारी नभ्रा भार भीता करे काम बाधा गदा बाम जीमें धसौ पाप भारी तमा हार सीता हरे राम राधा सदा श्याम हीमें बसौ ताप हारी क्षमा कार ॥ १९१ ॥ इतिकामधेनु ॥

परे परे जन्म वीत्ता दोऊ घरी कबहूँ परमेश्वर को नाम न लीन्हे हे मेरे प्यारे जीव बुद्धि ते परमेश्वर को यशगाउमुख ते जापनाम को करु जाको तू साधे सो धाम तेरो हित नहीं है तिया के दाम रस्सीमें फंदा ताको आप हीं कसि लियो ताभार को नहीं टारे बाम रूपी गदा सो बाधा करि काम ने सभीत करी ताते जीमें पाप धसि गयो ताते भारी अंधकार में हारि परो ता ताप के हरणाहार क्षमा करनहार सीता राम राधा श्यामही में बसो बसो ता आठ तगन ऽऽ। ऽऽ। ऽऽ। ऽऽ। ऽऽ। ऽऽ। ऽऽ। ऽऽ। आभार छन्द ॥ १९१ ॥ इति कामधेनुचित्र ॥

कामधेनु चित्रम् १९१

वीता	परे	याम	आधा	कदा	नाम	धीमें	यशो	जाप	कारी	मभा	ध्यार
हीता	नरे	धाम	साधा	फदा	दाम	तीमें	कसो	आप	टारी	नभ्रा	भ्रा
भीता	करे	काम	बाधा	गदा	बाम	जीमें	धसौ	पाप	भारी	तमा	हार
सीता	हरे	राम	राधा	सदा	श्याम	हीमें	बसौ	ताप	हारी	क्षमा	कार

दो कुच कुंतल शोभ भरो भल नाग दब्यो बर वी चहुमंदर ॥ १९२ ॥ इतिनागबन्ध ॥


नागबद्ध चित्रम् १६२

दोऊ कुचन के वीच में वारन की शोभा कैसी है मानो दोय पर्वत के बीच नाग दवि गयो है भभ ऽ।।ऽ।। दुमन्दर छन्द है ॥ १६२ ॥ इति नाग बद्ध ॥

समुद्रा कल तो बाल कौरे देखु सजै लाल १६३

इति मुद्रा बद्ध ॥


मुद्राबद्ध चित्रम् १६३

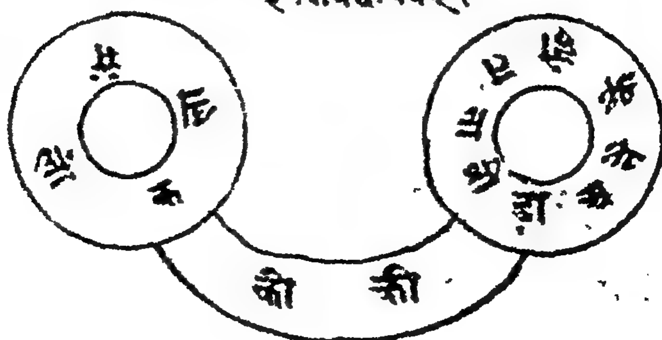
संहित मुद्रा सुन्दर हाथ लाल को सजत है हे बाल ताको देखु लाल तो लतः ।ऽऽ। मुद्रा छन्द है १६३ ॥ इति मुद्रिका बद्ध चित्रम् ॥

कलामें लोक की क्रीड़ा अनैके होत ना ब्रीड़ा १६४

इति ऐनक बद्ध ॥

तुम्हारी कलामें लोक की क्रीड़ा उत्पत्ति पालन नाश है ते तुम अनीति करिकै लजाते नहीं हो लामें ।ऽऽऽ क्रीड़ा छंद है ॥ १६४ ॥ इति ऐनक बद्ध ॥

ऐनकबद्ध चित्रम् १६४

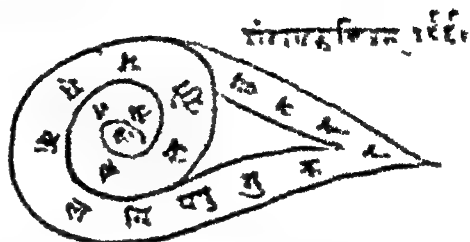


रोजही जो जीव धीको रोगानन्दा लाजपीको ॥
२९५ ॥ इति चूरी बद्ध ॥



पीव लज्जा करत नन्द टरत नहीं
ताते रोग है ताते हमारो जीव धिका
करत रोजही रोग ऽ।ऽऽ नन्द छन्द २९५
इति चूरी बद्ध ॥

गोलनवल प्रोभ सकल विद्यासुकर सोहत
दर ॥ २९६ ॥ इति शंखबद्ध ॥



गोलनवा सुन्दर शंख
विद्याकर में सोहत गोलन
ऽ।।।। विद्या छन्द ॥ २९६ ॥
इति शंख बद्ध ॥

कसी सत जानीरय संजाजमबीतालय २९७
इति यंत्र बद्ध ॥

यंत्रबद्ध चित्र २९७ ॥

जा	नी	र	य
क	सी	स	त
सं	जा	ज	म
बी	ता	ल	य

जा यमुना जल में सतकर्मा स्नान
करे तो यमालय जाब बीता अर्थात्
ना जाइ ताल ऽऽ ॥ कथा छन्द २९७
इति यंत्र बद्ध ॥

मात का वाक का जा ससारा करी लोकनालों मरा
रवा महादाह धामा तके यास मां ना गलों नाघ रांता
सुसौ गौन मैं राजना रागा कारी मनो को शाला को तंजा
कारना पीर ताके गाता दंड के शोभ सा की भलो तारव
राराक सादौन मेरो घताराम तो जान की जाहरी रव-

नां बनद्याका महा औघ मौ पाप के बास माता द-
ली राम राजा जस जौन सेवान ज्ञाता दशा शीशका
टै अयोध्या सजौ सातलोकालखे द्वार पै राम के मत्त
मातंगलीला कराआनन्दसा भौन सें ४९८॥ इतिमुरजबन्ध

मात कैकेयी के बचन को जिनसाराकरी लोक में आपनो
नाद गरबा बास को महा दाह करितके गली में घास नहीं
माने घर सो सुख मार्ग जात में माने राज में राग कहे प्रीति
नहीं करी अयोध्या जी को तजत में धीर करिके मन में नहीं
तके दण्डकवन को गये मा जानकी जी की भली शोभा दे-
खि राक्षस खर धायो ताको दौन कही मारि डारे ताको रोष
राम सों करि रावण जानकी हरि बैर कियो तासें अघानो।
महापाप समूह में ताको मन बसा रहे ताको रघुराज ने दलि
डारो जाते जग में यश भयो वाणा विद्या में प्रवीण दशो मा-
थ काटि आज अयोध्या सजो राजगद्दी पर बैठे राम के द्वारपे
मत्तमातंग लीला करि रहे आनन्द ते आपने भवन में शोभित

२

बा	न	दा	वा	क	का	जा	स	सा	रा	क	री	लो	क
ना	भो	म	रा	खा	म	हा	रा	ह	धा	मा	त	के	पा
म	मा	ना	ग	ली	ना	घ	रा	ता	सु	सा	गो	न	मे
रा	ज	ना	रा	ग	का	री	म	नी	को	श्रा	ला	को	त
जौ	का	र	ना	धी	र	ता	के	ग	ला	द	ड	के	शो
भ	भा	की	श	ली	ता	ख	रा	रा	क	सा	दौ	न	मे
गं	घ	ना	रा	म	नो	जा	न	की	जा	ह	री	रा	व
मा	बे	र	घा	का	स	हा	औ	प	मौ	पा	प	के	बा
स	मा	ता	द	ली	रा	म	रा	जा	ज	सा	जौ	न	से
वा	न	ज्ञा	ता	द	शा	शी	शा	का	टै	अ	यो	ध्या	स
जौ	मा	त	लो	का	ल	खे	द्वा	र	पै	रा	म	के	म
त्त	मा	तं	ग	ली	ला	क	रा	नं	द	सा	भौ	न	सें

२ २ २

मुरजबन्ध चित्र ॥ ४९८ ॥

तिनकी शोभा सातहू लोकन के वासी लोकपाल रणपाल देखत हैं रानन्दशा भौन रगनन उते चौदह तक छत्तिस वरगा ते वयालिस तक ऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽ मत्त मातंग लीला दराडक है या चक्र में नीचे कोठा ऊपर ते वांचो अथवा कोठा ऊपर ते वांचो दूसरो नीचे ते बांचौ तो छन्द बनत है इति सामुद्रवद्ध ॥ १९८ ॥ इति चित्रकाव्य ॥

अथ दूषगाशब्द गौरा है वी मोद है लागे पांय भ्रमारो काटो कलो दूख्यानो ये काय ॥ १९९ ॥ इति श्रुतिकटु ॥

अथ दूषरा हायन सो पावलागि गौरी देवी मो चाहत है सो हमारे दुःखन के भ्रमको काहे नहीं काटत हो देवी को है वी भ्रम हमारो को भ्रमारो कटुकर्ण को काटोकलो दूषरा को दुखानो इत्यादि शब्द कानन को करु लागत ताते श्रुतिकटु दूषराशब्द को है हैवीसो गैरा बाइस गुरु २२ चहो लाचारि लघु ४ छब्बिस वरन भ्रसर प्रथम दोहा है ॥ १९९ ॥

येके से गोरा लरे लाज है छानो नीन दूजे देहा दूयन भ्रामर भाया हीन २०० ॥ इति भाया हीन ॥

एक तो चन्द्रमा नेत्र दूजे कपाल भस्मारि देह में दूषगा न से बर दो गौरा कैसे बरो इहाँ नयन को नीन कहे वरगा मात्रा घटे वह भाया हीन यथा अचानक अचानये कैसे गौरा अकइस गुरुलाहे छा लघु छा सत्ताइस वरगा भ्रामर दूजा दोहा है ॥ २०० ॥ इति भाया हीन ॥

वाहे वीसो गुर्व लो बासो मानों खराउ दुखानो

शेषाग्र सरभा प्रयुक्त कोदण्ड ॥ २०१ ॥ इति अप्रयुक्त ॥

बीसौ बाहु ते बड़ो बली रावरा है जो इन्द्र को मान तो रोजा समय कोदंड अग्रसर प्रयुक्त करो ता समय शेष दुःखित भये इहाँ गुर्वलौ दूखनो शब्द शुद्ध है परन्तु ऐसा पद को ऊ कहत नहीं याते अप्रयुक्त दूखरा है बीसो गुर्वलौ बासौ बीस गुरु आठ लघु अठ्ठाइस वररा तीजो दोहा-सरभ है ॥ २०१ ॥

चायो खरा सारवी मृगा गेनंदा दाशार्थ लंकाया भूजालये दशा सेन असमर्थ ॥ २०२ ॥ इति असमर्थ

मनुष्यनारा धरि बानरन को लै भूमिजा हेतु दशरथनन्द लंका पे गये दशानन को असमर्थ करे यथार्थ शब्द नहीं कहि सकत अपर अर्थ देखात ताते असमर्थ दूखरा है रो नन्दा दासबन इस गुरु लये दशा लघु दशवंतिस वररा सेन दोहा चौथ है ॥ २०२ ॥

दशा स्यार्थो भुजगो देले हे भूषरा स्वार्थ मंडूकं गामी कहे रहै यापनिहितार्थ ॥ २०३ ॥ इति निहितार्थ दूखरा ॥

मंडूक गामी शुक्राचार्य्य कहत की हे दशास्य आठ बारह तीस भुजगो इन्द्री को विषय में दीने पापही स्वार्थ ते है तासें प्रयोजन नहीं है इहाँ मंडूक गामी शुक्र को कहे आठ बारह भुजरावरा को कहे जहाँ दुअर्थी शब्द ते यथार्थ पर्यनाकहै तहाँ निहितार्थ दूखरा है दश आठो गो अठारह गुरु ले है भूषरा लघु बारह तीस बरगा मंडूक दोहा पंचम है ॥ २०३ ॥

दीपे दशाधा वीर गेत भुवनै ले भूप अनुचिता
र्थ कूदे करे लेखा मर्कट रूप ॥ २०४ ॥

हे भूप तेरे वीर भुवन भरे में दशो दिशा दीप्ति मान हैं अनुचि-
तार्थ करि कूदत है यथा मर्कट रूप को लेखा मर्कट शब्द उ-
चित नहीं है अकाल है ताते अनुचितार्थ दूषरा है दीपे ७ दश
धा १० गे सत्तरह गुरु भुवनै ले २४ चौदह लघु यकतीस वरगा
मर्कट दोहा यस्तम है ॥ २०४ ॥

शृंगारी कर भल लगो संसकार हत नाहिं तू
न भलो पीना भली आली संगति नाहिं ॥ २०५ ॥

शृंगारी को भलो हाथ नहीं लागो ताते तेरो शृंगार संस्का-
रहत कहे कर्म विवर्जे है तू भलो नाहिं पी भली नाहिं संग-
ति संगतिवाली भली नाहिं इहाँ बोली में विरोध है ताते सं-
स्कारहत दूषरा है पी भलो तू भली कहो चाहिये शृंगारी
लगो सोरह लघु सोरह गुरु बत्तिस वरगाकर मसत या दोहा
है ॥ २०५ ॥

नर आठो दिशि लो गुरो पूरा भरे हैं धाम पंके
बके न निरर्थ के लाज वाजह जु बाम ॥ २०६ ॥

हे बाम छोटे बड़े नर घर में भरे हैं जो तेरे लाजवाज होय
तो बके बके ना इहाँ बाजव केमें अर्थ नहीं है ताते निरर्थक दू-
षरा है आठो ८ दिशि १० लो अठारह लघु गुने अगा पन्द्रह
गुरु तेंतिस वरगा आठव दोहा नर है ॥ २०६ ॥

वक्ता भे आवाच को जीवन भुवन जगाल दि-
शि दिशि लों चैतन्य की करनि करै सुमराल ॥ २०७ ॥

मराल कहे हंस सूर्य दिशान में चैतन्य की करनी करि...

के जीवन को अगाध दियो ताते अवाचक सोषनहार वक्ता भये बोलन लगे इहाँ सूर्यन को मराल जागिबो जगाल सो-इनो अवाचक इत्यादि संप्रदाय बाहेर बनाइ लीन्हे नाम ताते अवाचक दूषण है भुवन जगा चौदह गुरुल दिशि दिशि लघु बीस चौंतिस बरण नवम मराल दोहा है ॥ २०७॥

मासतापट त्रिदश गिरि घिन ह्या अुभ अस-
लील पीमद कलहसि देवि सो रक्त बीज लेलील २०८

त्रिदश देवता अपट बस्त्र रहित रण घायल है गिरे तिनको देखि मद पान करि कलहास करि देवी रक्त बीज के रुधिर को पान करि लियो इहाँ बसन रहित में लज्जा अश्लील गिरिबे में अशुभ अश्लील रक्तपान में घिना अश्लील दूषण तीनिहूं भाँति हैं त्रिदश गिनेश गुरुल हसि देवि सो लघु बाइस पैंतिस बरण सप्तम मंडूकल दोहा है ॥ २०८॥

गुरुवारे पायोधर लखा चौबिस नव ग्राम जिर
यह चीत रोरखहू पुखया बरसिय ग्राम ॥ २०९ ॥

हे गुरुवा पावधरी बिसनवसा चुरामे आइ ताते बतावो चिरैया आदि नक्षत्र कौनोह मारेगा उँमा बरसीया दोहा में जावत शब्द ते गावन बोली में प्रसिद्ध है काव्य में नहीं ताते ग्राम्य दूषण है गुरुवारे १२ लघुस चौबिस छत्तिस बरण गेरवाँ पयोधर दोहा है ॥ २०९ ॥

गुरु यकदासी सोंवरत पापन बश फल पाय।
लघु भाखतिया काकरी सकरस देहु बलाय २१०॥

गुरु एकादशी व्रत हैं आजु अन्न में पाप बसत फल भोजन करु इत्युक्ति प्रान्तीय कर्ता शाकर मंगाइ देहु या दोहा में संदेही

शब्द है ताते संदिग्ध दूषरा है गुरु एकादश ११ लघु प्राकृति कहे बत्तीस एका कहे एक और चबिस में तिस वरण बारहमच्चल दोहा है ॥ २१० ॥

ज्ञाजा निवटचन छंद अप्रतीतल निसवास
लोगवहवागतरावलत भौटवानरसवास २११॥

दारिद्र दिशा दसाहूं में है जीवबेकी विश्वास में अप्रतीत है लोग घर छाड़ि जात पहार पै वानर अरिफल फूलखाइ वास करत ज्ञाना ब्रज में दारिद्र को कहत जानिय पारस्तान में दिशन को कहत ठैन इंगलिस्तान में दस को कहत नाग वा अवध में लोगन को कहत वागतजैपुर में जावे को कहत रावल घर को जैपुर में भौका चित्रकूट में पहार को कहत इत्यादि शब्द एक एक देशमें प्रसिद्ध हैं सर्वत्र नहीं ताते अप्रतीत दूषण है ज्ञा गुरुदयन दशाल विश्वास दश गुरु अट्ठाइस लघु अरतिस बरण तेरहमवानर दोहा है ॥ २११ ॥

गृहगुरुलघुतीसव दिवस मित्र कलकनेयार्थ
इन्द्रधामकटिनाहडरहानि बहुतलघुस्वार्थ २१२॥

घरमें छोटे बड़े तीसो दिन वने रहत समय नहीं पावयत ताते मित्र मिलिबे की कलक नाहक है इन्द्रधाम नाक काटिबे को डरताते हानि बहुत स्वार्थ लघु है इन्द्रधाम कटिबा लक्ष्यार्थ तेज्यो त्योनाक अर्थ जानो गयो ताते नेयार्थ दूषरा है यह ६ गुरु लघु तीसबनालिस वरण चौदह मर्कल दोहा है॥ २१२॥

बसुमतिदुहितानाह गहि के ट धनुष प्रचण्ड।
चतुर आस्यजजतनय दलकीन्हे सकल अकण्ड २१३

भूमि सुता पति रघुनाथ जी कठोर धनुष गहि शीघ्र गये ब्र-
ह्मा पुत्र ता पुत्र ता पुत्र रावण को दल अकच्छ कीन्हे इहाँ सी-
ढ़िन सीढ़िन चढ़ि अर्थ मिलो तातेक्लिष्ट दूषण है ब्रह्मा के चा-
रि पुलस्ति को एक विश्वेश्वर वाको एक रावण के दश मुख
सब सोरह भये दलइने किहे बत्तिस लघु वसु आठ गुरु चालि-
स वरण पन्द्रहमकच्छ दोहा है ॥ २१३ ॥

**सुनहु गौरि ऋषि सप्त कहि तिस विचारलहु व-
च्छ अब भय तव तय भ्रंश सब भसम केतु भय मच्छ २१४**

सप्तऋषि कहे हे गौरि सुनो कहो जौने विचार में रहो सो
लेउ अब काम भस्म भयो इहाँ मच्छ केतु को केतु मच्छ क-
हे पद विधान छाड़े हैं ताते अपभ्रंश दूषण है गौरि सप्तगुरु ७
तिस विचारलहु तीस चारि ३४ लघु यकतालिस वरण सोर-
हमम मच्छ दोहा है ॥ २१४ ॥

**इछति सकल शार्दूल सम विरुधन रस गुरु देश नि-
ज कुल कमल सुताप कर हित कुमुदनै कलेश २१५ ॥**

विरोधी सब सिंह सम देखत गुरुजन देश में रस कहे प्री-
तिमान् देखत आपने कुल कमल के प्रकाशक सूर्य्य हित
कुमुदन के सुखद चन्द्रमा इहाँ तापकर कलेश शब्द सुनत ।
में विरोध लागत ताते विरुद्ध पद दूषण है छत्तिसकल लघु
३६ रस गुरु ६ बयालिस वरण सत्तरहम शार्दूल दोहा है २१५
इति शब्द दोष ॥

**अथ वाक्य दोष धनु गहि सर ५ हि वराते समल
कलह हनति समूह अरि जीवन सुख लिपि लिपन भ
प्रति कूला च्छर न्यूह ॥ २१६ ॥**

अथ वाक्य दोष धनुष गहि सर सभुग हनत ते लहलहात बिधागनि ज्वलित मर्म्म से ते अरि जीवन भुसाक्षर पाँति मिटाइबे हेतु मानो प्रतिकूल अक्षर है इहाँ वीर रस भेद वर्ण चाहिये सो नहीं ताते प्रतिकूलाक्षर दूषण है गहि सर गुरु ५ बरति सबकार की अकार ले अरतिस लघु तेंतालिस चरण चठारहम अहिवर दोहा है ॥ २१६ ॥

श्रुति अरि गुरु लघु चलि सब्द कारि इति कुकबि बिसंधि मनरुचि चरत बिआघ्र जिमि मानस मद बुधि अंधि ॥ २१७ ॥

जे वेद ते विरुद्ध लघु गुरु चलित सन्धि रहित शब्द वर्णन करत ते यथा व्याघ्र मनरुचि चरत तैसे कुकवि विषय कोमन मद सों बुद्धिकारि अंधे निर्भय काव्य करत इहाँ व्याघ्र शब्द को बिआघ्र कहे ताते बिसन्धि दूषण है श्रुति चारि गुरु चालिस लघु चवालिस बरण बनरइसम व्याघ्र दोहा है ॥ २१७ ॥

गुरा गुरुजन बुधि न पद नद सरम ससुचालि तितन सदन पिय मन मुखक डर रति बिलसि बिडालि ॥ २१८ ॥

गुरा गुरुजन शरम नमद सुचालि साधु तिया को तनसदन में बुद्धि पतोहू न्यून पद माने पतोहू शब्द नहीं है पीयमन मुख करति डर तिया बिडाल चाहिये सो तिया शब्द नहीं ताते न्यून पद दूषण है गुरा तीनि गुरु बिलसि चयालिस लघु पैंतालिस बरण बीसम बिडाल दोहा है ॥ २१८ ॥

श्रुति श्रुति सुन करि लघु निलज इगुरा अधिक पद लाज परम सुभग मत सुतरु निपति रत कृतगृह काज २१९॥

वेदवाणी कान सों सुनि निलज्ज ताको लघु करु लाज पद को दुगुण अधिक करु हेतु रुनिपति मेंरत ग्रह को काम यह सुन्दर मत है दुगुण अधिक ताते अधिक पद दूषण है श्रुति वृत्ति चवालिस लघु गुरुत छियालिस वर्ण अंकेसम सुनक दोहा है ॥ २१९ ॥

कलंकित शशि गुरु तिय निरत ब्रत्त हत छुट-त सुरपुर लहि मत घट चलि सुचल मग कुचल तज तउ दूर ॥ २२० ॥

गुरुतिया में रत भये ते चन्द्रमा कलंकित भयो उत्तम चित्त की वृत्ति नाश भई मन्दबुद्धि भये गुरु कोप ते देवलोक छूटि जातो ता त्याग करे ताते शास्त्रन को मत लैके सुचाल चलो कुचाल दूरही त्यागी वृत्तान्त में संभ्रमता नहीं ताते हतवृत्त दूषण है शशि एक गुरु छट चालिस लघु सयतालिस वर्ण बाइसमउ दूर दोहा है ॥ २२० ॥

लय चलि सरबसु लय रिसुनि चल सुनि किन तरुनि कसकस सुनि सुनि कथित पद कत बकब क करियरुनि ॥ २२१ ॥

लेचलु सरबसु ले सुधु चल हेतरुणि सुनत काहे नहीं-ज्वाब है यरुनी काहे को बक बक वहीबात बारबार कहत उहाँ एक पद है है बार परे ताते कथित पद दूषण है चलि सरबसु अरतालिस वर्ण लघु तेइसमसरब दोहा है ॥ २२१ ॥

वैदशाप तत प्रकर्ष करि अकुर रुद्र बल पाइ। प्रबल प्रताप प्रचण्ड भुजदण्ड चण्ड शर छाइ २२२

रुद्र को बल पाइ असुरन को प्रताप प्रबल है ताते उत्कर्ष

करि भुजदराडन सों प्रचराड शर छाड़ दियो ताते देवपत है प्रथम चरण देखो दो शर में रुद्र ग्यारह मात्रा दोहा को दूषण है प्रथम दल सम वरण दूजे उद्धत वरण एक रस रीति नहीं ताते पतत प्रकर्ष दूषण है ॥ २२२ ॥

व्याकरनामरकाव्य द्विज पढ़ पुराण वेदान्त।
चरणादी मात्रै जगन कर समाप्त पुनरान्त ॥२२३॥

हे द्विज व्याकरण अमरकाव्य पुराण वेदान्त पढ़िले पढ़ो पीछे वरण मात्रागन पढ़ि समाप्त करो इहाँ व्याकरणादि पढ़ि वरण मात्रा पढ़िबो पीछे कहे ताते समाप्त पुनरात्त दूषण हे नादी मात्रै जगन आदि पद तीजे पद में जगन नादी जे यह दोहा को दूषण है ॥ २२३ ॥

चरणांतरगत जोर दोहाथे कहि चलहु किन।
करती क्यों अलि सोर ढगिनी स्वहिं बोले कहा २२४

हे ढगिनी मोको कहांको बोलावती तब पावन के बीच दोहाथ जोरि कहत हे अली चलती क्यों नहीं इमा क्यों करती चरण उलटि कहेते दोहा की सोरठा छन्द भई दोहाथे जोर अंस पद चाही जोर हाथे के बीच में दो अक्षर परा ताते चरणा न्तर्गत दूषण है ॥ २२४ ॥

अहा भुवन मत एकही यह दोहिमकर कहि।
आस पूर्ण असा जिहि बिन सो कवन रुद्रशीश को
बास ॥ २२५ ॥

भुवन के मत एकही है सोय चन्द्रमा कहांते भये जाको पूर्ण रहे पूर्णिमा बिन रहे अमाव ससो चन्द्रमा कौन है रुद्र शीश पर बास करत सो कवन है इहां अहा पद को कहिं

तीसरे रुद्रयोरा कवनबास अस्त करिये तो बने इहाँ सम्बन्धको निबाह नहीं ताते अक्षर मुख्यार्थ नहीं कहि सकत ताते अभवनमत दूषण है भुवन चौदह रुद्र ग्यारह पच्चीस मात्रा रोही छन्द ॥ २२५ ॥

सबतन भूषण विषम सदसा येक रमनीय माल दोहरा बिन गुण तह अकथित कथनीय २२६

सब तन में भूषण विषम है एक दशा सुन्दर है बिन गुण दोहरा माला है इहाँ बिन गुण चाहिये सो नहीं ताते अकथित कथनीय दूषण है भूषण २२ दशा एक ११ तेईस मात्रा दलमें दोहरा छन्द है ॥ २२६ ॥

पूरण पद स्थानस्थ शशि तम दिशि दश तीनिउं लोक भरि सगरि बीति गो तकत निशि तुम्हें देखन तउ लाला परि ॥ २२७ ॥

पूर्ण शशि स्थान पद पर अस्तभयो तम दशहूं दिशा तीनिहूं लोक में भरि रहा है सगरी राति देखत बीति गई तबो तुम्हें देखन लाला परी इहाँ पूर्ण पद शशि ढिग चाहिये सो नहीं ताते स्थानस्थ पद दूषण है पूर्ण पन्द्रह दश तीनि अट्ठाइस मात्रा उल्लाला छन्द है ॥ २२७ ॥

एक दशौ दिशि घेरि विदश अरि बीच ठाढ़ि हरि गनत स्खलनरन भूमि अन्त पद तिनहिं सुलघु करि जी [illegible] सखर त्रिशिरा हि दूषण [illegible] जयश [illegible] काव्य सर्ग [illegible] सकल सुर मुनि सकिय ॥ २२८ ॥

बीच में हरि एक ठाढ़ि राक्षस दशौ दिशा घेरि रहेन भूमि में [illegible] ज्योतिन को लघु करि गनत हैं खर दूषण त्रिशिरा

सहित दल ह्वै गो मैं प्रभुजीति लियो ताको देखि सुर मुनि सक-
ल संकीर्ण काव्य करि जैजैकार शब्द करत इहां एक शब्द
हरि शब्द गनत लघु करि जीति लिये जय शब्द किय इत्यादि
शब्द दूरि परे बुद्धि ते ज्यों त्यों मिलाइ लिये याते संकीर्ण दूष-
ण है एक दशो चिन्ह चौबिस मात्रा की काव्य छन्द है ॥२२८

बाम सुत बित पाय गर्वित साधु सतमति।
होत शुभगति ॥ २२९ ॥

वनिता पुत्र द्रव्य पाइ अहंकार के वश भूले तामें कुग-
ति होइगी ताते सत् साधुन की मति में रहो अर्थात् परमेश्वर
को भजो तब शुभगति होइगी सत् कहे सात मात्रा की शुभ-
गति छन्द है साधु मति शब्द के बीच मति शब्द है ताते गर्वि-
त पद दूषण है ॥ २२९ ॥

मांगैना मागरु रन्थ कंठी माल मोती गुहे वा-
हे तेरे दृग वसि वसे सो नैन वाके तु है प्रक्रमैं भंग त-
कि छकि क्यों दोहारिनी के रहे तू वोले माननि हि-
तव मानी वास देशो कहे ॥ २३० ॥

प्रथम पद मांग है तामें मोती गुहिबो पहिले चाही दूसर
नासा तामें नाथ चाही तीजो गर तहां कंठी चाही चौथ उर
तामें माला चाही इहां भूषण स्थान के क्रम ते संग नहीं ब-
नत ताते प्रक्रम भंग है वाहे तेरे दृगवसी तहां त है वाके नैन
वसो सो नहीं इहां नैन एक सम नहीं याइ प्रक्रम भंग रूप-
स्यरतकि छवि सो छकि दोऊ हारिनी के क्यों रहे तहां चाहि-
ये ज्यों प्रक्रम भंग भये थकि रहत क्यों जवाब पर ज्यों चा-
हिये सो नहीं इहां विधि समेत बात नहीं ताते याइ प्रक्रम भं-
ग है संदेशादि हेना मानी तव तुम बोलायो अस चाही यामें

तैं तुम बोलावो ना मानी तौ संदेशो कहे मानी इहां प्रथमही।
क्रम छाड़े याते प्रक्रम भंग दूषण है भगोनासागरः१र मः गुः नः
मः गुः रः रः ऽऽऽऽ।।।।।ऽऽ।ऽऽ।ऽ दोहारिनी छन्द है॥२२० ॥

गाहादोहाथप्रसिद्धहतपशुचूड़ामणिकोप।
त्यौंपंजनहिनिशाचरन दशरथसावकचोप दश-
रथसावकचोपासित परअर्थचापशायकले रम-
कि झमकि रणभूमिकामसेशोभितोपायकले॥
२२१॥ इतिवाक्यदोष॥

यथा सिंह कोपकरि दोऊ हाथन गहि पशुन को प्रसिद्धही मारत
तैसे पंजन सों गहि निशाचर मारिवे को दशरथ के सावक को चोप
है यहां सावक प्रसिद्ध सो दशरथ सावक कहे नरके कर प्रसिद्ध सो पंजा
कहे सिंह के पंजा प्रसिद्ध सो हाथ कहे याते प्रसिद्धहत दूषण है दशरथ
के अभित चोप पराये हेतु धनुषवाण लै सेवकन सहित रमकि
झमकि रणभूमि में काम से शोभित होत रमकि झमकि शब्द
शृंगार रस में चाही याते अमत परार्थ दूषण है गाहा दो-
हा मिलि चूड़ामणि छन्द है॥ २२१॥ इति वाक्य दोष॥

अथ अर्थदोष तूकामैमत्ताक्रीड़ानिरखि द्विज
गुरुतकतनहिंलजत हो सारोगावापुरुषार्थकैक-
हतलघुवरणाहितहू तजत हो तौसोनाचन्दातैबं-
यौकलंकितशशि भयकह्बहुकह्नो ऐसी तौ क्यों
नाताको व्याहत्त कुकरम करि अजसहिलह्नो २२२

अथार्थ दोष तू सदा कामै में माता रहत तेरी क्रीड़ा द्विज
गुरुजन नयनन करि देखत तो को लाज नहीं आवत सारोगा-
व पुरुष करि तेरी लघुता कहत यामें कछु बड़ाई नहीं है ताहू
पर नारी तजत हौ जैसा तू कलंकित है तैसा चन्द्रमा नहीं है तू

ताकलाकित चन्दवंशाही मे उत्पन्न भयो है बहुत कालकी ये जो ऐसही करना है तो वाको विवाह क्यों नहीं करि लेत कुकरमकरि अयश क्यों लेत नयनन द्विजगुरु तकात इहाँ दे- खनेही में अर्थ बनत नयन कहनो वे प्रयोजन ताते अपुष्टार्थ दूषण है पुनः तू कलंकित तू ससि चन्द्रमा नहीं यामें चन्द्रमाकी बड़ाई करे पीछे कहत चन्द्र कलंकित वंशाही में तुम भयो ब- ड़ाई करि निन्दाकरी याते व्याहत दूषण है मे मत्ता नयनन द्वि- ज गुरु म: म: त: न: न: न चारि लघु गुरु ऽऽऽऽऽऽऽऽ।।।।।।।।।।।।ऽ मत्ताक्रीड़ा छन्द है ॥ २३२ ॥

तोशिंगारसम चौदह ढूँढ़त सब कष्टार्थ सहत त- हूना मीठीवात कविन की वाणी पुनि पुनरुक्त कह- तलहना सुरपुर आदि लोकनहि पैये तव नरसद्कुक्र म कहनो साँचोबोलगाउँ सब देखो घर घर एक ते। एकजनो ॥ २३३ ॥

तेरे रूप शृंगार के समिता योग चौदह लोकन में ढूँढ़त स- बकष्ट चथे सहते हैं तहाँ नहीं है इहाँ चौदह शब्द को अर्थ भुवन सो अक्षरन ते बाहेर ताते कष्टार्थ दूषण है कविजन वाणी में मीठी मीठी बातों में उपमा कहत पावत नहीं इ- हाँ वाणी बात का एकही अर्थ ताते पुनरुक्त दूषण है देवलो- कादि में समिता ना पैये तव कोमल क्रमते नरपुर में कहो इ- हाँ उलटोक्रम ताते दुःक्रम दूषण है मेरो बोल साँचो मानि। सब गाउँ में देखो घर घर एक ते एक जनी सुन्दरि है यह गँवारी बात ते ग्राम्यर्थ दूषण है शृंगार सोरह चौदह तीस मात्रा चौबोला छन्द है ॥ २३३ ॥

कोपायाकुलमित्रैभंगी कीसंदेहनाहबहुरंगी

रोवत आँसु सँभारन चेत बालकुलास गयो निरहेतु निरहेतु दुखाही अचरज नाहीं नाहिं अचर्य बिलखत लरिका अनविकृत विकाही पशु सगराही नाहिं अचर्य रीझै भरिका वातुल मतवारे भूत धरारे नहिं अचर्य रोवै गावै कामातुर क्रोधी धर्म विरोधी नहिं अचर्य करि है कावे ॥ २३४ ॥

मित्रता भंग भई की पति बहु नारिन सों रगो यह निश्चय नहीं की बाला काहे ते व्याकुल है याते संदिग्ध दूषण है बालको आनन्द जात रह्यो रोवत में आँसुन को सँभार नहीं नारेन की सुधि इहाँ रोवबे को हेतु नहीं कहे याते निरहेतु दूषण है बिन हेतु वनिता दुःखित होइ अरु लरिका रोवै ताको कछु अचर्य नहीं अनविकृत घर के भये विकाही मोल के लिये पशु संग में रहत ते रीझि कै लगे आवै भरकि के भागै तौ कुछ अचर्य नाहीं बाई के भरे भरे मतवारे भूत के धरे रोवै गावै तौ कुछ अचर्य नाहीं कामी क्रोधी धर्म विरोधी चहै जो करै कुछ अचर्य नहीं इहाँ बहु अर्थ एकही रूप होत जात याते अनविकृत दूषण है पाया कुलक त्रिभंगी मिलि कुलास छन्द है ॥ २३४ ॥

सुख मृदु वचन नियम हृदय मिठ दिशि वसुन तुम सरिख्यु । ज्ञोहित्कग्रातितिआर् ८।। इ तकि त्रपित निशिहि मिलि नित सवातिसलज नियमन सिख्यु ॥ २३५ ॥

मुख ते मृदु वचन बोलिबो हृदय मीठा राखिबो नेम है याते तेरी समिता आठहु दिशि जग में नहीं है इहाँ मुख ते मीठे वचन कहबो नेम चाही तहाँ मृदु वचन कहे हृदय मृदु कहिबो चाही ताको मीठा कहे इहाँ नेम में अनियम दूषण है

जाको अति हित करिकै मानत इहां सो सगाहू तकि तृपित होत भवति के लाज ते रातिही को नित्य मिलन हित को देखि तृपित ना होना यह अनेम याही तहाँ सगाही तकि तृपित होना नेम कहे सदा मिलनो अनेम चाभै तहाँ रातिही मिलनो नेम कहे सवति ते लाज करनो नेम नहीं तहाँ सवति ते नलाजो नेम कहे ताते अनियम में नेम दूषण है वसुनज आठ नगन। एक जगन प्रथम दलवतिस लजवतिस लघु पर जगन दूजा दल सिख्या छन्द है ॥ २३५ ॥

भाराक्रांता भुषणतन सो गुमान सजे जगो देख। पीनैन तृपितन भास आस्यविषे खगो मीठे से बेन रहनिसु एकही मन द्वैतनो प्रेमैमाती रहन तहँ मानही अविशेषनो ॥ २३६ ॥

सहित गुमान तन में क्रान्ति भरे भूषण सजे जागत मुख की शोभा विशेषिनीको लागत जाके देखे पीव के दृग तृपित नाहीं होत इहाँ सब तन सामान्य मुख की शोभा विशेष। कहे ताते अविशेष में विशेष-दूषण है मीठे बचन सहित रहनि तन द्वै मन एकही प्रेम सें सदा माती रहत तामें मानकरत इहाँ प्रेमादि विशेष में मानु अविशेष दूषण है गुमान सजे। जगो शुः मः नः सः जः जः गुः SSSS।।।।।ISIS।।SIS भाराक्रान्ता छन्दहै ॥ २३६ ॥

मन्द सुगन्धावत सुपवन शीतल शोभा मही। बसु दिशि फूलो बिपिनि भौंर गुंजत डोलही दूसरहेरो मनत रस तरा हिनको यासेंं किमि घर कां छाड़ि पति हौं सकांक्ष बसंत मे ॥ २३७ ॥

शोभामयी भूमि पर शीतल मंद सुगन्ध पवन बहत चारहु

दिशि वन फूलो भंवर गुंजत फिरत दूसरे देखो पथिकन को मन छन केतु तरसत या वसन्त समय तुम सहित रहन की सो को आंसा है हे पति ऐसे में घर क्यों छांड़ि हो घर छांड़ि कैसे जाइ हो यह पद नाहीं ताते साकांक्ष दूषण है वसुदिशि अठारह । वरण प्रथम दल सत्रह वरण दूसरे दल गंधा छन्द है ॥ २३७ ॥

वर्षकाल रितार्द्ध मास जस तैसे पक्ष ललिता पक्षे मे दिन सा निशार्द्ध ललिता युक्तो विधि कृता जामाष्ट घटिका मुसाठि पलकी एको पलक में गाथा ज्ञान नुवाद सार जग को हेरो खलक मे ॥ २३८ ॥

वर्ष में त्रयकाल ताको आधा ऋतु ताको आधा मास ता आधा पक्ष ता में आधे दिन आधी राति इहाँ विधि ते आधा कर्म चला तहाँ वर्ष में तीनि काल कहे कर्म छूटि गयो ताते विधि करिके अयुक्त पद दूषण है राति दिन में आठ याम साठि पलकी घरी एक पलक में कथा ज्ञान अनुवाद जग को सारंश जग में ढूंढो तो इहाँ ज्ञान भक्ति में याम घरी अयुक्त है ताते अनुवाद करिके अयुक्त पद दूषण है मास जस तैसे मः सः जः सः तः सः ऽऽऽ।।ऽ।ऽ।।।ऽऽऽ।।।ऽ सार्द्ध ललिता छन्द है ॥ २३८ ॥

कानें को मोती निसरि गय नखवा अंक लागे भुजा में चम्पा पै गुंजे भ्रमर गुहें न क्यों पाइये फुल्लदामै संझा में सोवै गुरुजन अबही जान दे राह सांधी नातो भादौं चांदनी निशि तकि सभालोक वेदो विरोधी ॥ २३९ ॥

काने को मोती निसरि गयो नखांक भुजन में लागे चंपा पै भ्रमर गुंजत फूलन को माल कैसे गुहन पाइये संझा समय गुरुजन सोवत अबहीं जान देउ नाहीं भादौं चांदनी राति में सब सभा देखी इहाँ नखांक कुच में चाहिये सो भुज में कहे अंग-

रूपी देश विरुद्ध है चम्पा पै भँवरलोक विरुद्ध है साँझ सोइबो वेद विरुद्ध भादों चाँदनी कविरीति विरुद्ध दूसरा है मांती निसरि गय मः तः नः सः रः गुः यः ऽऽऽऽऽ।।।।।।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ फुल्लदाम छन्द है ॥ २३९॥

नछाया मानो सो गरूरनहि हीये के धनी मानती प्रकाशै ना दोषै विरुधनाहि राखै पीरु पी जानती पिया एकै चाहा रुपिय यक चाहै दोऊ एकै कमा स्वकीया सामान्याहि सहचर भिन्नो आत्म एकोपमा ॥ २४० ॥

जिनके मानकी छाया सी नहीं न उर में गरूर राखै एक ही धनी कहे नाह को मानती है ताके दोष को कबहूं प्रकाश नहीं करती न विरोध राखै एक पतिही को स्वपजानती है इति सुकिया तामें गणिकाहू को बोध होत धनी दर्विमान को मानती एक रूपैया पीव जानती यह प्रकाश अर्थ को विरोध करती ताते प्रकाशित विरोधार्थ दूसरा है पुनः एक पियाको चाहत एक रुपिया को चाहत दोऊ को एकही काम है ताते सुकिया सामान्या दोऊ आत्म तत्त्व करि एकही उपमा है केवल संगती इनको उनके न्यारे हैं इहाँ ऊंच नीच के संग कहिबो सहचर भिन्न दोष है या मानो सो गरूर ।ऽऽऽऽऽ।।।।। ऽऽऽ।ऽऽ।ऽ छाया छन्द है ॥ २४० ॥

रामस्त्रीलार्थ ज्यों मार्गन लसत सुरारि सर्वबदना तैसे कादंब नारी सुभग भरत तत्‌ अंकुर मदना नामें कोपही में भवन गहत भारवो ना कुवचना लाख्यां सौगंद खायो तजत तजि सुनारवा काव्य रचना ॥ २४१॥

इति अर्थ दूसरा ॥

श्रीरामलीला में रावण के सब मुखन में बाण छेदे शोभित भये तेमें समूह नारिन सुभगा सुख में मदनांकुर भरत हो लज्जा मा भागो पद ते शील दूषण है नमोउरकोपन कुवचन। कहो चुप ह्वो परन्तु लाखन सोगन्द खाय तजे तजि के फिरि सोई रचना करते हो याते त्यक्त पुनास्वीकृत्य दूषण है मारगनन्नस नसु ऽऽऽऽ।ऽऽ।।।।।।ऽऽऽ।।।ऽ सर्ववदना छंद है ॥२४१॥ इति अर्थ दूषण ॥

अथ भूषण अभ्यांगमंजवासदय सजाव कवि चित्र सिरज सँवारि बीच रक्त पांसुताहि भाँति चन्दन लगायल कर नलाल हिय दल सुभगा हि बीच अरगज नाक नथियाति फल पितु दास महि मारी मीसि कुंद बीच भौंर की हकीक तिन कंदु मुलदल कांति कज्जल में दृग चतुराई विरवा बीस सजि पाटी रूपघन अच्छरी शिंगार दिव्य पाँति ॥ २४२ ॥

अथ भूषण अभ्यांग उबटन लगाय मंजन कारि वसन पहिराइ विचित्र महाउर दै बार गुहि सेंदुर दै चन्दन लगाय मेंहदी कर में लगाइ उर पर अरगजा नाक में नथ फूल माला सुगंधित दांत में मीसी ताम्बूल नेत्रांजन चातुरी इत्यादि शृंगार की पाँति घनाक्षरी रूप पाटी पर लिखीसी है अभ्यांग कानसुने कटु ताते श्रुतिकटु है मंज में न कार वरणघटि। ताते भाया हीन है वसन वास शुद्ध है कवि घनाक्षर योग्य ताते अप्रयुक्त है सजाव क विचित्र जावक अर्थ कहिबे की शक्ति नहीं ताते असमर्थ है सिरज सँवारि बार सँवारिबो नहीं प्रसिद्ध कारि सकत है शिर औ यश प्रसिद्ध करत ताते निहितार्थ है रक्तपांसु सेंदुर उचित शब्द नहीं है ताते अनुचितार्थ है लगायल मलकार निरर्थक है मेंहदी की लाल क्रिया दल।

बनाइ लीनो नाम है ताते अवाचक है शुभगाहि बीच लज्जा करत ताते अश्लील है नाक नथिया गवारी बाली ते ग्राम्य है फूल को फल पितु नाम संदेही है ताते संदिग्ध है मल्लिमारी एकदेशी सुगंधनास ताते अप्रतीत है कुंद बीच भौंर की न्नीकृतिना लक्ष्यार्थ शांत ताते नेयार्थ कन्दु सुत दल कान्ति सीढ़िन सीढ़िन अर्थ पान ताते क्लिष्ट है कज्जल में दृग शब्द विधान छाड़े उलटा ताते अपभ्रंश है चतुराई विश्वा में विरुद्ध होत विश्वा गणिका को कही ताते विरुद्ध मति कृत है इत्यादि शब्द दूषण को भूषण यथा रूप पाटी पर घनाक्षरी पाँति शृंगार की लिखी दीप्तमान है क्रमते शृंगार रूपक अलंकार करिकै भूषण है शृंगार री बत्तिसवर्णान्त लघुरूप घनाक्षरी छन्द है ॥२४२॥ इति स्त्री सोरह शृंगार ॥

मंज उबटि अंग श्याम पट चपला सो लिखि के। तिलक रेख अंजन शोभित कल झलझल कुण्डल बुलाक तकि चाह फूल गरेहार सजा शिर कीट पद नूपुरल कटिही पै मेखलांग चन्दन सकंचु मणि कंकण करण में चटक चावि अहि दल चातुरी सुमन हरि प्रफुलदलन युत तन तरु वरहि सफलित शृंगार फल ॥ २४३॥ इति पुरुष शृंगार ॥

अथ वाक्य दोष भूषण श्याम अंग पै उबटन लगाय मंजन करि पीताम्बर वस्त्र भाल पै तिलक नेत्रांजन कान कुंडल नासिका पै बुलाक गरे फूलादि हार शिर पर कीट पांन में नूपुर कटि पै मेखला अंग चन्दन उर पै कंचु मणि कर में कंकन मुख ताम्बूल चातुरी इति शृंगार वाक्य दोष यथा उबटि वर्ग रौद्र रस में चाही ताते प्रतिकूलाक्षर है पहिले मंजन तब उबटन यह अनमिल पदनाहीं ताते हतवृत्ति है उबटि अंग में

मन्दि नहीं ताते विसंधि है पद चपला सो तहां श्याम तन मेघ मां चाहीं सो नहीं ताते न्यून पद है लिखि कै तिलक रेख रेख अधिक पद है अंजन अंजित चाहिये सो रीति लिहे नाहीं ताते पतत प्रकर्ष है झलझल है बार ताते कथित पद तकि चाह स-माप्त पुनः कहनो पुनरात ताते समाप्त पुनरात है फूल हार बीच मां गर शब्द परो ताते चरणांतरगत पद है सजा कवि हृदय को अर्थ नाहीं कहि सकत सम्बन्ध निबाह नहीं सजे चाही ताते अ-भवन मत्त योग है नूपुर लसै अवश्य कहियो चाही सो नाहीं ताते अकथित कथनीय है कटि ढिग मेखला चाही सो नहीं ताते स्थानस्थ है ही शब्द ते कंचुकरिण दूरि है ताते संकीर्ण-पद है ही येलाग चन्दन ताबीच मेखल शब्द है ताते गर्वित प-द है चटक चाबि अहिदल ऐसे शब्द रौद्र रस में चाही ताते अमत परार्थ है शृंगार फलन में कहे तहां चातुरी सुमन कहत यह बिधि सहित बात नहीं ताते प्रकम भंग है प्रफुल्ल फूलन को प्रसिद्ध है तहां प्रफुल्ल दलन युत कहे ताते प्रसिद्धहत है इति वाक्य दूषण सुन्दर मन को आनन्द हरे दलनयुत चातुरी फूल तनतरु शृंगार फलन ते फला है इहां रूपक अलंकार ते शृंगार अर्वाम ताते भूषण है चन्द पूर्वही की है इति मुख्य शृंगार २४३

द्युति शशि झलक लावनी पानी पानी जात सवैया जान बिन भूषणाहि विभूषित रूपा सुन्दर सजत सुठो-र समान रसन्य न देखसि देखत सो न सि कांति अम्लन दृग मधुरान परसे परसन मृदु समने की तीस कुमान्य चरजन डरान ॥ २४४ ॥

अथ अर्थ दूषण भूषण शोभा के अंगायथा चंद्रमा की सी झलक ताको द्युति कही पानी जात मोती ताको जैसो पानी ताको लावनी कही बिना भूषणों भूषित ताको रूपक हीसब

अंगसुठौर सजे ताको सुन्दरता कही देखत में अनदेखी सीचा-
हताको रमणीकता कही सोना की ज्योति को कान्ति कही-
जा देखि तृप्ति ना होइ ताको माधुरी कही परसे त परसना जा-
नै ताको मृदुता कही फूलन पर पांवधरत डराइ ताको सुकुमा-
ता कही इति शोभा अंगनव हैं इति कहि चुके झलक बिना
कछु बिगरत नाहीं ताते अपुष्ट है पानी जात के पानी मसना-
वनी यह अर्थ अक्षर नहीं कहि सकत ताते कष्टार्थ है बिन
भूषणो विभूषित भूषणो तेजस की चाह भूषणो को निरादर-
ताते व्याहत है सुन्दर सजत सुठौर अर्थ एकही ताते पुनरुक्त
है देखत अनदेखी सीं बिन विचार कर्म है ताते दुःक्रम है सान
सी कांति ग्रामीन है हगमधुरान संदिग्ध है परसे परसन मृदु-
यामें हेतु नहीं ताते निरहेतु है मृदु सुकुमार सुमन की अचर-
जन डरान एकही भांति नवा अर्थ ताते अनविकृत है इहां क्र-
मते शोभा के अंग वर्णन ताते दूषण अर्थ आपनो प्रकाश-
नहीं करि सकत ताते भूषण है नेकी तीस यकातिस मात्रा-
की सवैया छन्द है इति शोभा अंगार्थ दोष भूषण ॥ २५४ ॥

तुवाहीवा तेरी प्रणाय मन ललाकै ति प्रेमे अशक्ती
बिना कीने तेरी सुधि लगन सदा लागत सानुरक्ती रं-
गी तेरवा नेह मिलनि हंसि बोले तके लाज रीती चको-
री चंदा प्रीति विशुधि सुख भाखे सुधा बैन जोती २५५

इति अर्थ दोष भूषण ॥

प्रीति अंग यथा सो०। प्रणाय प्रेम आशक्ति सुनि लगन।
लाग अनुराग। नेह सहित सब प्रीति के जानव अंग विभाग
तू वाको वा तेरी या अपनपौ को प्रणाय कही याकी सौम्य-
दृष्टि मनकी ललकता को प्रेम कही याकी बिह्वल दृष्टि ज-
हां ते मन निकसे नाताको आशक्ती कही याकी एकटक दृष्टि

बिना कीन्हे सुधि होइ ताको लगन कही याकी उत्कराठा दृ-
ष्टि सहजही में चित जामें लागा रहै ताको लाग कही याकी
चापदृष्टि जामें नव रंग रहै ताको अनुराग कही याकी मत्त
दृष्टि मिलनि बोलनि हँसनि नकनि नेह है याकी ललितदृष्टि
यथा चन्द्रमा पै चकोरी ताको प्रीति कही याको स्वाधीनदृष्टि
इति प्रीति श्रंगाट त्व शब्द जासों कहत ताको बोध यह नेम।
याहि न मालूम काको कहत यह अनियम ताते नेम में अनि-
यम है तैसेही वा शब्द अनियम त्व नियम ताते अनियम में
नेम है सदा आगनपो प्रकाथ विशेष में ललक क्षरा मात्र सा-
मान्य ताते विशेष में अविशेष प्रेम सामान्य में आशक्ती।
विशेष ताते अविशेष में विशेष सुधि होन असचाहीं ताते
साकांस पद है सदा लाग त्व सदा लागी त्वा या विधि सहित
बात नहीं ताते विधि करि अयुक्त है रंगी तेरे नेह रँगिबो अ-
नुराग को चाहै नेह रँगिबो प्रीति दशा विरोध है हँसि बोले
तके स्वकिया परकिया दोऊ होत ताते प्रकाश विरोध लाज
प्रीती में इलीलार्थ चकोरी चन्द्रा प्रीति यकंगी ताते सहचर भि-
न्नहै नियुक्तित्यक्त पुनः स्वीकृत्य है इति अर्थ दूषरा इहाँ प्रीति
श्रंगार को वर्णन ताते दूषणार्थ प्रकाश नहीं करि सकलता-
ते भूषण है यमन ललाकयत्रीय: म:न: द्वि लघु त्रै यगन -
ऽऽऽऽऽ।।।।।।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ सुधा छन्द है ॥ इति अर्थ दोष भूषण
प्रीति श्रंग ॥ २४५ ॥

निजभुज जोजरांबुज सदा कर कोकउरोज बेबने
विचलितरंग नाभि भ्रमरी कच चारु सेवार से गने ॥
लालित मुक्ताफकराट भय अस्वक पानिपरूप भारहै
स्वच्छ इंग मंजुशील मधुरी युवती सरसी श्रृंगार है२४६

... में ... कमल है दोऊ उरोज को कहै त्रिवली।

तरंग है भ्रमर नाभी है बार सेवार है कराठ सोई शंख है नेत्र-मीन है रूप पानी करि भरोपति में प्रीति निर्म्मलता शील म-धुरता युवती शृंगार सरसी है अस्थाई अरु रस को नाम क-हिबो रसभूषणा है इहां रति औ शृंगार वाचक करिके रूपक अलंकार पुष्ट है ताते भूषणा है निज भुज जो जरा ।।।।ऽ।ऽ।।।ऽ ।।ऽ।।ऽ।ऽ।ऽ सरसी छन्द है ॥ २४६ ॥

हर्ष मिले भई चपलता दृगान विच्च देखि तर्क मति में भौंहन छाइ लाज उर बीच त्रास युत शंक शोच। पति में औत्सुक चाह व्याधि अरु दीनता मरि विषा-द नाहक सहै भाग यशा यशो जस जु हानि सदु कर-तार हाथ हि अहै ॥ २४७ ॥

मित्र मिले हर्ष भयो देखन को नेत्र चंचल भये देखत में तर्क कहे बहु भांति विचार आयो ताते मति कहे ज्ञान भयो ताते लाज भौंहन में छाइ गई मर्य्याद हानि की त्रास उर बीच में पति की शंका करिके शोच भयो उत्तरीत की चाह दोऊ करि औत्सुक कहे आकुलता भई ता व्याधि करि श्रमित भ-ई ता दीनता में मरि विषाद नाहक सहत हौ हानि लाभ। करतार के हाथ है ताते यश अयश जैसी हमारी भाग्य में होई सोई होई संचारी को नाम कहिवो दूषरा है इहां हर्ष चपलता आदि वाचकन करि समाप्त छन्द पूर्ण है ताते दू-षरा है भाग यशा यशो जस ऽ।।ऽ।ऽ।।।ऽ।ऽ।।।ऽ।ऽ।।।ऽ सदुक छं-द है ॥ २४७ ॥

जरत लखत जबै हार को जानिवे ताल सा बावरी कूप खन खन्न होतो। पयधर सुबरसो तै हरेरी भला कासु दे हाय याते हिया धीर गोतो दिनय दिन परवि

ने वहे साय जागे उठे चौंकि देखै भरे नैन सोहे नभ
घनहू घर सूनो शशी सूरव दूनो गये प्राण के पालयी
अन्न होहै ॥ २४८ ॥

लाल कहे नार विना डोरा को हारपति के डरपे देखत ही ज-
रत सरा सरा पर कोप होत ताते सो बावरी भई पै धरन बान
उगंजन सो हमारे वर को चित्त सोतें हरि लई ताते सुदई हाथ
हमारो का भला है याते उरते धीरज गयो दिन प्रति चित्त में
दुःख बहुत सोइ जागे पर चौंकि उठत शय्या देखत ही नयन
भरि आवत नभ सावन मास वनराति तामें घर सूना तासें चन्द दूनों-
निरसता देखावत काहे ते प्राणन के पालपीव गये सुना हार खे-
तीजरत देखि जाने. की चे ताल वे बावली खनि खनि भरत कूप
होत नहीं पै धर मेघ बरसै तो हरेरी होइ सो भला का सुदइ वहा-
थ है याते उरते धीरज गयो ताते दिन प्रति चित्त में दुःख बहुत
सोइ जागे चौंकि उठि देखत ही नेत्र भरि आवत वन घर मेघ ते
नभ सूनो शशि अनाज दूनों सुखात जात सो प्राणन के पाल-
अन्न गयो इहाँ प्रथम अर्थ में विभाव की कष्ट कल्पना रस दूषण
है सो श्लेषालंकार ते भूषण है द्वि२ न यदि न है नगन सात यगन
।।।।।।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ अचित दण्ड कहे ॥ २४८ ॥

गरमाल दुशालन काम कला कुसमस्त वकै नहिं
पूजित देव कदा यह जानि मनै नव साज सजे शिरकंठ
भुजा उरनासहु लंक पदा पट भूषण त्यागि चलो वन
साज मिलै जु सुमित्र बड़े रति में सुखदा पलरोइ पला
हँसि बोलि पला चुप भूतम लाग रहै मन प्रेम सदा २४९

गर माला पहिरि दुशाला आदि काम की कला कबहूं नहीं
करी म फूलन करि लोचन करि देवन की पूजा करी जन्म-

वृथाजात यह मन में जानि नवीन साज भूषण वसन सजे नन्द शिख नव विचारे की यं पर भूषण त्यागि वन जो है गयी ताके साज श्याम वसन पहिरि जानिये जामें रति के सुख दाता सुन्दर मित्र मिले यह विचारि पल में रंग पल में हँसि पल में बोलत पल में चुप रहत मीत को प्रेम भृत सों मन में लाग है पुनः नादाम कला कारे न देव दूजे जन्म वृथा गयो यह जानि नवीन साज करी छाप तिलक करे पर भूषण त्यागि वन साज तपस्या धनकुल वस्त्र धारण करि दलो जामें सुमित्र लक्ष्मण ते बड़े रघुनाथ। प्रीति में सुखदाता मिले यह विचारि पल रोवत पल हँसत पल में बोलत पल में चुप है रहत इसों निरवेदादि शृंगार में दूषण अशेष करि भूषण है नवरा ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ॥ऽ कुसुमस्तवक दण्डक छन्द है ॥ २४९ ॥

दश सत्तावन जुदि ग पर भरत प्रभु हिया निरवभार विचारा माखे लषण क्रोध करि वैना चपल गाथ अपारा ॥ २५० ॥

भरत आगमन दश परत प्रभु के उर में स्वभाव दरशात लक्ष्मण जी विचारि माखे तातें क्रोध करि चपलतातें बहुत वाथा कहि अनेक वचन भाखे इहाँ अंगी वर्णन दूषण है पूर्व तीस दूजे सत्ताइस सत्तावन मात्रा दोउ दल में चपला गाथा छन्द है ॥ २५० ॥

त्रिदश शत्रु बल रुद्र सों रचो रारि हरि प्रिया हरि लायो। विपुल गाथ सुग्रीव कहि भूलि गाव मद घर पायो ॥ २५१ ॥

रावण रुद्र बल ते रारि रचो हरि प्रिया हरि ल्यायो ताके इन्द्र सुग्रीव ते अनेक वार्ता भई जव आपनी राज्य तिया पायो तब

नकी श्री को सौख लेनो भूलि गये इहाँ अंगी रघुनाथ जी अंग सुग्रीव अंगी को भूलि जावो रस दूषण है प्रथम पद में दश दूसरे पद में शत्रु कहे सत्रह तिसरे पद में रुद्र ग्यारह चौथे सोलह मात्रा विपुला गाथा है ॥२५१॥

धुरधीरयुत शान्ति मन सतोगुण पाँति तन शांतरस जाति अनुकूल रघुबीर छलधीर ललितारु। मन रजोगुण धारु रस कृष्ण शृंगारु दच्छिन्न हरचीर चलधीर उद्धत मनतमोगुण रत हररौद्र रस मत छिन प्रीति क्रोधीस सुरधीर उद्दात गुण मिलित चौपाति रस वीरता भाति तिमि धृष्ट सुरइस ॥ २५२॥

धीर शांति शांत रस की प्रकृत्य है औ सतोगुण है यह रस अनुकूल नायक योग्य है धीर ललित शृंगार रसकी प्रकृत्य है औ रजो गुण है यह रस दक्षिण नायक योग्य है धीर उद्धत रौद्र रस की प्रकृत्य है औ तमोगुण यह रस शठ नायक योग्य है। धीरोदात बीर रस की प्रकृत्य है मिश्रित गुण यह रस धृष्टनायक योग्य है धीरशांतियुत मनसतोगुणी तन में शांत रस दर्शित अनुकूल नायक रघुनाथ जी हैं धीरललित सहित रजोगुणी मन तन में शृंगार रस दर्शित दक्षिणनायक कृष्ण जी हैं धीर-उद्धत सहित मन तमोगुणी तनरौद्र रस सहित शठ नायकत्व शिवजी में है धीरउद्दात सहित मिश्रित गुण सहित मनवीर रस सहित सुरनायक धृष्ट नायक है शृंगार श्याम रंग विष्णु देवता हास रसश्वेत रंग ब्रह्मा देवता करुणा रस कपोत रंग यम देवता रौद्र रस अरुण रंग रुद्रदेवता बीर रस पीत रंग-इन्द्र देवता भयानक रस श्वेत रंग जल देवता विभत्सरसनी-लरंग महाकाल देवता अद्भुत रस पीत रंग ब्रह्मा देवताशांत रस श्वेत रंग विष्णु देवता चौपाति रस ६ वीरता ५ स्या-

मात्रा की चारि पाँति चालिस मात्रा की उद्दत छन्द है॥२५२॥

क्षुधित तृषित शोक सानन्द पीनो जग वाल की नो स्ता जन्म आदिव्य नर्नो युवा मोह नाठांवजी भूत ली सा करो धाम पै भंख है पवन गमन व्योम वी- मान छाया विना शाप आशीरवादौ गती दिव्य त- नौं सदा सोहना काल जीता बली सुन्दरो लोक पै खं- ख है प्रकट अवनि देवता मानुषी सृष्टि में रूप धारी तिन्हें दिव्य आदिव्य नर्नो यदा रोहना जाल जीता- गली आवरो लोक पै पंख है नयुग रगन सात सा चं- ड है वृत्य प्रायात ये कै करा देत ता नाम अर्नो सुआ- नौं पुना व्यालजी सूत लीला करो घाम पै शंख है॥ २५३॥ इति पद्य॥

क्षुधित तृषित दुःख सुख दूबर मोट जन्म बाल युवा जरा मरन मोह बश ठाव जिनकी भूमि में धाम परे भंखि रहे इत्यादि चेष्टा युत नर अदिव्य हैं पवन मिलि व्योम में विमान करि गमन छा- या रहित शाप आशीर्वाद की गति काल जीत बली। सुन्दर स्वर्ग लोक में शोभित देवता दिव्य हैं भूमि विषे मानुषी सृष्टि में देवता मानुष रूप प्रकट भये जग को जाल जीते मारग में पांव धरि चलत परन्तु अपर लोक जावे की गति है ते दिव्यादिव्य हैं नयुग है नगन सात रगन चंड वृत्य प्रपात दंडक है तामें एक- रगन दीने अर्नो ये कौर रगन दीने सुआनौं एकौर रगन दीने व्या- ल एकौर रगन देत जी मूत है एकौर रगन दीने लीला कर है एकौर रगन दीने उद्याम है एकौर रगन दीने शंख है।।।।।।ऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ। ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽऽ।ऽ प्रपात चंडवृत्य १ अर्नो २

कृष्णानौं ३ व्याल ४ जीमूत ५ नीलाकर ६ उद्याम ७ शंख ८।

अथ गद्य। अयोध्यानगरे कनकमणिमराडपे कल्पवृक्षमूले दिव्यपर्य्यंके सुखासीन ब्रह्मेशेन्द्रादीनां वाङ्मनपरस्वरूप रूप गुण विभवैश्वर्य्य स्वभावः नितैश्वर्य्य विशिष्टानंत विभीषणांगदहनुमानादि परिचारित चरणयुगल: स्वभाविकानवधिकातिशयज्ञानंबलैश्वर्य्य शक्ति तेज: सौशील्य वात्सल्य मार्द्दवार्जव सौहार्द्द सौम्य कारुण्य माधुर्य्य गांभीर्य्यौदार्य्य स्थैर्य्य धैर्य्य सौर्य्य पराक्रम सत्यकाम सत्य संकल्प कृतत्व कृतज्ञाता द्य शंख्येयकल्याण गुणगणौघ महार्णव सर्व पूजनीय सीता रामाख्यां वैचनाघोत्तमाम्यहं २५४॥ अथ कवि माल। अग्र सूर केशव कविंद चन्द गंगदास ठाकुर निवाज कविराज मन्य काशीराम भंजन मुकुन्द ब्रह्म वंशीधर रघुनाथ। नन्दन दिनेश इन्दु वलिभद्र घनश्याम केहरी नरोत्तम अमर यशवंत देव संगम किशोर लाल माखन सबल श्याम चन्दन शिरोमणि प्रताप कान्ह नीलकराठ सूरति प्रसाद हेम महाराज मतिराम २५५ मराडन चतुर कासिम नियदि गोविन्द दत्त नायक धुरन्धर रतन गोधन नौं राम रसखान सुमेर पृथिवि सुन्दर मुरारी शोभ गणपति शिवलाल चिन्तामणि मोतीराम रामदास सखी प्रेम राम कृष्ण घनानंद हित हरिवंश हरि दयानिधि दयाराम सदानन्द भूधर अनीसमन निधिनाथ

मदनगोपाल तारा हरिलाल गोलीराम २५६ नां
नेया पदुमाकर जगत सिंह ग्वाल सरदार श्रीधन
सिरीपति वेनी प्रहलाद जगजीवन बिहारीलाल
लोकनिधि कासीसिंह सुखदेव कुलपति लीना
गोकुल नराधन उदयनाथ कालिदास देवी रघु
शिव सेनापति देवकीनंदन मान भूधरा गुला
ल द्विजदेव शुक्र कर हरदेव तारापति २५७ मनमं
राम निकंठ हरिकेश ग्वाल मुरली नवल भगिवंत
कासलाल जीवन महेश हरजीवन परशुराम म
लदेव शुकदेव सन्तनो गोपाल सोमनाथ कवि
गारि शिवनाथ शिव हरिजन दीठल नवीन मीर
तीलाल आलम प्रवीन राय दूलह रहीम जैन र
न रसखान नायक मुकुन्दलाल २५८ ॥ सवैया ।
दया ऋषि नाथ अकब्बर जैन महम्मद नाथ शशी
रूप नारायण भूपति शम्भु चतुर्भुज दीनदयाल क
को दत्त गुनैन ममारख राम सहाय सुसेवक गा
ग्री को बैजनाथ स्वबुद्धि गुरो कवि माल सुम
तुलसी को २५९ परतापगंज परगान वंकी में पूर्व ल
ऊ योजन दोइ ग्राम मानपुर बैजनाथ बसि ज़मीं
के राती सोइ २६० कातिक असित भौम पंचि
शादि याम रोहिनी नक्षत्र वरियानगर कर नाथ
स अधिक उन्नविंश सत संबतार्क सुतांश कराति
रथ लग लिखि

पाद पंचमे सुबुध गुरु भौमता हि रविसाथ पाचप-
नगत दंड पैंतिस को इष्ट काल काव्यकल्पद्रुम को-
समाप्त कीन बैजनाथ ॥ २६२ ॥ इति श्री बैजनाथ-
विरचित काव्यकल्पद्रुम समाप्तम् ॥

मुंशी नवलकिशोर के छापेख़ाने मुहल्ला हज़रतगंज मुक़ाम
लखनऊ माह अक्तूबर सन् १८८७ ई० में छापा गया ॥

इस पुस्तक को पण्डित रामबिहारी सुकुल ने शुद्ध
किया है ॥

इति

इश्तिहार

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
कठवल्ली उपनिषद्	(च)	(द)	[illegible] भाषा
केनोपनिषद्	चित्र चन्द्रिका	दुर्गास्तोत्र मूल	प्रश्नोत्तरी
काव्यसंग्रह	चाणक्यनीति	दुर्गापाठ सं० टी० स०	पदवारियों [illegible]
कवितरत्नाकर १ भाग	चौपाई वार्तिक	दुर्गायन [illegible]	[illegible] २ भाग में
कवितरत्नाकर २ भाग	(छ)	देवीभागवत भाषा	[illegible]
कथाचालीसी	छन्दोर्णव पिंगल	दशमस्कन्ध	[illegible]
(ग)	(ज)	[illegible] भाषा	[illegible]
गीतगोविन्द [illegible]	जातकालंकार	[illegible]	प्राकृत [illegible]
गंगालहरी	[illegible] भरथा	[illegible] भरथा	[illegible]दीपिका १ भाग
गोपीचन्द भरथरी	[illegible]	दानलीला	प्रेमप्रकाश
गुरुसुमिरण	जातकचन्द्रिका	दोहावली रत्नावली	पद्मावती [illegible]
गीतरसिका	जातकालंकार	(न)	पद्यसंग्रह
गुटका १ भाग	ज्योतिषसारमंजरी	निर्णयसिन्धु	(ब)
तथा २ व ३ भाग	जनकपच्चीसी	नाग माहात्म्य	बृहज्जातक
गर्गसंहिता	जलभूलन	[illegible]	बृहत्संहिता
गरुड़पुराण प्रेतकल्प	[illegible]	[illegible]	[illegible]
गरुड़पुराण मथुरा का	[illegible] १ भाग	नवरत्न भाष्य	[illegible]
[illegible]	तथा २ भाग	[illegible]	[illegible]
गणितकामधेनु	(ट)	[illegible]	[illegible]
गोवर्द्धननाथ के प्राक-	तुलसीकृत रामायण-	(प)	[illegible]
ट्य की वार्ता	का शब्दार्थकोष	[illegible]	[illegible]
गोकर्ण माहात्म्य	तु० कृ० रामायण का	[illegible]	[illegible]
गुरुउपकार कथा व	इतिहास	[illegible]	[illegible]
भजन विनयप्रकाश	तु० कृ० रामायण की	[illegible]	[illegible]
गणितप्रकाश चारों-	मानसदीपिका	[illegible] लहरी	[illegible]
भाग में	[illegible]	[illegible]	

इश्तिहार

ता० ८ मार्च सन् १८८६ ई० से मुमालिक मग़रबी व शिमाली का बुक डिपो इलाहाबाद क्यूरेटर बुकडिपो से मतबा मुंशी नवलकिशोर मुक़ाम लखनऊ में आगया है इस डिपो में मग़रबी व शिमाली एजूकेशनल बुक डिपो के सिवाय और भी हर एक विद्या की किताबें मौजूद हैं इन हर एक किताबों की ख़रीदारी की कुल शर्तें क़ीमत के सहित इस छापेख़ाने की छपी हुई फ़िहरिस्त में दर्ज हैं जो दरख़्वास्त करने पर हर एक चाहनेवाले को बिला क़ीमत मिल सकती है - जिन साहबों को इन किताबों का ख़रीद करना होवे इस छापेख़ाने से ख़रीद करें और फ़ेहरिस्त तलब करें ॥

द० मनेजर अवध अख़बार
लखनऊ मुहल्ला हज़रतगंज०